श्रीश्री कामाख्या देवी और कामरूप का माहात्म्य

(सरल हिन्दी भावार्थ सहित)

गवेषना, भावानुवाद एवं संकलन

राजीव शर्मा

फाउण्डेचन फर हिष्टरी एण्ड हेरितेज ष्टाडिज

नीलाचल कामाख्या, गुवाहाटी, आसाम

उड्डीयानस्य देवेशि प्रादुर्भाव कृते युगे।
पूर्ण–शैलस्य सम्भूतिस्त्रेतायुगमुखेऽभवत्॥
द्वापरे जलाशैलस्य कामाख्याया कलौ युगे।
घोरस्य कलिपापस्य विनाशाय महेश्वरी॥
(योगिनीतंत्रम्)

श्रीश्री कामाख्या देवी

और

कामरूप का माहात्म्य

(सरल हिन्दी भावार्थ सहित)

गवेषणा, भावानुवाद एवं संकलन
राजीव शर्मा

फाउण्डेचन फर हिष्टरी एण्ड हेरितेज ष्टाडिज
नीलाचल कामाख्या, गुवाहाटी, आसाम

Sri Sri Kamakhya Devi Evam Kamrupar Mahatmya
(with Commentary in Hindi)

A compilation by Rajib Sarma and Published by Meetali Offset Printers, Kamakhya, Guwahati- 10, Assam on behalf of Foundation for History and Heritage Studies, Kamakhya Temples' Complex, Guwahati- 10, Assam

ISBN: 978-81-949568-8-4

Published by :

Meetali Offset Printers
Kamakhya, Guwahati- 10, Assam

On behalf of Foundation for History and Heritage Studies
Kamakhya Temples' Complex, Guwahati- 10, Assam

Copyright : Foundation for History and Heritage Studies

Enlargerd Edition: April, 2023

Layout Designing : Rajib Sarma

Price: ₹ 250.00

Printed at : Meetali Offset Printers
Kamakhya, Guwahati- 10
Assam

योनिरूपा महाविद्या कामाख्या वरदायिनी।
वरदानंदा नित्या महाविभववर्द्धिनी॥
सर्वेषां जननी सापि सर्वेषां तारिणी माता।
रमणी सैव सर्वेषां स्थूला सूक्ष्मा सदा शुभा।
कामाख्याविमुखा लोका निंदिता भुवनत्रये॥
(योगिनीतंत्रम्)

श्रीश्री ँकामाख्या देवी तथा दशमहाविद्या सहित पृथ्वी के समस्त मातृशक्ति, परम आराध्य गुरुदेव तथा अन्यान्य कुलगुरुगण, कुल के अन्तर्गत सिद्ध साधकगण एवं हामारे दिवंगत पितृ ँअशोक नाथ शर्मा तथा माता ँगायत्री देवी के करकमलों मों.....

राजीव शर्मा

कामार्थमागता यष्मान्मया सार्द्ध महागिरौ।
कामाख्या प्रोच्यते देवी नीलशैले रहोगता॥
कामदा कामिनी कामा कांता कामांगदायिनी।
कामांगनाशिनी यस्मात् कामाख्या तेन उच्यते॥
(कालिकापुराणम्)

भुमिका

हमारा परिवार परंपरागत रूप से चंडी पाठ के पुजारी के रूप में कइ सदियों से नीलाचल पाहाड़ पर विराजमान देवी कामाख्या सहित दस महाविद्या तथा अन्य देव-देवी के देवालय समूह की सेवा करता रहा है।

बचपन से ही कामाख्या के प्रति एक प्रचंड जिज्ञासा से सरोबर मनोभाव और अनजान सिहरन ने मुझे अस्थिर कर रखा है। कामाख्या के रहस्यमय परिवेश और परंपरा के बीच जितना समाने की कोशिश करता हुं उतना खुद को हमेशा अनजान सुरंग में गुम हुवा महसुस करता हुं। कामाख्या की सामाजिक रिति नीति, उत्सव, धार्मिक धारा, पूजा का क्रम आदि की एक अलग मादकता है। कामाख्या भले ही उच्च स्तर की धार्मिक और सामाजिक परंपरा से युक्त जाग्रत विश्व प्रसिद्ध शक्तिपीठ है, लेकिन आश्चर्य की बात है कि कामाख्या के संबंध में जानने के लिए या अध्ययन करने के लिए तथ्यपूर्ण सामग्री ढुंढने पर निराशा होने के सिवा और कोइ चारा नहीं रहता, कारण कामाख्या या कामरूप के संबंध में प्रकाशित शोध ग्रंथ या रचनाओं की संख्या वैसे भी कम है।

इसलिये बचपन से ही जो जिज्ञासा का भाव मेरे मन में था उसी के चलते 1998 से कामाख्या और कामरूप के संबंध में गंभीर रूप से अध्ययन करने का जुनून मेरे सिर पर सावार हो गया और किसी बात की चिंता किए बगैर मैं तथ्यों को एकत्रित करने लगा। बार-बार निराशा का सामना करने पर मेरे मन में एक जिद का भाव पैदा हुआ और कामाख्या और कामरूप के संबंध में एक ग्रंथ प्रस्तुत करने का मैंने संकल्प लिया। आखिरकार साल 2011 के वैशाख महिने में संकलित ग्रंथ का पहला असमीया और बंगला संकरण प्रकाशित हुआ। प्रथम संस्करण में रह गई त्रुतियों की संशोधित कर ग्रंथ का द्वितीय असमीया और बंगला तथा प्रथम हिन्दी संस्करण सन 2022 के अक्टूबर महिने में अपने आदरणीय पाठकों के हाथों में अर्पित किया।

संकलन को सरल असमीया, बंगला, हिन्दी और अंग्रेजी भावार्थ के साथ चार भाषाओं मे प्रस्तुत किया गया है। संकलन का हिन्दी संस्करण प्रत्सुत करते समय मूल असमीया संस्करण के प्रारम्भिक अध्याय और परवर्ती अध्यायों के श्लीक के अनुवाद हिन्दी में करते हुए श्री दिनकर कुमार, श्री विवेक कुमार मिश्र, श्रीमती हीरा दास और श्री दिवाकर गोस्वामी की सहायता के लिये उनके प्रति मैं कृतज्ञ हुं। संकलन की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिये पाठकों के मंतव्य और सुझाव की एक विषेश भुमिका होगी ऐसी उम्मीद करता हुं।

राजीव शर्मा

अनुक्रम

प्रारंभिक अध्याय (10-16)

- कामरूप और प्रागज्योतिषपुर का पौराणिक इतिहास
- कामरूप में शक्ति साधना की धारा
- कामाख्या का संक्षिप्त इतिहास
- नीलाचल पहाड़ पर स्थित पवित्र स्थान
  - क) कामाख्या देवालय
  - ख) दशमहाविद्या के अन्तर्गत महाविद्याओं के देवालय
  - ग) अन्यान्य देवीओं के देवालय
  - घ) पंच शिव का देवालय
  - ङ) 4 द्वारपाल गणेश सहित अन्यान्य देव-देवीओं के देवालय
  - च) पवित्र कुंड, सरोवर तथा देवी के स्नानघाट
- कामाख्या के वार्षिक धर्मीय उत्सव एवं पूजा
- संकलन के परवर्ती अध्यायों पर एक टिप्पणी

प्रथम अध्याय (17-25)

कामरूप का माहात्म्य

- प्रागज्योतिषपुर नाम का उत्स
- कामरूप नाम का उत्स
- कामरूप की सीमा
- कामरूप का माहात्म्य

द्वितीय अध्याय (26-37)

कामाख्या योनिपीठ का माहात्म्य

- कामाख्या योनिपीठ की सृष्टि और नीलाचल पर्वत की कथा
- कामाख्या योनिपीठ का माहात्म्य
- कामाख्या योनिपीठ का पंचक्रोश निर्णय
- पंचमुर्त्याभिधा कामाख्या
- कामाख्या शब्द की उत्पत्ति
- त्रिपुरा शब्द की उत्पत्ति

• कामेश्वरी शब्द की उत्पत्ति

तृतीय अध्याय (38-54)

श्रीश्री कामाख्या योनिपीठ दर्शन का क्रम

- प्रस्तावना
- उर्वशी कुंड की कथा
- उमानंद की कथा
- ब्रह्मकुंड की कथा
- पांडुनाथ की कथा
- नीलाचल पर्वत आरोहण
- गणेश की कथा
- वेताल-भैरव की कथा
- दुर्गाकुंड की कथा
- आम्रातकेश्वर की कथा
- वृहद-गणेश की कथा
- त्रिविक्रम की कथा
- हनुमान की कथा
- सौभाग्य कुंड की कथा
- कंबलेश्वर की कथा
- कामाख्या देवालय प्रदक्षिण मंत्र
- कामाख्या देवलय में प्रवेश का अनुज्ञा मंत्र
- कामाख्या (चंलता या कामेश्वरी) प्रमाण मंत्र
- कामाख्या योनिमंडल स्पर्श मंत्र
- कामाख्या जोनिमुद्रा का जलपान मंत्र

चतुर्थ अध्याय (55-74)

देवी कामाख्या का दर्शन-पूजन का माहात्म्य

- देवी कामाख्या के द्वारपाल और रक्षकगणों का विवरण
- देवी कामाख्या का रूप वर्णन
- देवी कामाख्या का योनिमंडल निरूपण
- देवी कामाख्या का माहात्म्य, दर्शन और पूजा का फल

पंचम अध्याय (75-92)

नीलाचल पर्वत पर विराजमान दशमहाविद्या, शिव, अन्यान्य देवतागण और कुंड का माहात्म्य

दशमहाविद्या और अन्यान्य अंगदेवताओं की उत्पति कथा

नीलाचल पर्वत पर विराजमान दशमहविद्या

- देवी काली की कथा
- देवी तारा की कथा
- देवी भुवनेश्वरी की कथा
- देवी भैरवी की कथा
- देवी छिन्नमस्ता की कथा
- देवी धूमावती की कथा
- देवी बगलामुखी की कथा
- देवी लक्ष्मी-सरस्वती की कथा

नीलाचल पर्वत पर बिराजमान शिव और भैरवगण

- पंचमुर्ति शिव की कथा
- त्रिखंडा भैरवी वेताल अथवा अघोर की कथा
- कामेश्वर शिव की कथा
- सिद्धेश्वर शिव की कथा
- कोटिलिंग शिव की कथा
- केदारेश्वर शिव की कथा
- वेताल की कथा

नीलाचल पर्वत पर विराजमान अन्यान्य देवतागण और पुण्यस्थल

- देवी वनदुर्गा की कथा
- देवी जयदुर्गा की कथा
- देवी ललिताकांता की कथा
- ब्रह्मयोनि की कथा
- प्रेतशिला की कथा
- कामधेनु की कथा
- मुक्तिमंडप की कथा
- अंत:गृह की कथा

नीलाचल पर्वत पर स्थित कुंड
- ऋणमोचन कुंड की कथा
- अमृत कुंड की कथा
- गया कुंड अथवा गयाक्षेत्र की कथा

देवी कामाख्या की अष्टयोगिनीगण

षष्ठ अध्याय (93-100)

कामरूप के अन्यान्य पीठ एवं तीर्थ का माहात्म्य
- हयग्रीव की कथा
- कालहय शिव की कथा
- गोकर्ण महादेव की कथा
- माधव-केदार की कथा
- उपूनर्भव कुंड की कथा
- अश्वक्रांत की कथा
- चित्राचल (नवग्रह) की कथा
- वशिष्ठाश्रम की कथा
- छत्राकार पहाड़ की (मंगलचंडी) कथा
- उग्रतारा (नाभितारा) की कथा
- देवी दीर्घेश्वरी की कथा

सप्तम अध्याय (101-110)

ब्रह्मपुत्र आराधना
- ब्रह्मपुत्र की उत्पत्ति की कथा
- ब्रह्मपुत्र का माहात्म्य
- ब्रह्मपुत्र दर्शन-स्पर्शन मंत्र
- ब्रह्मपुत्र का ध्यान मंत्र
- ब्रह्मपुत्र का आवाहन मंत्र
- ब्रह्मपुत्र स्तोत्र
- ब्रह्मपुत्र में अर्घ्यदान मंत्र
- ब्रह्मपुत्र प्रणाम मंत्र
- ब्रह्मपुत्र का जल पान मंत्र अथवा अशोक कलिका पान मंत्र
- अष्ट अशोक कलिका के नाम

अष्टम अध्याय (111-116)

कुमारी पूजा का माहात्म्य

- कुमारी की जन्मकथा (कोलासुर वध का वृतांत)
- कुमारी पूजा का माहात्म्य
- कुमारी पूजा का स्थान निर्णय
- कुमारी निर्णय और उम्र के हिसाब से कुमारी के नाम
- कुमारी का जाति विचार
- कुमारी पूजा में पुष्प अर्पण करने का मंत्र
- कुमारी प्रणाम मंत्र
- कुमारी स्तोत्र
- कुमारी पूजा का फल

नवम अध्याय (117-119)

अंबुवाची

- अंबुवाची निर्णय एवं माहात्म्य

दशम अध्याय (120-123)

बलिनिवेदन का महात्म्य

- बलिदान का माहात्म्य
- बलिशब्दार्थ
- निवेदन की जानेवालवी विभिन्न बलि की षुची
- अवैध हिंसा में दोष
- स्वगात्ररूधीर निवेदन करने के बारे में कुछ बातें

एकादश अध्याय (124-136)

परिशिष्ट

- योगीनितंत्रोक्त शिव का अष्टोत्तर शतनाम
- योगीनितंत्रोक्त देवी कामाख्या का स्तुति मंत्र
- नीलाचल पहाड़ और कामरूप के विभिन्न मंदिरों में अंकित कुछ शिलालिपियो की प्रतिलिपि
- ग्रंथपंजी

प्रारम्भिक अध्याय

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णुः गुरुदेव महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परमब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
अखंडमंडलाकारं व्यप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

कामरूप और प्रागज्योतिषपुर का पौराणिक इतिहास-

भारतवर्ष के उत्तर-पूर्व अंचल को पौराणिक समय से ही प्रागज्योतिषपुर और कामरूप नाम से जाना जाता हैं, परंतु गवेषकों का मानना है कि प्रागज्योतिषपुर कामरूप से अधिक पौराणिक नाम है। नरक और भगदत्त शासित देश के रूप में विभिन्न शास्त्र, पौराणिक साहित्य, भागवत और पुराण में इस देश का नाम प्रागज्योतिषपुर के रूप में उल्लेखित है। उदाहरण के रूप में रामायण, महाभारत, हरिवंश, विष्णुपुराण, भागवत पुराण में नरक के राज्य को प्रागज्योतिषपुर के रूप में चर्चित किया गया है। इसके परवर्ती काल का शास्त्र कालिका पुराण में फिर से वर्णन किया गया है कि भगवान विष्णु ने स्वपुत्र नरक को कामरूप के प्रागज्योतिषपुर नगर में लेकर आये थे। लिहाजा यह अनुमान किया जा सकता है कि कालिकापुराण के रचनाकाल से कुछ पहले से ही प्रागज्योतिषपुर का कामरूप देश की राजधानी के रूप में उल्लेख होता है। कालिका पुराण में नरकासुर उपाख्यान के विभिन्न प्रसंगों में प्रागज्योतिषपुर को नगर के रूप में बताया गया है। महाकवि कालिदास से भी पहले के शास्त्र वायुपुराण में प्रागज्योतिषपुर को भारतवर्ष के पूर्वांचल की एक जाति के रूप में वर्णन किया गया है। एक उल्लेखनीय प्राचीन-शास्त्र मार्कंडेय पुराण में प्रागज्योतिषपुर को लौहित्य के पार्श्ववर्ती एक देश के रूप में उल्लेख किया गया है। दूसरी और विष्णुपुराण मों भी प्रागज्योतिषपुर को देश के रूप में वर्णन किया गया है। विख्यात कवि राजशेखरदेव ने प्रागज्योतिषपुर को आर्यावर्त के देश के रूप में उल्लेख किया है। महाकवि कालिदास के समय में (ईसवीं पाँचवी सदी) यह अंचल लौहित्य के पार्श्ववर्ती प्रागज्योतिषपुर और कामरूप के नाम से विख्यात था। दूसरी ओर समुद्रगुप्त की विख्यात इलाहाबाद शिलालेख में कामरूप नाम के देश के बारे में उल्लेख हैं। इसके उपरांत चीनी यात्री हिउ-एन-सांग के भ्रमण की टिप्पणी में भी कामरूप नाम का उल्लेख

है। इसके परवर्ती समय के तंत्र शास्त्र समुहों में भी इस भूखंड को कामरूप के नाम से उल्लेख किया गया है।

कामरूप में शक्ति साधना की धारा-

अति प्राचीन काल से कामरूप शक्ति साधना के उत्तम स्थल के रूप में मशहूर है। तंत्र शास्त्रों के अंदर एक उल्लेखनीय ग्रंथ महानिर्वाण तंत्र ने कामरूप को तंत्र साधना के चार प्रमुख केन्द्रों के अन्यतम के रूप से वर्णन किया है। महानिर्वाण तंत्र के अनुसार ये चार प्रसिद्ध स्थान हैं क्रमशः पूर्णशिला, उड्डीयान, जालंधर और कामरूपा इनमें से उड्डीयान सत्य युग का उत्तम स्थान, पूर्णशिला त्रेता युग का उत्तम स्थान, जालंधर द्वापर युग का और कामरूप कलियुग का उत्तम स्थान है। कालिका पुराण ओर योगिनी तंत्र में भी कामरूप को शक्ति साधना के अन्यतम स्थान के रूप में वर्णित किया गया है। बृहधर्म पुराण में भी कामरूप को मोक्षदायक पीठों में से एक अन्यतम पीठ के रूप में वर्णित किया है। इसके उपरांत अन्यान्य भागवत पुराण और तंत्र शास्त्र में भी कामाख्या को शक्ति साधना के अन्यतम क्षेत्र के रूप में वर्णित किया गया है। शक्तिसाधना के प्राणकेन्द्र के स्वरूप रूप में अतीत से वर्तमान तक कामरूप भूखंड शक्तिसाधना के लिए प्रसिद्ध है। कामरूप को शक्तिसाधना के केन्द्र के रूप में वर्णित करने के संबन्ध में ताम्रशासन, शिलालिपि, भागवत, पुराण, तंत्र-शास्त्र, इतिहास, लोकोक्ति वाणी, लिखित साहित्य ने विशेष रूप से तथ्यों को प्रदान कि है। विद्वान शोधकर्ताओं ने इस मामले में समय समय पर अपनी दी है।

कामरूप का संक्षिप्त इतिहास-

पुरातत्वविद अनुसंधानकारी शोधकर्ताओं की राय है कि कामाख्या मंदिर का आधार (base) और गर्भगृह आनुमानिक 2000 साल है और इसका ऊपरी भाग आनुमानिक 1500 साल पुराना है। कामाख्या मंदिर के साथ प्राचीन किंवदंती जुड़े हुए है, लेकिन पुरातात्विक तथ्यों के ऊपर आधारित कामाख्या मंदिर का प्राचीनत्व गुप्तयुगीन के रूप में कहा जा सकता है। वर्तमान का कामाख्या मंदिर और इसके चारों तरफ विखेरे पड़े भग्नावशेष समुहों के ऊपर गौर करके अनुमान किया जा सकता है कि कामख्या मंदिर का युग युग से आहोम राजत्वकाल तक की लंबी अवधि तक अनेकों बार पुनः निर्माण किया गया और मरम्मत या फिर बदलाव किये गए हैं। इसके अलावा देखा जाता है कि ब्रिटिश शासन की समाप्ति से आज तक कामख्या मंदिर और इससे

संलग्न संरचनाओं के परिवर्त्तन की धारा लगातार जारी है।

पुरातत्वविदों के अनुसार नीलाचल पहाड़ के विभिन्न मूर्ति-भास्कर्य का ईसवीं 8 वीं सदी से 17 वीं सदी के बीच निर्माण किया गया था। लिखित इतिहास और बंशावलीओं के आधार पर कहा जाता है कि कामाख्या मंदिर का पुनर्निर्माण कोच राजा विश्वसिंह ने संपूर्ण किया था। किसी कारणवश कोच राजा विश्वसिंह द्वारा पुनः निर्मित मंदिर लुकचान पहुंचा और इसे कोच राजा नरनारायणने 1565 में पुनः निर्माण किया। इसके बाद आहोम राजा शिवसिंह ने अपने शासन काल में (1714-1744) कामाख्या मंदिर के कुछ हिस्सें की मरम्मत करवाई और आहोम राजा राजेश्वर सिंह ने 1759 में मूल मंदिर से संलग्न कुछ हिस्सों की मरम्मत करवाई और नाट मंदिर का निर्माण करवाया। कलियाभोमोरा बरफुकन ने आहोम राजा कमलेश्वर सिंह (1795-1810) के अदेश पर नाट्यमंदिर में संलग्न ताम्र मंदिर के अंश का निर्माण किया। सन् 1897 के भूकंप में कामाख्या मंदिर को व्यापक क्षति पहुंची और इसकी मरम्मत के लिए कोच राजपरिवार ने भी अनुदान दिया, ऐसा माना जाता है।

सन् 1958 तक पत्थर के रास्ते से पहाड़ चढ़कर कामाख्या मंदिर तक आवाजाही की जाती थी। इस असुविधा को दुर करने के लिये दिवंगत गोविंद पल्लभ पंत महेदय की पहल पर सन् 1965 में असम सरकार ने कामाख्या मंदिर तक गाड़ी से आने जाने के लिए एक पक्की सड़क के निर्माण का काम प्रारंभ किया और दो सालों के अंदर सड़क निर्माण का काम पूरा किया गया। दिवंगत गोविंद पल्लभ पंत महोदय ने इस पक्की सड़क का सन् 1958 में उद्घाटन किया।

तीर्थस्थान के रूप में कामाख्या के महत्व को ध्यान में रखते हुए पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के प्रशासन ने सन् 1976 में जालुकबाड़ी रेलवे स्टेशन का नाम कामाख्या रेलवे स्टेशन के रूप में निर्धारित किया।

नीलाचल पाहार पर स्थित पवित्र स्थान-

भले ही अधिकतर तीर्थयात्री तथा जनसाधारण के लिये नीलाचल पहाड़ कामाख्या के नाम से परिचित है, असल में नीलाचल पहार पर देवी कामाख्या सहित दश महाविद्या, पंच शिव, चार द्वारपाल गणेश के साथ अन्य गणेश गण, हनुमान तथा अन्य देव देवी के पीठ स्थान (देवालय), गुप्त पीठ, पवित्र कुंड आदि अनादि काल से विद्यमान हैं। भारत सरकार के पुरातात्विक विभाग (Archaeological Survey of India) के प्रतातात्विक अध्ययन के अनुसार

प्रापिन काल से नीलाचल पहाड़ पर देवी कामाख्या सहित लगभग 100 देव-देवी के पीठ स्थान, गुप्त पीठ, पवित्र कुंड, पवित्र क्षेत्र आदि विद्यमान थे, लेकिन कालक्रम में विभिन्न कारणवश कई देवालय, पवित्र/पुण्य स्थान ध्वंस/लुप्त हो गए। इस विषय की प्रयोजनीयता की तरफ ध्यान रखते हुए नीलाचल पहाड़ पर वर्तमान समय में भी मौजुद देवालय तथा पवित्र/पुण्य स्थानों का उल्लेख नीचे किया गया है-

क) कामाख्या देवालय

(टिप्पणी- देवी कामाख्या दश महाविद्या के अंतर्गत तृतीय महाविद्या, त्रिपुरा सुंदरी/षोड़शी हैं। इसके अलावा इस देवालय के अन्तःगृह में देवी कामाख्या अथवा त्रिपुरा सुंदरी/षोड़शी पीठ के पास दश महाविद्या के अंतर्गत नवम महाविद्या मातंगी और दशम महाविद्या कमला का पीठ स्थित है। इसके अलावा देवालय के अंदर बटुक भैरव, देवी चामुंडा, देवी मनसा तथा देवालय की मूल दीवार पर गणेश, लज्जा गौरी, चौषठ योगिनी, अष्टादश भैरव आदि विराजमान हैं)

ख) दशमहाविद्या के अन्तर्गत अन्य मदाविद्या के देवालय (क्रमानुसार)

1. देवी काली (प्रथम महाविद्या)
2. देवी तारा (द्वितीय महाविद्या)
3. देवी भूवनेश्वरी (चतुर्थ महाविद्या)
4. देवी भैरवी (पंचम महाविद्या)
5. देवी छिन्नमस्ता (षष्ठ महाविद्या)
6. देवी धूमावती (सप्तम महाविद्या)
7. देवी बगलामुखी (अष्टम महाविद्या)

ग) अन्यान्य देवी के देवालय

1. देवी जयदुर्गा
2. देवी वनदुर्गा
3. देवी ललिताकान्ता
4. देवी शितला
5. देवी शंखेश्वरी
6. देवी नमठ काली
7. देवी शमशान काली

घ) पंच शिव के देवालय

1. आम्रातकेश्वर
2. कामेश्वर
3. केदारेश्वर
5. कौटिलिंग

ङ) 4 द्वारपाल गणेश सहित अन्यान्य देव-देवी के देवालय

1. नीलाचल पहाड़ पर निर्मित 4 पैदल मार्ग पर विराजमान द्वारपाल गणेशगण
2. महाकाल गणेश सहित अन्यान्य गणेशगण
3. पाण्डुनाथ
4. ग्राम्य देवता
5. वेताल भैरव (ताल वेताल)
6. त्रिपुरा महेश्वर
7. गदाधर विष्णु
8. हनुमान
9. विश्वकर्मा
10. त्रिनाथ
11. मुक्तिनाथ
12. घन्यकर्ण
13. जरासन्ध
14. हेरुकेश्वर
15. त्रिखण्डा भैरवी वेताल अथवा अघोड़
16. बाल भैरव

च) पवित्र कुण्ड, सरोवर तथा देवी के स्नानघाट

1. सौभाग्य कुण्ड
2. ऋणमोचन कुण्ड
3. अमृत कुण्ड
4. दुर्गा कुण्ड
5. गया कुण्ड
6. भैरवी कुण्ड
7. दुर्गा सरोवर

8. राम ह्रद

9. नीलाचल पहाड़ के उत्तर में तीर्थराज ब्रह्मपुत्र के किनारे शिथत देवी के 11 स्नानघाट

कामाख्या के वार्षिक पूजा-अनुष्ठान और उत्सव-

कामाख्या के पूजा-अनुष्ठान और उत्सव की अंग्रेजी महीमे की वार्षिक सूचि असमिया दिनपंजी के अनुसार नीचे प्रस्तुत है-

पूजा-अनुष्ठान तथा उत्सव	**अंग्रेजी मह**
• चैत्र संक्रान्ति	अप्रैल
• बहाग बिहू तथा हालखाता	अप्रैल
• ग्राम्य देवता की पूजा	मई
• साथा व्रत	जून
• अंबुवाची	जून
• दक्षिणायन संक्रान्ति तथा देवी दक्षिणा काली की पूजा	जुलाई
• देवी मनसा की पूजा तथा देवध्वनी उत्सव	अगस्त
• ललिता सप्तमी तथा देवा ललिताकान्ता की पूजा	अगस्त
• जयदूर्गा देवी के पूजा	अगस्त
• जन्माष्टमी	अगस्त/सितंवर
• विश्वकर्मा पूजा	सितंबर
• देवी दूर्गा के नवम्यादि कल्पारम्भ (दूर्गा पूजा)	सितंबर/अक्टूबर
• देवी लक्ष्मी की पूजा	अक्टूबर
• देवी श्यामा काली की पूजा तथा दीपावली	अक्टूबर/नवंबर
• काति विहू	अक्टूबर/नवंबर
• कात्यायनी व्रत	अक्टुवर/नवंबर
• कार्तिक पूजा	अक्टुवर/नवंबर
• धान्यचेदन	नवंबर
• नवान्न	नवंबर/दिसंबर
• पोहन बिया	दिसंबर/जनवरी
• मकर संक्रान्ति	जनवरी
• देवी रतन्ती काली की पूजा	जनवरी
• गणेश पूजा	जनवरी

- देवी सरस्वती की पूजा — जनवरी/फरवरी
- महा शिवरात्रि — फरवरी
- गोपाल देउल तथा होली उत्सव — फरवरी/मार्च
- दूर्गा देउल — मार्च/अप्रैल
- देवी वासन्ती की पूजा (चैत्र नवरात्रि) — मार्च/अप्रैल
- राज-राजेश्वरी पूजा — मार्च/अप्रैल

संकलन के परवर्ती अध्यायों का एक संक्षिप्त बिवरण-

संकलन के परवर्ती अध्यायों में कामरूप, नीलाचल पहाड़, देवी कामाख्या, ब्रह्मपुत्र, कुमारी पूजा, बलि निवेदन आदि के संबंध में श्लोक के माध्यम से चर्चा करने की कोशिश की गई है। इन श्लोकों को ग्रंथ पंजी में तालिकाभुक्त पुस्तक का विस्तृत रूप से अध्ययन कर शामिल किया गया है। प्रत्येक अध्याय में शामिल श्लोकों के माध्यम से अध्यायों के विषय वस्तु के उपर विस्तृत चर्चा प्रस्तुत करना ही संकलन का मूल उद्देश्य है। ग्रंथ पंजी में वर्णित पुस्तकों से लिये गए श्लोकों को ग्रंथ के अध्याय के विषय वस्तु के आधार पर संकलित कर प्रत्येक श्लोक का सरल व संक्षिप्त अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। ग्रंथ मे शामिल प्रणाम मंत्र, स्तुति मंत्र, संकल्प मंत्र, आवाहन मंत्र, ध्यान मंत्र आदि का जानबूझकर भावार्थ प्रस्तुत नहीं किया गया है। साथ ही, ग्रंथ के किसी अध्याय में लेखक की निजी राय शामिल नहीं की गयी है।

ग्रंथ मे शामिल श्लोकों के उच्चारण को ध्यान में रखते हुए इसमें शब्द और अक्षर विन्यास को ध्वनि तत्व को ध्यान मे रखते हुए लिखने का प्रयास की गई है।

- प्रारम्भिक अध्याय समाप्त -

प्रथम अध्याय

कामरूप का माहात्म्य

प्रागज्योतिषपुर नाम का उत्स-

(1/1)

अस्य मध्ये स्थितो ब्रह्मा प्राङ् नक्षत्रं ससर्जहः ।
ततः प्रागज्योतिषाख्येयं पुरी शक्रपुरीसमा ॥

(कालिकापुराणम्)

पौराणिक काल में ब्रह्मा ने इस क्षेत्र में निवास करके नक्षत्रों का सर्जन किया था इसीलिए इस क्षेत्र का नाम प्रागज्योतिषपुर के रूप में सशहूर हुआ।

कामरूप नाम का उत्स-

(1/2)

शम्भोर्नेत्राग्नि निर्दग्धः कामः शम्भोरनुग्रहात्।
तत्र रूपं यतः प्राप कामरूपं ततोऽभवत्॥

(कालिकापुराणम्)

महादेव के नेत्र की कोपाग्नि में दग्ध होने के बाद कामदेव ने पुनः महादेव की कृपा से इस स्थान पर जीवन लाभ किया, इसीलिये इस स्थान का नाम कामरूप के रूप में अभिहित हुआ।

(1/3)

कृते कर्मणि सिध्येत कामनाषु सुरेश्वरि।
ततो मर्त्यः कामरूपमिति रूपमकल्पयत्॥

(योगिनीतंत्रम्)

इस स्थान में स्थित पीठों पर अगर कोई मानव कामना पूर्वक आराधना करता है उसकी कामना शीघ्र पूर्ण होती है, इसीलिए पृथ्वीवासीयों ने इस स्थान को कामरूप के नाम से अभिहित किया है।

कामरूप की सीमा-

(1/4)

करतोवानदीपूर्वं यावद्दिक्करवासिनीम्।

त्रिशद्योजनविस्तीर्णं योजनैकशतायतम्॥
त्रिकोणं कृष्णवर्णञ्च प्रभूताचलपूरितम्।
नदी-शत-समायुक्तं कामरूपं प्रकीर्तितम्॥
(कालिकापुराणम्)

कामरूप की सीमा पश्चिम में करतोया नदी से पुरब में दिक्कर वासिनी तक लंबाई एक सौ योजन और चौड़ाई तीष योजन है। त्रिकोण आकृति का यह कामरूप अनेकों पर्वत और एक सौ नदियों से परिपूर्ण है।

(1/5)

करतोयां समाश्रित्य यावद्दिक्करवासिनीम्।
उत्तरस्यां कंजगिरीः करतोया तु पश्चिमे।
तीर्थश्रेष्ठा दिक्षुनदी पूर्वस्यां गिरिकन्यके॥
दक्षिणे ब्रह्मपुत्रस्य लाक्षायाः संगमावधि।
कामरूपमिति ख्यातं सर्वशास्त्रेषु निश्चितम्॥
त्रिंशद्योजनविस्तीर्णं दीर्घेण शतयोजनम्।
कामरूपं विजानीहि सुरासुरनमस्कृतम्॥
(योगिनीतंत्रम्)

कामरूप की सीमा पश्चिम में करतोया नदी से पुरब में दिक्कर वासिनी तक व्याप्त है। उत्तर में कंजगिरी, पश्चिम में करतोया नदी, गंगा, पूर्व में दिक्षुनदी और दक्षिण में ब्रह्मपुत्र और लाक्षा नदी का संगमस्थल है। इस क्षेत्र की लंबाई एक सौ योजन और चौड़ाई तीस योजन है।

कामरूप का माहात्म्य-

(1/6)

कामरूपं महापीठं गुह्याद्गुह्यतमं परम्।
सदा च संस्थितस्तत्र पार्वत्या सह शंकरः।
अचिरात् पूजितो देवस्तस्मिन् पीठे प्रसीदति॥
(योगिनीतंत्रम्)

परम गुह्याद गुह्यतम कामरूप महापीठ में पार्वती के साथ भगवान महादेव सर्वदा विराजमान हैं। इस महापीठ में महादेव की पूजा करने पर पार्वती शिव भक्तों के प्रति प्रसन्न होती हैं और परमेश्वर महादेव भी भक्तों की मनोकामना

पूर्ण करते हैं।

(1/7)

अपरंतु प्रवक्ष्यामि गुह्यं पीठं सदार्च्चितम्।
हरगौरीसमायुक्तं परं धर्मार्थकामदम्॥
तपसा चातितीव्रेण चिराद्भवति मोक्षदम्।
न चिरात् कामदं पूण्यं क्षेत्रं पीठं निगद्यते॥
चिरात् तु कामदो देवो न चिराद्यत्र ज्ञानदः।
तत्क्षेत्रमिति लोकेषु गद्यते पूर्ववंदिभिः॥

(कालिकापुराणम्)

कामरूप महापीठ परम धर्म, अर्थ, काम और मोक्षदायक है। एकांत रूप में कामाख्या में तपस्या करने से अति शीघ्र मोक्षप्राति होती है। अगर परमेश्वर महादेव की कामख्या में पूजा की जाती है तो भक्तों की मनोकामना अति शीघ्र पूर्ण करते हैं।

(1/8)

कामरूपं महापीठं गुह्याद्गुह्यतमं परम्।
सदा च संन्निहितस्तत्र पार्वत्या सह शंकरः॥
न चिरात् पूजितो देवस्तस्मिन् पीठे प्रसीददति।
पार्वती चानुगृह्णाति भर्गभक्तन्तु तत्र वै॥
ददाति न चिरात् कामं भक्ताय परमेश्वरः।
तत् तु पीठं प्रवक्ष्यामि श्रृणुतां साम्प्रतं युवाम्॥

(कालिकापुराणम्)

कामरूप महापीठ में पार्वती के साथ सदाशिव सर्वदा विराजमान हैं। इस महापीठ में शिव की पूजा करने पर पार्वती शिवभक्तों के प्रति प्रसन्न होती हैं और परमेश्वर शिव भी भक्तों की मनोकामना पूर्ण करते हैं।

(1/9)

तस्य पीठस्य वायव्यां नैर्ऋत्यां मध्यभागतः।
ऐशान्याञ्च तथाग्नेयां मध्ये पार्श्वे च शंकरः॥
स्वमाश्रमपदं कृत्वा षट्सुस्थानेषु शोभनम्।
नित्यं वसति तत्रापि पार्वत्या सह नर्म्मभिः॥

मध्ये देवीगृहं तत्र तदधीनस्तु शंकरः।
नीलाख्ये पर्वतश्रेष्ठे पार्वती तत्र तिष्ठति॥
ऐशान्यां नाटके शैले शंकरस्य महाश्रमम्।
नित्यं वसति तत्रेश स्तद्धीना च पार्वती॥
(कालिकापुराणम्)

कामरूप महापीठ वायु और नैऋत कोण का मध्यस्थान तथा ईशान और अग्निकोण के मध्य और पार्श्वस्थान में जल और स्थल में परमेश्वर महादेव पार्वती के साथ आश्रम स्थापित करके बिद्यमान है और इन सभी पीठों में वे दोनों परममुख से निवास करते हैं। इन सभी पीठी में देवी मंदिर के निकट परमेश्वर महादेव निवास करते हैं। कामरूप के ईशाण कोण में स्थित नाटकशिला में परमेश्वर महादेव का महान आश्रम है और इस आश्रम में महादेव के साथ पार्वती सर्वदा विराजमान हैं।

(1/10)

अपरेचाश्रमाः संति हरगौर्याः सनातनः।
नैतयोः सदृशः कोऽपि विद्यते शंकराश्रमः॥
यात्राराध्यो महादेवो भवद्भ्यां नरसत्तमौ।
तत्स्थानं मनसादाय प्रसादय वृषध्वजम्॥
नाटकं पर्वतश्रेष्ठं गच्छतं नरसत्तमौ।
तत्र नित्यं महादेवो रमतेऽपर्णया सह॥
संध्याचले तत्र मुणेः आराधयति शंकरम्।
वशिष्ठो ब्रह्मणः पुत्रस्तं युवामनुगच्छताम्॥
(कालिकापुराणम्)

समस्त कामरूप में महादेव-पार्वती के अनेकों पीठ विद्यमान हैं और इस पीठ के समान तीर्थ इस धरातल केंअन्यत्र कहीं नहीं है। एकाग्र रूप में परमेश्वर की उपासना करने के लिए कामरूप ही उपयुक्त स्थान है। कामरूप के नाटकशिला में महादेव के साथ देवी दुर्गा हमेशा निवास करती है। ब्रह्मा के पुत्र वशिष्ठ मुनि ने भी संध्याचल पर्वत पर महादेव की आराधना की थी।

(1/11)

अत्र देवी महामाया कामाख्या जगतां प्रसूः।

कामाख्यारूपमास्थाय सदा तिष्ठति शोभना॥
अत्रास्ति नदराजोऽयं लौहित्यो ब्रह्मणः सुतः।
अत्रैव दश दिक्पालाः स्वे स्वे पीठे व्यवस्थिताः॥
अत्र स्वयं महादेवो ब्रह्मा चाहं व्यवस्थिताः।
चंद्रः सूर्यश्च सततं वसतोऽत्र च पुत्रक॥
सर्वे क्रीड़ार्थमायाता रहस्यं देशमुत्तमम्।
अत्र श्रीः सर्वतोभद्रा भोग्यमत्र तथा बहु॥
(कालिकापुराणम्)

कामरूप में जगतप्रवासिनी योगिनिद्रारूपिनीं देवी कामाख्या विराजमान हैं। कामरूप में तीर्थराज ब्रह्मपुत्र भी प्रवाहित हैं। इस पुण्यतीर्थ कामरूप में सारे दिकपालगण अपने अपने स्थानों पर स्थित हैं। स्वयं परमेश्वर महादेव भी कामरूप में सर्वदा विराजमान है। कामरूप अति उत्तम और रहस्य से घिरा हुआ है, इसीलिए देवतागण क्रोड़ा के उद्देश्य से कामरूप में आते रहते हैं। इसी कामरूप में ही सर्वतोभद्रा नामक लक्षी देवी का पीठ स्थित है, परंतु यहे पीठ अति गोपनीय है।

(1/12)

कामरूपं महापीठं सर्वकाम फलप्रदम्।
कलौ शीघ्रफलो देवि कामरूपे जपः स्मृताः॥
(कुब्जिकातंत्रम्)

कामरूप महापीठ में सारे भक्तों की मनोकामना का फल प्राप्त होता है। विशेषतः कलिकाल में इस स्थान पर जप करने पर शीघ्र फल प्राप्त होता है।

(1/13)

तिष्ठामि सततं देव नित्याहुरहमव्यया।
सच्चिदानंदरूपाहं ब्रह्मैवाहं स्फुरत्प्रभाम्॥
(योगिनीतंत्रम्)

कामरूप में देवी सर्वदा स्वतंत्र रूप में प्रकाशित होती आयी है। वे नित्या, अव्यया, सच्चिदानंदरूपा और स्फुरतप्रभ ब्रह्मा हैं।

(1/14)

इच्छा तु विष्णवे दत्वा क्रियाशक्तिन्तु ब्रह्मणे।

महयं दत्वा ज्ञानशक्तिः सर्वशक्तिस्वरूपिणा॥
तदोवाच महाकाली शृणुध्वं परमेश्वरी।
अहं मिशामि युष्मासु पूर्णरूपेण शंकरे॥
(योगिनीतंत्रम्)

कामरूप में देवी सर्वशक्तिस्वरूपिणी हैं, उन्होंने विष्णु को इच्छाशक्ति, ब्रह्मा को क्रियाशक्ति और महेश्वर को ज्ञानशक्ति प्रदान करके उनके हृदय में प्रवेश किया है। देवी ने केवल महेश्वर के हृदय में ही पूर्णरूप से प्रवेश किया है।

(1/15)

कामरूपं महापीठं यो जानीते नरोत्तमः।
स दिव्यज्ञान-सम्पन्नः परं निर्वाणमाप्नुयात्॥
यः कामरूपे सकले पीठयात्रां समाचरेत्।
आसाद्य सकलं पीठं पूजयेत् सर्वदेवताः॥
दश पूर्वान् दश परात्मानञ्चैकविंशतिम्।
दिव्ये ज्ञाने निधायाशु सर्वैर्न्मुक्तिर्मियात् सह॥
(कालिकापुराणम्)

जो व्यक्ति कामरूप के महापीठ के माहात्म्य के बारे में जानता है, वह दिव्यज्ञान सम्पन्न होकर परम निर्वाण प्राप्त करता है। जो व्यक्ति कामरूप के सभी पीठस्थानों में प्रार्थना और पूजा करता है वह अपने वंश के पूर्वज सहित खुद दिव्यज्ञानसम्मन्न होकर मुक्ति लाभ करता है।

(1/16)

कलौ श्रीकालिकापीठे कामरूपे सुमंत्रवित्।
पीत्वा वायुं जपेद्यस्तु स्थिरचेताः प्रकीर्त्तिताः॥
(रुद्रयामलम्)

कलियुग में कामरूप के कालिका पीठ में वायुसेवन करके मंत्रपाठ करने को ही स्थितधि कहा जाता है।

(1/17)

कामरूपस्य माहात्म्यं कथयस्व महेश्वर।
यत्र साक्षात् भगवती प्रत्यक्षफलदायिनी॥

मन्ये सर्वेषु पीठेषु श्रेष्ठोऽयं परमेश्वर।
यत स्त्वयापि तत्रैव तपसाराधितेश्वरी॥
(महाभागवतम्)

कामरूप में भगवती साक्षात् प्रत्यक्ष फलदायिनी है, इसीलिए कामरूप के माहात्म्य के बारे में गुणानुकीर्त्तन करना चाहिए। अन्य पीठों की तुलना में कामरूप पीठ श्रेष्ठ है। और स्वयं महादेव ने इस पीठ में तपस्या द्वारा परमेश्वरी की आराधना की थी।

(1/18)

पीठानाञ्चैकपञ्चाशदभवन्मुनिपुंगव।
अंगप्रत्यंगपातेन च्छाया सत्या महीतले॥
तेषु श्रेष्ठतमः पीठः कामरूपो महामते।
यत्र साक्षाद्भगवती स्वयमेव व्यवस्थिता॥
तत्रगत्वा महापीठे स्नात्वा लौहित्यवारिणि।
ब्रह्महापि नरः सद्यो मुच्यते भवबंधनात्॥
ब्रह्मपुत्रः स्वयं साक्षात् द्रवरूपी जनार्द्दनः।
तस्मिन्नरः कृतस्नानो मुच्यते सर्वपातकात्॥
(महाभागवतम्)

धरातल पर सती के अंगप्रत्यंग गिरते हुए इक्कावन (51) पीठ की सृष्टि हुई हैं और इन पीठों में देवी साक्षात् विराजमान हैं। इन पीठों में कामरूप ही सबसे श्रेष्ठ पीठ है। इस कामरूप में स्थित ब्रह्मपुत्र साक्षात द्रवरूपी जनार्दन विष्णु हैं, इस नद के जल में स्नान करने से मुक्ति मिलती है।

(1/19)

कामरूपस्य तीर्थस्य यत्र साक्षात् स्वयं शिवा।
प्रत्यक्ष फलदा मर्त्यैःस्थानं नास्ति ततोऽधिकम्॥
यत्र देवाः सगंर्धवा ब्रह्माद्याश्च सुरोत्तमाः।
प्रत्याहं समुपागत्य सेवंते भक्तितत्परः॥
(महाभागवतम्)

कामरूप में स्थित तीर्थों की तरह प्रत्यक्ष फलप्रद स्थान मर्त्य मे अन्य कही नहीं है। इसी कामरूप में देव, गंधर्व, ब्रह्मा आदि सूरोत्तमगण प्रत्यागमन करते

रहते हैं।

(1/20)

पीठार्चनं महादेवि यत्र सिद्धिरनुत्तमा।
पीठानां परमं पीठं कामरूपं महाफलम्॥
तत्र यत् क्रियते पूजा सकृद्वापि महेश्वरि।
बिहाय सर्वपीठानि तस्यदेहे वसाम्यहम्॥
(वृहन्नीलतंत्रम्)

सारे पीठों के अंदर कामरूप ही श्रेष्ठ पीठ हैं, यहाँ पूजा करने से सिद्धि प्राप्त होती है। इस कामरूप में मात्र एकबार भक्तिचित के साथ पूजा करने पर देवी भक्त की देह पर अवस्थान करती हैं।

(1/21)

तत्र ये मानवाः संति ते देवा नात्र संशयः।
तत्र यद्ज्जलं देवि तत् सर्वं तीर्थमेव हि॥
उपवीथिश्च वीथिश्च उपपीठञ्च पीठकम्।
सिद्धिपीठं महापीठं ब्रह्मपीठं तदन्तरम्॥
विष्णुपीठं महादेवि रुद्रपीठं तदन्तरम्।
नवयोनिरितिख्याता चतुर्द्दिक्षु समन्ततः॥
तत्र तत्र महापूजोत्तरोत्तरफलाधिका।
द्विगुणं द्विगुणं भद्रे फलमेव सुनिश्चितम्॥
सर्वषाञ्चैव विद्यानां सर्वमंत्रस्य शाम्भवी।
पूजने जपने चैव द्विगुणं द्विगुणं फलम्॥
नवयोनिरितिख्याता कामाख्या योनिमंडलम्।
नवयोनि मध्यभागे कामाख्या योनिमंडलम्॥
जले स्थले कामरूपे पूजानाच्च समं फलम्।
कामरूपे यथा विष्णुर्लक्ष्मीः श्रेष्ठा महेश्वरि॥
कामरूपे तथा देवी पूजा सर्वोत्तमा स्मृता।
कामरूपं देवी क्षेत्रं कुत्रापि तत्समं न च।
अन्यत्र बिरला देवी कामरूपे गृहे गृहे॥
(योगिनीतंत्रम्)

कामरूप के जिन स्थानों पर जल है, वे सभी स्थान तीर्थ स्थल हैं। कामरूप में नवयोनिपीठ क्रमशः वीथी, उपवीथी, पीठ, उपपीठ, सिद्धिपीठ, महापीठ, ब्रह्मपीठ, विष्णुपीठ एवम् रूद्रपीठ विद्यमान हैं। इन नवयोनिपीठ के मध्यभाग में कामाख्या देवी का योनिमंडल है। कामाख्या का योनिमंडल नवयोनि के नाम से विख्यात है। जिस तरह देवताओं के भीतर श्रेष्ठ विष्णु, देवी के भीतर श्रेष्ठ लक्ष्मी हैं, उसी रूप से कामरूप में देवीपूजा सर्वोत्तम माना जाता हैं। समस्त कामरूप ही देवीक्षेत्र है, यहाँ के जल-स्थल सभी स्थानों में पूजा का समरूप से फल प्राप्त होता है। कामरूप जैसे पुण्य स्थान पृथ्वी में और कहीं भी नहीं है, देवी कामरूप के हर गृह में विराजित हैं।

(1/22)

पीठानां परमं पीठं कामरूपं महाफलम्।
तत्र या क्रीयते पूजा सकृद्वापि महेश्वरी।
विहाय सर्वपीठानि तस्य देहे वसाम्यहम्।
(वृहन्नीलतंत्रम्)

सारे पीठों में से कामरूप श्रेष्ठ और महाफलप्रद है। कामरूप में सिर्फ एक बार पूजा करने से ही देवी भक्त के शरीर में निवास करती हैं।

- प्रथम अध्याय समाप्त -

द्वितीय अध्याय

कामाख्या योनिपीठ का माहात्म्य

कामाख्या योनिपीठ की सृष्टि और नीलाचल पर्वत की कथा-

(2/1)

अथ काले वहुतिथे व्यतीते प्राणी-सर्ज्जने।
अगह्यां दक्षतनयां भार्यार्थेऽहं वधूं वराम्॥
सा मेऽभुत् प्रेयसी भार्या प्रादाय समयं पितुः।
अनिष्टकारी त्वञ्चे स्याः प्राणांस्त्यक्ष्ये तदा त्वहम्॥
ततो यज्ञे समस्तांस्तु स च वव्रे चराचरम्।
न मां नापि सतीं वव्रे तद्निष्टान् मृता तु सा॥
ततो मोहं समाक्रांतस्तामादाय मृतामहम्।
प्राप्तः पीठवरं तंतु भ्रममाण इतस्ततः॥

(कालिकापुराणम्)

परमेश्वर महादेव ने कहा है- जीवजगत की सृष्टि के अनेकों काल पार होने के बाद मैंने दक्ष कन्या सती का पाणिग्रहण किया है। पितृगृह त्याग करने के समय दक्षराज को सती ने इस तरह से प्रतिज्ञाबद्ध किया था कि कभी अगर वे मेरा अनिष्ट साधन करते हैं, तब सती प्राण त्याग देगी। कुछ समय के बाद दक्षराज ने विशाल यज्ञ का आयोजन करके समस्त चराचर को आमंत्रण दिया, पर सती और मुझे आमंत्रण नहीं दिया। मेरे प्रति दक्षराज के उस अनिष्ट व्यवहार से दुखी होकर सती ने प्राणत्याग दिया और सती के प्रति मोहाविष्ट होकर सती की मृतदेह कंधा पर लेकर मैं चतुर्दिशा में भ्रमण करने लगा और अंत में इस कुब्जिका पीठ तक पहुंचा।

(2/2)

उन्मत्तवद् गच्छतोऽस्य दृष्ट्वा भावं विवौकसः।
ब्रह्माद्याश्चिन्तयामासुः शवभ्रंशन-कर्मणि॥
हरगात्रस्य संस्पर्शाच्छवो नायं विशीर्णताम्।
गमिष्यति कथं तस्मादस्य भ्रंशो भविष्यति॥

इति सञ्चिन्तयन्तस्ते ब्रह्माविष्णुशनैश्चराः।
सतीशवांतर्विविशुरदृश्या योगमायया॥
प्रविश्याथ शवं देवाः खंडशस्ते सतीशवम्।
भूतले पातयामासुः स्थाने स्थाने विशेषतः॥
(कालिकापुराणम्)

सती की देह कंधे पर लेकर चतुर्दिशा में विचरण करने वाले महादेव का उन्मत्त भाव देखकर ब्रह्मादि देवगण सती का शव महादेव के कंधे से च्यूत करने का उपाय सोचने लगे। अंत में ब्रह्मादि देवगण ने योगमाया शक्ति से अदृश्य होकर सती की शरीर में प्रवेश किया और उस शव का खंडित करके धरातल के भिन्न स्थानों पर निक्षेप किया।

(2/3)

तस्यास्त्वंगानि पर्यायात् पतितानि यतो यतः।
तत्तत् पुण्यतमं जातं योगनिद्राप्रभावतः॥
तस्मिंस्तु कुब्जिकापीठे सत्यास्तद् योनिमंडलम्।
पतितं तत्र सा देवी महामाया व्यलीयत।
कामरूपे कामगिरौ न्यपतद् योनिमंडलम्॥
(कालिकापुराणम्)

योगनिद्रा के प्रभाव से सती के शरीर के अंग-प्रत्यंग जिन जिन स्थानों पर गिरे, वे प्रत्येक स्थान ही पुण्यतीर्थ के रूप में विख्यात हो गए। कामरूप के कुब्जिका पीठ कामगिरी (नीलाचल पहाड़) पर सती का योनिमंडल गिरा और देवी महामाया भी उस योनिमंडल में विलीन हो गइ।

(2/4)

लीनायां योगनिद्रायां मयि पर्वतरूपिणी।
स नीलवर्णः शैलोऽभूत् पतिते योनिमंडले॥
स तु शैलो महातुंगः पातालतलमाविशेत्।
तस्या आक्रमणाद्गाढ़ अन्तःस्थं द्रूहिणो ह्यधात्॥
स तु पूर्वं ब्रह्मशक्तिं शिलां धर्त्तुं चतुर्म्मुखः।
शैलरूपोऽभवत् तेन शैलरूपेण मामधात्॥
ब्रह्मा पर्वतरूपी स मयि पर्वतरूपिणी।

संसक्तोऽघोऽगमद् गाढ़माक्रान्तो मयया विधेः ॥

(कालिकापुराणम्)

जब महामाया योगनिद्रारूपिणी सती के योनिमंडल पर्वतरूपी शिव में विलीन हो गइ थी तभी इस पर्वत का रंग नीलवर्ण हो गया और इसीलिए इसे नीलाचल नाम से अभिहित किया गया। महामाया के योनिमंडल का भार सहन न कर पाने से नीलाचल पर्वत की शिला क्रमशः पाताल की ओर गति करने लगी और तब ब्रह्माजी ने अपनी ब्रह्माशक्ति से पूर्वदिशा में उस शिला को धारण करके पर्वतरूपी शिव को भी धारण किया। योनिमंडल का भार सहन न कर पाने स क्रमशः ब्रह्मा की अधोगति होने लगी।

(2/5)

ततो-वराह-संसक्तो मयि मां स तु माधवः।
शैलरूपः शैलरूपं धर्त्तुं समुपचक्रमे॥
सोऽप्यधो यान् मया सार्द्धं तदा पर्वतरूपिणा।
आक्रम्य देवीं पृथ्वीं स्थितो भूवि निखातितः॥
शतं शतं योजनानां तुंगमासीद्गिरित्रयम्।
तदाक्रान्तं महादेव्या सर्वमेव ह्यधोगतम्॥
क्रोशमात्रं स्थितं तुंगशेषं तत्रितयस्य तु।
एका समस्तजगतां प्रकृतिः सा यतस्ततः॥
ब्रह्माविष्णुशिवैर्द्देवैर्द्धृता सा जगतां प्रसूः।
तत्र पूर्वो ब्रह्मशैलः श्वेत इत्युच्यते सुरैः।
मद्रूपधारी शैलन्तु नील इत्यूच्यते तथा॥
स तु मध्यगतः पीठस्त्रिकोणोदूखलाकृतिः।
विभ्राजमानः सततं मध्ये ब्रह्मावराहयोः॥
वराहः शैलरूपो यः स चित्र इति कथ्यते।
सर्वेषां संस्थितः पश्चात् दीर्घः सर्वेभ्य एव तु॥

(कालिकापुराणम्)

तब शैलरूपी ब्रह्मा वराह (विष्णु) में षंषक्त हो गए, उस शैलरूपीधारी माधव (विष्णु) शैलरूपधारी ब्रह्मा को धारण करने का प्रयत्न किया। फिर शैलरूपी ब्रह्मा के साथ शैलरूपी बराह (विष्णु) भी पाताल की तरफ

अधोगमित होने लगे।

समस्त पर्वत जब क्रमशः अधोगति होने लगी, तब महादेवी कामाख्या ने ब्रह्मा और विष्णु के साथ मिलकर समस्त पर्वत को खुद धारण किया। एकशतयोजन उच्च पर्वतत्रय केवल मात्र एकक्रोश उच्चता पर स्थित हो गया। ये पर्वतत्रय ब्रह्मा, विष्णु और शिव नाम से तीन भागों में विभाजित हैं। क्युंकि महादेवी कामाख्या अकेले ही जगत की प्रकृति हैं, इसीलिए इस जगतप्रवासिनी कामाख्या देवी को ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी ने पर्वत रूप में धारण किया। इन पर्वतत्रय की पूर्व दिशा में ब्रह्मापर्वत, मध्य भाग शिवपर्वत और पश्चिम भाग बराह (विष्णु) पर्वत है।

(2/6)

ऐशान्यां योऽभवत् कूर्म्मः शैलरूपो महाद्युतिः।
मणिकर्णः स नाम्ना तु ख्यातो देवौघ-सेवितः॥
योऽनंतरूपः शैलस्तु वायव्यां समवस्थितः।
मणिपर्वतसंज्ञोऽसौ पर्वतो माधवप्रियः॥
महामाया गिरिर्यस्तु नैर्ऋत्यां समवस्थितः।
स गन्धमादनो नाम्ना सर्वदा शंकरप्रियः॥
मणिकूटस्याथ गिरेर्गन्धमादनकस्य च।
मध्ये स्रवति लौहित्यो ब्रह्मणेऽग्निरुपस्थितः॥
(कालिकापुराणम्)

नीलाचल पर्वत के इशाण कोण में महाद्युति कुर्मरूप में मणिकर्ण पर्वत स्थित है और वह देवता द्वारा सेवित है। नीलाचल के वायुकोण में मणिपर्वत या फिर मणिकुट पर्वत स्थित है और यह पर्वत विष्णु का प्रिय है। मणिकुट और गंधमादन पर्वत के बीच में से ब्रह्मपुत्र (लोहित्य) प्रवाहित हुआ है।

कामाख्या योनिपीठ का माहात्म्य-

(2/7)

देवमध्ये यथा विष्णुः सर्वश्रेष्ठा यथा लक्ष्मीः।
कामरूपे तथा देवी पूजा सर्वोत्तमा स्मृता॥
कामाख्यायां महामायां यः पूजयति मानवः।
सर्वकाममिहप्राप्य परलोके शिवोभवेत्॥
(योगिनीतंत्रम्)

कामरूप के देवीपीठसमूहों में पूजा-साधना-आराधना अत्यंत फलदायक है। इनमें से महामाया कामाख्या देवी की पूजा सबसे अधिक फलदायक है। इन पीठों में पूजा-साधना-आराधना करने पर साधक के जीवन की कामना पूर्ण होती है और परवर्ती जीवन में शिवत्व लाभ करता है।

(2/8)

योनिपीठे यंत्रपीठे मनःपीठे च पार्वती।
त्रिधा भूत्वा वसेद्देवी पूज्यते साधकोत्तमैः॥
सर्वेषामेव पीठानां प्रधानं योनिपीठकम्।
तत्र सम्पूजिता देवी झटित्येव प्रसीदति॥
(महाचीनचारतंत्रम्)

कामरूप में विद्यमान सभी देवीपीठों में महामाया कामाख्या का योनिपीठ प्रधान है। यहाँ पर पूजा-आराधना करने से शीघ्र देवी संतुष्ट होती हैं।

(2/9)

योनिपूजा महापूजा तत्समा नहि सिद्धिदा।
तत्र देवीं यजेद्धीमान् सैव देवी न चान्यथा॥
(कामाख्यातंत्रम्)

योनिपूजा ही सर्वश्रेष्ठ पूजा है। साधक की मनोकामना पूर्ण करने के लिए इसके अलावा और कोई पूजा नहीं है।

(2/10)

योनिरूपा महाविद्या कामाख्या वरदायिनी।
वरदानंदा नित्या महाविभववर्द्धिनी॥
सर्वेषां जननी सापि सर्वेषां तारिणी माता।
रमणी सैव सर्वेषां स्थूला सूक्ष्मा सदा शुभा।
कामाख्याविमुखा लोका निंदिता भुवनत्रये॥
(कामाख्यातंत्रम्)

योनिरूपा महामाया कामाख्या सदा महाविभवर्धिनी है, वह सभी की जननी हैं। कामाख्या देवी की पूजा न करनेवाले लोग त्रिजगत में निंदनीय हैं।

(2/11)

तत्रत्या पृथिवी सर्वा देवीरूपा स्मृता बुधा।

नातः परतरं स्थानं कामाख्यायोनिमंडलात्॥

(देवीभागवतम्)

कामाख्या देवी सदाविराजमान कामरूप धरातल के अन्य सभी स्थानों से सर्वश्रेष्ठ साधनपीठ है।

(2/12)

ब्रह्मा उवाच-

वशिष्ठ गच्छ पुत्र त्वं पुनर्नीलाचलं प्रति।
तत्र स्थितो महादेवीमाराधय महाव्रत॥
कामाख्या योनिमाश्रित्य जगतः परमेश्वरीम्।
अचिराद्देवता सिद्धिर्भविष्यति न संशयः॥
एतस्या सदृशी काचिद्विद्या नास्ति जगत्रये।
इमं त्यक्त्वा पूनर्विद्यामन्यकां संग्रहीष्यसि॥

(महाचीनचारतंत्रम्)

ब्रह्मा वशिष्ठ से बोले- पुत्र तुम साधना परित्याग न करके नीलाचल गमन करो। इस स्थान पर जगत की परमेश्वरी योनिमंडल मिश्रिता महादेवी कामाख्या विराजमान हैं। वैसा स्थान त्रिजगत में दुसरे कहीं भी नहीं है। कामाख्या देवी की आराधना करने पर तुम्हे सिद्धि प्राप्त होगी।

(2/13)

तस्मिंस्तु कुब्जिकापीठे सत्यास्तद्योनिमंडलम्।
पतितं तत्र सा देवी महामाया व्यलीयत॥
लीनायां योगनिद्रायां मयि पर्वतरूपिणि।
स नीलवर्णः शैलोऽभूत् पतिते योनिमंडले॥

(कालिकापुराणम्)

कामरूप के कुब्जिका पीठ नीलाचल पहाड़ पर सती का योनिमंडल गिरा था और तुरुन्त पहाड़ नीलवर्ण हो गया और वह विशीर्ण योनिमंडल पहार पर गिरकर प्रस्तर वन गया। देवी महामाया भी उस प्रस्तरप्राप्त योनीमंडल में ही विलीन हो गई। तभी से यह पहाड़ नीलाचल नाम से विख्यात है।

(2/14)

या काली परामाविद्या ब्रह्मरूपा सनातनी।

कामाख्या चैव देवेशि सर्वसिद्धिविनोदिनी॥

(योगिनीतंत्रम्)

देवी काली ही परमविद्या ब्रह्मरूपा सर्वसिद्धिविनोदिनी सनातनी कामाख्या देवी हैं।

(2/15)

उड्डीयानस्य देवेशि प्रादुर्भावः कृते युगे।
पूर्ण-शैलस्य सम्भूतिस्त्रेतायुगमुखेऽभवत्॥
द्वापरे जलाशैलस्य कामख्यायाः कलौ युगे।
घोरस्य कलिपापस्य विनाशाय महेश्वरि॥

(योनिनीतंत्रम्)

सत्ययुग में उड्डीयान पीठ की प्रमुखता थी, त्रेता युग में पूर्णशिला की प्रमुखता थी, द्वापर युग में जलाशिला की प्रमुखता थी और कलयुग में घोर पाप का विनाश हेतु कामाख्या योनिपीठ की प्रमुखता हैं।

(2/16)

भो ब्रह्मण् शृणु वत्सौतद्वचनं मे शुभोदयम्।
केशिदैत्यवधार्थाय यत्र मे पूजनं कृतम्॥
युवाभ्यां तत्र पश्यध्वं जातं मे योनिमंडलम्।
मम तेजःसमुद्भूतं जानीहि योनिमंडलम्॥
सर्वेषामुद्भवस्थानं योनिरेव न संशय।
जानीहि प्रकृतिं देव योनिमेतांतु मामकीम्॥
संपूज्य योनिं देवेश सृष्टिं कुरु यथार्थतः।
सद्योऽपि च भयं न स्यात् तव क्कापि पितामह॥

(योनिनीतंत्रम्)

देवी कामाख्या ने ब्रह्मादेव से कहा है- हे ब्रह्मा, केशीदत्य का विनाश करने के लिए जिस स्थान पर मेरी पूजा की थी, उसी स्थान में अब एक योनिमंडल उद्भुत हुआ है। ये योनिमंडल मेरे रक्त से उत्पन्न है और यहीं से सबकुछ की उत्पत्ति हुई है, इसमे कोई संदेह नहीं है। मेरी जो प्रकृति है, वहि योनिमंडल की प्रकृति है। इसीलिये मेरे योनिमंडल के पास जाकर मेरी पूजा प्रारंभ करके सृष्टिकर्म में प्रवृत्त हो जाओ।

(2/17)

अधिष्ठानमस्ति मम तत्र पीठे न संशयः।
जानीहि तद्धिष्ठात्रीरूपं मेऽतिसुशोभनम्॥
नित्यं पूजय तद्रुपं कामाख्यायोनिमंडले।
योनिमंडलमासाद्य कामाख्यां यस्तु पूजयेत्।
सर्वसिद्धीश्वरो भूत्वा परत्रेह च मोदते॥
(योनिनीतंत्रम्)

मैं उसी पीठ में ही स्थित हुं और उसी पीठ में विराजमान हुं। उस विख्यात योनिपीठ में मेरा सुन्दर रूप सदा विराजमान है। अतएव इस योनिपीठ में पूजा करो।

(2/18)

न भयं तस्य कुत्रापि कस्मादपि प्रजायते।
तवान्येषां हितार्थाय स्थापितं योनिमंडलम्॥
पृथिव्यां भारते वर्षे कामरूपं महाफलम्।
नवयोनिसमाकीर्णं महामुक्तिफलप्रदम्॥
नवयोन्यात्मके ब्रह्मण् कामरूपे मनोहरम्।
कामाख्यातेजसा देवि दीप्यते योनिमंडलम्॥
(योनिनीतंत्रम्)

सभी के हितों के लिए ये योनिमंडल संस्थापित हुआ है यह महास्थान भारतवर्ष के कामरूप देश में स्थित है। इस स्थान में महाफलप्रद नवयोनि है। नवयोन्यात्मक कामरूप में कामाख्या के रक्त ने इस सुमनोहर योनि को सर्वदा दीप्तमान कर रखा है।

(2/19)

श्रीमत् त्रिपुराभैरव्याः कामाख्यायोनिमंडलम्।
भूमंडले क्षेत्ररत्नं महामायाधिवासितम्॥
नातः परतरं स्थानं क्वचिदस्ति धरातले।
प्रतिमासम्भवेद्देवि यत्र साक्षाद्रजस्वला॥
अत्रत्यपृथिवी सर्वा देवीरूपा स्मृता बुधैः।

नातः परतरं स्थानं कामाख्यायोनिमंडलात्॥
कुर्याच्च महतीं पूजां भगवत्याः विधानतः।
क्षमापयेज्जगधात्रीं जगदम्बां जगन्मयीम्॥
(देवीभागवतम्)

कामाख्या योनिमंडल त्रिपुराभैरवी का परम स्थान है और यह स्थान पृथ्वी के सभी स्थानों से श्रेष्ठ हैं। कामाख्या योनिपीठ में देवी महामाया सदैव निवास करती है।

(2/20)

वेतालभैरव प्रति शिव उवाच-
गच्छतं कामरूपान्तः पीठं नीलाचलाह्वयम्।
कामाख्या निलयं गुह्यं कुब्जिका पीठ संज्ञके॥
आकाशगंगा यत्रास्ति तज्जलैरभिषिच्य च।
तत्राराधय तां पुत्रौ महामायां जगन्मयीम्।
सा प्रसन्ना चिराद्देवी वरदा नौ भविष्यति॥
(कालिकापुराणम्)

शिव ने अपने पुत्र वेताल भैरव से कहा है- हे पुत्र, कामरूप के नीलाचल पर्वत में कुब्जिका नाम की पीठ पर कामाख्या का गुप्त योनिमंडल विद्यमान है, जो देवी कामाख्या का निवासस्थान है। उक्त नीलाचल की आकाशगंगा में स्नान करके महामाया कामाख्या की आराधना करने पर वे शीघ्र प्रसन्न होकर तुम्हें वर प्रदान करेंगी।

(2/21)

कामाख्या त्रिपुरादीनामान्योषामपि पूजनम्।
सकृत् कृत्वा पीठयात्रां चेतुर्विधिवत् तदा॥
एवं तौ वद्धकवचौ कृतन्यासौ हरात्मजौ।
सुप्रिता चानुजग्राह महामायाथ तौ तदा॥
(कालिकापुराणम्)

वेताल भैरव ने योगमार्ग में त्रिपुरादी की पूजा करके पीठ यात्रा की और स्नान करके कवच धारण किया, महामाया उनके ऊपर सुप्रसन्न हुई।

कामाख्या योनिपीठ का पंटक्रोश निर्णय-

(2/22)

अमोणिं मणिपर्यन्तमाचित्राद् गंधमादनम्।
पञ्चक्रोशमितं देवि कामाख्यायोनिमंडलम्॥
ब्रह्माविष्णुसुरेशादैः सेवितं परमाद्भूतम्।
पञ्चक्रोशमितं देवि सर्वेषामेव दुर्लभम्॥
देवाः मरणमिच्छन्ति का कथा मानुषेषु च।
योनिपीठे महेशानि पञ्चक्रोशमिते शिवे॥
ये गच्छन्ति शिवाकारा ये मृतास्तेऽपुनर्भवाः।
ते च सूर्यात्मजक्लेशं न प्राप्नुवन्ति कर्हिचित्॥
योनिपीठे च निष्पापा ये वसन्ति नरोत्तमाः।
ते सर्वे शंकरा जातास्त्रिनेत्राश्चन्द्रमूर्द्धजाः॥

(योगिनीतंत्रम्)

अमेणि से मणिकूट तक और गंधमादन से चित्राचल तक जो क्षेत्र है, इस क्षेत्र के मध्यवर्ती पंचक्रोश परिमाण का स्थान देवी कामाख्या का योनिमंडल है।

पंचमुर्त्याभिधा कामाख्या-

(2/23)

एवं पुण्यतमे पीठे कुब्जिका-पीठसंज्ञके।
नीलकूटे मया सार्द्धं देवी रहसि संस्थिता॥
सत्यस्तु पतितं तत्र विशीर्णं योनिमंडलम्।
शिलात्वमगमच्छैले कामाख्या तत्र संस्थिता॥
संस्पृश्य तां शिलां मर्त्यो अमरत्वमवाप्नुयात्।
अमर्त्यो ब्रह्मसदनं तत्स्थो मोक्षमवाप्नुयात्॥
तस्याः शिलायाः माहात्म्यं यत्र कामेश्वरी स्थिता।
सा चापि प्रत्यहं तत्र पञ्चमूर्त्तिधराभवत्॥
मोहार्थं सर्वलोकानां ममापि प्रीयते शिवा।
देव्याश्चापि नरश्रेष्ठ पञ्चरूपाणि भैरव॥
शृणु वेताल गुह्यानि देवैरपि सदैव हि।

कामाख्या त्रिपुरा चैव तथा कामेश्वरी शिवा।
शारदा च महोत्साहा कामरूपगुणैर्युता॥
(कालिकापुराणम्)

सबके हितों के लिए और परमेश्वर महादेव की प्रोति के लिए महामाया कामाख्या देवी इस योनिपीठ पर पंचमूर्ति धारण करके हमेशा विराजित रही हैं। कामाख्या, त्रिपुरा, सारदा, महोत्सहा और कामेश्वरी देवी कामाख्या की पंचमूर्ति के नाम हैं। कामेश्वर (वामदेव), सिद्धेश्वर (ईशाण), कोटिलिंग (तत्पुरुष), अधोड़ एवं आभ्रातकेश्वर (सद्यजात) परमेश्वर महादेव के पंच रूप भी मीलाचल पर कामाख्या देवी की निकट विराजित हैं।

कामाख्या शब्द की उत्पत्ति-

(2/24)

कामार्थमागता यस्मान्मया सार्द्धं महागिरौ।
कामाख्या प्रोच्यते देवी नीलशैले रहोगता॥
कामदा कामिनी कामा कांता कामांगदायिनी।
कामांगनाशिनी यस्मात् कामाख्या तेन उच्यते॥
(कालिकापुराणम्)

काम आदि चतुवर्ग फल प्रदान करने हेतु देवी परमेश्वर महादेव के साथ इस महागिरि नीलाचल पर अवस्थित होने के कारण देवी महामाया कामाख्या नाम से अभिहिता हैं। महामाया कामाख्या, कामदा, कामिनी, कामा, कांता, कामांगदायिनी एवम कामांगनाशिनी के रूप में परिचित है।

त्रिपुरा शब्द की उत्पत्ति-

(2/25)

त्रीण्यस्मात् पुरतो दद्यात् दूर्गा धाता महेश्वरी।
त्रिपुरेति समाख्याता कामाख्या कामरूपिणी॥
त्रिविधा कुंडली शक्तिस्त्रिदेवानाञ्च सृष्टये।
सर्वं त्रयं त्रयं यस्मान्त्रिपुरा तेन सा स्मृता॥
(कालिकापुराणम्)

जबकि महेश्वरी दुर्गा देवी की पहले ध्यात हैं इसीलिए कामरूपिणी कामाख्या त्रिपुरा नाम से प्रसिद्ध हैं। त्रिदेव-सृष्टि के लिए कुंडली शक्ति भी

तीन प्रकार हैं, जबकि सभी क्षेत्र में तीन या त्रि का प्राचुर्य है, इसीलिए उमा का नाम त्रिपुरा है।

कामेश्वरी शब्द की उत्पत्ति-

(2/26)

सिंहोपरि सितः प्रेतस्तस्मिल्लोहितपंकजम्।
कामेश्वरी स्थिता तत्र ईषत्प्रहसितानना॥
एका समस्तजगतां प्रकृतिः सा यतस्ततः।
ब्रह्माविष्णुशिवैर्देवैर्ध्रियते सा जगन्मयी॥
सितप्रेतो महादेवो ब्रह्मालोहितपंकजम्।
हरिर्हरिस्तु विज्ञेयो वाहनानि महौजसः॥
स्वमूर्त्या वाहनत्वन्तु तेषां यस्मान्न युज्यते।
तस्मान् मूर्त्यन्तरं कृत्वा वाहनात्वं गतास्त्रयः॥
यस्मिन् यस्मिन् महामाया प्रीणाति सततं शिवा।
तेन तेनैव रूपेण आसनान्यभवं स्त्रयः॥
एवं सदा महामाया कामाख्या चैकरूपिणी।
ध्यानतो रूपतो भिन्न तस्मात् तत्र पूजयेत्॥
(कालिकापुराणम्)

सिंह के ऊपर एक श्वेतवर्ण का प्रेत है, उसके ऊपर लाल पद्म है, इसी के ऊपर कामेश्वरी देवी माँ मुस्कुराती हुई विराजित है।

- द्वितीय अध्याय समाप्त -

तृतीय अध्याय

श्रीश्री कामाख्या योनिपीठ दर्शन का क्रम

प्रस्तावना : कालिकापुराण और योगिनीतंत्र में महामाया कामाख्या देवी के दर्शन के क्रम का सुन्दर रूप से वर्णन किया गया है। महामाया कामाख्या के दर्शन से पहले एकादिक्रम से नीलाचल के निकट तथा नीलाचल पर स्थित विभिन्न देवताओं का दर्शन और कुंड में स्नान करने की आवश्यकता का उल्लेख है। इस अध्याय में विधिपूर्वक महामाया कामाख्या के दर्शन का क्रम प्रस्तुत किया गया है।

उर्वशी कुंड का कथा (वर्तमान यह कुंड ब्रह्मपुत्र के गर्भ में विलीन है)-
उर्वशी कुंड का स्थान निरूपण-

(3/1)

उर्वश्यां विधिवत् स्नात्वा स्पृष्ट्वा पांडुशिलां तथा।
नीलकूटं समारुह्य पुनर्योनौ नजायते॥
(कालिकापुराणम्)

विधिपूर्वक उर्वशीकुंड में स्नान सम्पन्न करके पांडुशिला स्पर्श करने के पश्चात नीलाचल पर्वत आरोहण करने से इस धरातल पर पूणर्जन्म लाभ से मुक्ति मिलती है।

(3/2)

दक्षिणे भस्मकूटस्य देवी पीयूषधारिणी।
उर्वशी नाम विख्याता शक्रप्रीतिकरी सदा॥
देवैर्यत् स्थापितं पूर्वममृतं भोजनाय वै।
कामाख्यायास्तदादाय स्वयं तिष्ठति उर्वशी॥
शिलारूपो हरस्तान्तु समावृत्यैव तिष्ठति।
सा चैवामृतराशिंतु कृत्वा किञ्चन किञ्चन।
उपस्थापयेत् नित्यं कामाख्या योनिमंडले॥
(कालिकापुराणम्)

भष्मकुट के दक्षिण में उर्वशी नाम से विख्यात इन्द्र की प्रिय पीयुषधारिणी

देवी विद्यमान है। पूर्व में देवतागण ने भोजन के लिए जो अमृत स्थापित की थी, उसी स्थान से उर्वशी देवी कामाख्या के भोजन हेतु अमृत प्राप्ति करने के लिए इसी स्थान पर निवास करती हैं। परमेश्वर महादेव शिलारूप में सम्यक रूप आच्छादन कर वहाँ अवस्थित हैं। इसी अमृतराशि से उर्वशी प्रतिदिन देवी कामाख्या के भोजन के लिये थोड़ा थोड़ा अमृत योनिमंडल में अर्पण करती हैं।

(3/3)

तत्क्षेत्रस्योत्तरे भागे धनुरर्कप्रमाणतः।
उर्वशी सा समाख्याता सर्वकन्मषनाशिनी॥
माघे मासि सिते पक्षे द्वादश्याञ्च समाहितः।
स्नात्वाश्वमेधजं पुण्यं लभते संक्रमेषु च॥

(योनिनीतंत्रम्)

आगष्त्य के उत्तर दिशा में द्वादशधनु परिमित सर्वपापनाशिनी उर्वशी नाम के तीर्थ विराजित है। मनुष्यगण माघ महीने की शुक्ला पंचमी तिथि और संक्रान्ति में इस तीर्थ में स्नान करते हैं तो अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है।

(3/4)

ब्रजेदुमाशैलयाम्य इषुक्षेपद्वये स्थितम्।
शतवाहुप्रमाणेन उर्वश्याख्यां सरोवरम्॥

(गवाक्ष)

उमानंद पहाड़ के दो धनु की दुरी में शतबाहु परिमाप का उर्वशी कुंड है।

उर्वशी कुंड प्रणाम मंत्र (कुंड के उत्तर दिशा में कृतांजलि पूर्वक पाठ करना चाहिये)

उर्वशी कुंड प्रणाम मंत्र–

(3/5)

उर्वशी त्वं नमस्तेऽस्तु वाराणस्यां कलाधिके।
तीर्थानां प्रवरे देवि नमस्तेऽमृतसम्भवे॥
नमस्ते सर्वतोभद्रे नमो वैष्णवि सर्वदे।
विष्णोरूरुभवे शांते नमस्तेऽमृतसम्भवे॥

उर्वशी कुंड में स्नान का संकल्प-

(3/6)

आदित्यादि अश्वमेधयज्ञफल-समफल-प्राप्ति-कामः उर्वश्यां स्नानमहं करिस्ये।

उर्वशी कुंड में स्नान से पहले अर्घ्यदान मंत्र-

(3/7)

त्रिदशैः पूजिते देवि भुक्ति मुक्ति प्रदायिनि।
गृहाणार्घ्यं महादेवि वाराणस्याः कलाधिके॥

उर्वसी कुंड में कृतांजलिपूर्वक स्तुति मंत्र-

(3/8)

पुरन्दर पुरायते वाराणस्याः कलाधिके।
सुधा संकीर्ण तोयौघैः पापं हर ममोर्वशी॥
पुरंदर प्रिये देवि वाराणस्या सदाधिके।
लौहित्य ह्रद संकीर्णे पापं हर ममोर्वशी॥

उमानंद की कथा-

उमानंद का स्थान निर्णय-

(3/9)

नन्दनात् पूर्वभागे तु भस्मकूटो महागिरिः।
यः स्वयं भर्गरूपः सदैच्छान्तमुत्तमम्॥
ब्रह्मशक्तिशिलायास्तु पूर्वभागे तु मध्यतः।
यत्र पर्वतरूपोऽहं स तु भस्माचलाह्वयः॥

(कालिकापुराणम्)

नंदन की पूर्वदिशा में भष्मकूट पर्वत स्थित है। इस भष्मकूट पर स्वयं परमेश्वर महादेव के रूप में विराजमान है।

(3/10)

तस्मिन् तीर्थवरे देवि पूर्वस्यां क्षेत्रमध्यतः।
लौहित्यस्य तथा मध्ये स्थितः शैलो वराननेे।
तत्रास्ति भगवान् शम्भोःउमानंदकरः प्रभुः॥

(कालिकापुराणम्)

कामाख्या क्षेत्र की पूर्वी दिशा में और लौहित्य के बीच में उमा को आनन्द

प्रदान करनेवाले भगवान शंभु उमानंद के नाम से विराजमान हैं।

उमानंद का माहात्म्य-

(3/11)

अतस्तव प्रवक्ष्यामि गुह्याद् गुह्यतमं शुभम्।
वृषध्वजस्य माहात्म्यं शृणु देवि वरानने॥
संयुक्ता सोमवारेण अमावस्या भवेद् यदि।
तदा भस्माचलं गत्वा देवमभ्यर्च्य यत्नतः।
कुलैकविंशमुद्धृत्य स गच्छत् परमं पदम्॥

(योगिनीतंत्रम्)

अगर सोमवार को अमावस्या तिथि हो, तो उस दिन उमानंद जाकर वृषवाहन महादेव की पूजा और जप करने पर एकविंश कुल का उद्धार होता है।

भष्मकूट (उमानंद मंदिर का पहाड़) आरोहन का नियम-

वक्ष्यमान मंत्र पाठ पुर्वक पुर्वि दिशा में भष्मकूट पर आरोहण, पूजा और पाठ करना चाहिए।

(3/12)

पूर्वाशाभिमुखेनैव आरोहेत् भस्मकूटम्।
वक्ष्यमाणेन मंत्रेण पूजयित्वा प्रणम्य च॥

(योगिनीतंत्रम्)

भष्मकुट (उमानंद मंदिर का पहाड़) प्रणाम मंत्र (आरोहणपूर्वक)-

(3/13)

वृषाचल नमस्तेऽस्तु धर्ममार्ग त्रिपिष्टप।
आरोहयामि शिखरं भस्मकूट नमोऽस्तुते॥

भष्मकुट (उमानंद मंदिर का पहाड़) अर्घ्यदान मंत्र (आरोहणपूर्वक)-

(3/14)

नमस्तेऽस्तु गिरीशाय नंदभद्राय वै ममः।
गृहणार्घ्यं मया दत्तं भस्मकूट नमोऽस्तुते॥

उमानंद प्रणाम मंत्र-

(3/15)

धर्मकामार्थमोक्षाय सर्वपापहराय च।
नमःत्रिशूलहस्ताय उमानंदाय वै नमः।
प्रसीद पार्वतीनाथ उमानंद नमोऽस्तुते॥

उमानंद दर्शन मंत्र-

(3/16)

देव देव महादेव शशांकांकितशेखर।
तव दर्शनमात्रेण पूणर्ज्जन्म न विद्यते॥

उमानंद ष्पर्श मंत्र-

(3/17)

जन्मकोटिसहस्राणि कल्पकोटिशतानि च।
उमेश स्पर्शनात् सद्यः पापं यातु क्षयं मम॥
जन्मजन्मार्ज्जितं पापं ज्ञानेनाज्ञानतः कृतम्।
तन्मे हरतु गौरीश स्पर्शनाद् वृषभध्वज॥
शिवलिंग महापुण्यं सर्वपापप्रणाशनम्।
यः स्पृशेदपि पाणिभ्यां न स पापेन लिप्यते॥

कामाख्या दर्शन का अनुज्ञा मंत्र-

(3/18)

उमानन्द नमस्तेऽस्तु पार्वती प्रीतिवर्द्धन।
निर्विघ्ना यातु मे सिद्धिर्युष्मात्पूजा कृता च मे॥
जगन्नाथप्रसादेन श्रीमत्कामेश्वरीं शिवाम्।
अर्च्चयाम्यद्य देवेश आज्ञया परमेश्वर॥

ब्रह्मकुंड की कथा-

ब्रह्वकुंड का स्थान निरूपण-

(3/19)

पांडुनाथस्योत्तरस्यां ब्रह्मकुंडाह्वयं सरः।
ब्रह्मणा निर्म्मितां पूर्वं स्नानार्थ स्वर्गवासिनाम्॥

(योगिनीतंत्रम्)

पुरातन काल में ब्रह्मा ने स्वर्गवासी देवतागणों के स्नान के लिये पांडुनाथ

के उत्तर में ब्रह्मकुंड नाम से इस कुंड का निर्माण किया था।

(3/20)

तस्य वायव्यभागे तु धनुर्द्वाशकं सरः।
ब्रह्मकुंडमितिख्यातं सर्वपापप्रणाशनम्॥
किं जप्यैः किं तपोभिश्च किं दानैः किं श्रुतैरपि।
ब्रह्मकुंडे नरः स्नात्वा सिद्धिं विंदति तत्क्षणात्॥
ईश्वरानुज्ञया पूर्वं सृष्टं तद् ब्रह्मणा पुरा।
सेवार्थञ्च समायांति तीर्थं तद् देवमानवाः॥
ऋषयः सिद्धगन्धर्वस्तीर्थानि च सरांसि च।
माहात्म्यमतुलं तस्य ब्रह्मकुंडस्य सुंदरि॥

(कालिकापुराणम्)

पांडुनाथ के वायुकोण में बारधेनु परिमित ब्रह्मकुंड नाम का सर्वपाप विनाशकारी तीर्थ है। जप, तप और वेदपाठ का जो फल है, ब्रह्मकुंड में अगर मानव स्नान करे तो वही फल की प्राप्ति होती है। ईश्वर की आज्ञा से ब्रह्मा ने इस कुंड की स्थापना की थी।

(3/21)

आयामेन शतं व्यामं विस्तीर्णत्वे तदर्द्धकम्।
सर्वपापहरं पुण्यं देवीलोकात् समागतम्॥

(कालिकापुराणम्)

इस ब्रह्मकुंड की लंबाई एक षै ब्याम परिमाण की और विस्तार में इसका आधा है।

ब्रह्मकुंड में स्नानपूर्वक संकल्प मंत्र-

(3/22)

विष्णुरित्यादि विष्णुसायुज्य प्राप्तिकामो ब्रह्मंसरो जले स्नानमहं करिस्ये॥

ब्रह्मकुंड में स्नान मंत्र-

(3/23)

कमंडलु समुद्भूत ब्रह्मकुंडामृतोद्भव।
हर मे सर्वपापानि पुण्यं स्वर्गञ्च साधय॥

पांडुनाथ की कथा-

पांडुनाथ का स्थान निरूपण-

(3/24)

वराह पांडुनाथाख्यः स्थितस्तत्र हरिर्यतः।
जघने शिरसी कृत्वा जघान मधुकैटभौ।
तस्यासन्ने ब्रह्मकुंडं ब्रह्मणा निर्म्मितं पुरा॥

(कालिकापुराणम्)

जिस हरि (विष्णु) ने मधुकैटव का सर जंघा के ऊपर रखकर मधुकैटव का वध किया था, वह हरि ही वराह पर्वत के शेष भाग में पांडुनाथ नाम से अवस्थित हैं। पांडुनाथ के निकट ब्रह्मा द्वारा स्थापित ब्रह्मकुंड स्थित है।

(3/25)

वराहपृष्ठचरमे यत्रश्छिन्नौ महासुरौ।
हरिणा तत्र संयातः पांडुनाथ इति स्मृतः॥

(कालिकापुराणम्)

वराह पर्वतपृष्ठ के शेष भाग के जिस स्थान पर भगवान विष्णु ने मधुकैटव नाम के असुरद्वय का शिरच्छेद किया था, उस स्थान पर उरु रूप जिस शिला का उत्पत्ति हुई, उसी स्थान का नाम पांडुनाथ है।

(3/26)

लौहित्य दक्षिणे तीरे नैर्ऋते कोलपर्वतः।
तस्य पश्चिमदिग्भागे पांडुनाथाह्वयो हरिः॥

(कालिकापुराणम्)

लौहित्य के दक्षिण तट और नेऋत कोण में कोल पर्वत है, इसके पश्चिमी भाग में पांडुनाथ के रूप में हरि (विष्णु) विद्यमान हैं।

(3/27)

रक्षकूटत् पूर्वदिशि भैरवो नाम माधवः।
पांडुनाथ इतिख्यातो ग्रावरूपेण संस्थितः॥

(कालिकापुराणम्)

रक्षकुट पर्वत की पूर्वी दिशा में भैरव नाम से माधव (विष्णु) पांडुनाथ नाम से स्थित है।

पांडुनाथ प्रणाम मंत्र-

(3/28)

पांडुनाथ नमस्तेऽस्तु नमस्ते मोक्षकारक।
त्राहि मां सर्वलोकेश विष्णुरूप नमोऽस्तुते॥

कामाख्या दर्शन का अनुज्ञा मंत्र-

(3/29)

नमस्ते पांडवे तुभ्यं महाभैरवरूपिणे।
अनुज्ञां देहि मे नाथ कामाख्यादर्शनं प्रति॥
नमस्ते पांडवे तुभ्यं महाभैरवरूपिणे।
अनुज्ञां देहि मे नाथ कामाख्यादर्शनं प्रति॥

नीलाचल पर्वत का आरोहण-

नीलाचल पर्वत आरोहण का ध्यान-

(3/30)

नीलं दशभुजं शान्तं मणिकुंडलमंडितम्।
नागहारोत्तरीयञ्च वृषभस्थं विचिंतयेत्।
पूजयेत् वह्निवीजेन नमस्कृत्य विधानत॥

नीलाचल पर्वत आरोहण का अनुज्ञा मंत्र-

(3/31)

नीलाचल गिरिश्रेष्ठ शिखरं तव कामदम्।
आरुह्य द्रक्ष्ये कामाख्यां योनिमुद्रां जगन्मयीम्॥
नीलशैल महावाहो धर्म्मकामार्थमोक्षद।
आरोहयामि शिखरं पापं हर प्रसीद मे॥
नीलशैल रिरिश्रेष्ठ त्रिमुर्त्तिरूपधारक।
तवाहं शरणं यातः पादस्पर्शं क्षमस्व मे॥

नीलाचल पर्वत आरोहण का द्वारफल-

(3/32)

पूर्वस्थश्च गृहस्थश्च आरोहेन्नीलपर्वतम्।
पूर्वद्वारि यदागच्छेत् प्राप्नुयाद्विपुलं धनम॥
उत्तरे मुक्तिकामस्तु राज्यकामस्तु पश्चिमे।
यदा दक्षिणमार्गेण आरोहेन्नीलकूटकम्॥

हतराज्यो भवेद्राजा अन्येषां जायते क्षयः।
ऐशान्ये तु तदा गच्छेद्विपुलं श्रियमाप्नुयात्।
वायव्यो चाग्निनैर्ऋत्ये महाभयंकरं भवेत्॥
(योगिनीतंत्रम्)

गृहस्थ पूर्वद्वार से आरोहण करना चाहिए। पूर्वद्वार से जो व्यक्ति ओरोहण करता है उसे धनलाभ होता है। उत्तर द्वार से आरोहण करने से मुक्तिलाभ और पश्चिम द्वार से आरोहण करने से राज्य लाभ होता है। यदि कोई व्यक्ति दक्षिण द्वार से नीलाचल पर्वत पर आरोहण करता है तो राजा होने से राज्यभ्रष्ट होता है और अन्य लोगों की मृत्यु होती है। ईषाण कोण से नीलाचल पर्वत पर आरोहण करने से अधिक धन लाभ होता है। वायु, अग्नि, नैऋत कोण से नीलाचल पर्वत आरोहण करने से महाभय प्राप्त होता है।

नीलाचल पर्वत का द्वारपाल निर्णय–

(3/33)

पूर्वद्वारे गणपतिं प्रथमस्तु प्रपूजयेत्।
नंदिनञ्च हनुमंतं पश्चिमद्वारि पूजयेत्॥
भृंगी चोत्तरतः पूज्यो महाकालस्तु दक्षिणे।
एते मम द्वारपाला देव्या द्वारे प्रपूजयेत्॥
(कालिकापुराणम्)

पूर्वद्वार पर गणपति, नंदी और हनुमान, पश्चिम द्वार पर भृंगी, उत्तर और दक्षिण में महाकाल, ये सभी देवी के द्वारपाल हैं। देवी के द्वार पर इन सभी की पूजा करना उचित है।

गणेश की कथा–

(3/34)

गणाध्यक्षः पूर्वभागे तस्य शैलस्य संस्थितः।
सिद्धः स नाम्ना विख्यातो द्वारि देव्याः प्रियः सुतः॥
(कालिकापुराणम्)

नीलाचल पर्वत के पूर्वभाग में देवी के प्रियपुत्र गणेश, देवी का गणाध्याक्ष बनकर पूर्वद्वार पर विराजमान हैं।

गणेश प्रणाम मंत्र–

(3/35)

मुषिकस्थं वृहत्कर्णं सर्वविघ्न विनाशनम्।
पथि स्थितं चाद्यपूज्यं वंदेऽहं गणनायकम्॥

वेताल भैरव की कथा-

(3/36)

गणेशः पूर्वद्वारस्थः कामाख्यापर्वतस्य तु।
तत्रैव चाग्निवेतालः स्थितो द्वारि मनोहरः॥

(कालिकापुराणम्)

कामाख्या पर्वत के पूर्वद्वार पर गणेश और उसी द्वारदेश पर मनोहर अग्नि वेताल विद्यमान हैं।

वेताल भैरव प्रणाम मंत्र-

(3/37)

वेतालं विकटं देवं नमामि शिवरूपिणम्।
पथि स्थितं भग्नकायं सर्वसिद्धि प्रदायकम्॥

घंटाकर्ण प्रणाम मंत्र-

(3/38)

घंटाकर्ण नमस्तेऽस्तु महादेवानुचारक।
निर्विघ्ना यातु मे सिद्धि र्द्देव्या दर्शनमुत्तमम्॥

दुर्गाकुंड की कथा-

(3/39)

कात्यायनी-पीठनाम्ना पादपूर्गेति गद्यते।
नैर्ऋत्यां नीलशैलस्य प्रांते सा संस्थिता सदा॥
विद्धि तत्रैव दुर्गाख्यां नायिकां योनिरूपिणीम्।
सिद्धकामेश्वरी नाम्ना ख्याता देवेश नित्यशः॥

(कालिकापुराणम्)

नीलाचल का नैऋत कोण और प्रांतभाग में कात्यायनी जिस पीठ पर सर्वदा विराजमान हैं, उसीका नाम पाद-दुर्गा हैं, उसी स्थान पर योनिरूपिणी दुर्गा नाम की नायिका विराजमान हैं। वो सिद्ध कामेश्वरी नाम से अभिहिता हैं।

दुर्गाकुंड का प्रणाम मंत्र-

(3/40)

महिषासुरनाशाय पुरा शक्रादिभिः स्तुतम्।

सिद्धयै चैतं नमस्यामि देव्याः पादोपशोभितम्॥

आम्रातकेश्वर की कथा-

(3/41)

दूर्गाकूपस्य पूर्वे तु देवमाम्रातकेश्वरम्।

धनुस्त्रयांतरे देवि पूजयेत् केशवादिना॥

(योगिनीतंत्रम्)

दुर्गाकुंड के तीन धनु पूर्वदिशा में आम्रातकेश्वर नाम से शिव विराजमान हैं। उनकी केशवादि के संग पूजा करनी चाहिए।

(3/42)

सद्योजाताह्वयं शीर्षं पीठे त्वाम्रातकेश्वरम्।

श्रीभवाख्ये गह्वरे तु स्थितं देवर्षि सेवितम्॥

पीठे तु सिद्धगंगाख्या स्वयं गंगा समुन्नता।

आम्रातकस्य निकटे मम प्रीति विवृद्धये॥

(कालिकापुराणम्)

श्रीभव नाम के गुफा में स्थित और देव-ऋषिगण सेवित आम्रातक नाम से प्रसिद्ध पीठ है। इसी आम्रातक पीठ के पास देवी की प्रीति वृद्धि हेतु सिद्धगंगा नाम के गंगा सदा प्रवाहमान है।

आम्रातकेश्वर प्रणाम मंत्र-

(3/43)

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः।

भवे भवे नादिभवेत भवोद्भवाय नमः॥

बृहद-गणेश की कथा-

(3/44)

तस्य देवस्य याम्ये तु धनुरस्तांतरे प्रिये।

गजाकारं कृष्णवर्णं पूजयेद् गणनायकम्॥

(योगिनीतंत्रम्)

आम्रातकेश्वर से आठ धनु दूरी पर गजाकार एवं कृष्णवर्ण गणनायक है।

बृहद-गणेश प्रणाम मंत्र-

(3/45)

प्रत्यूहहारकं देवं मूषवाहनमुत्तमम्।
लम्बोदरं वृहत्कर्णं वंदेऽहं गणनायकम्॥

त्रिविक्रम की कथा-

(3/46)

तस्य पूर्वे नवधनुः संस्थितश्च त्रिविक्रमः।
तं प्रणम्य नरो भक्त्या सर्वान् कामानवाप्नुयात्॥

(योगिनीतंत्रम्)

बृहदगणेश के नौ धनु पूर्व दिशा में त्रिविक्रम नाम के भगवान विष्णु स्थित हैं। भक्तिभाव से उनकी पूजा करने पर, सभी कामनाएं पूर्ण होती हैं।

हनुमान की कथा-

(3/47)

ततो गच्छेद्धनुमंतमिषुक्षेपत्रयांतरे।
गिरिरूपं महाकायं प्रणिपत्य प्रपूजयेत्॥

(योगिनीतंत्रम्)

त्रिविक्रम के तीन धनु दूरी पर गिरिरूप महाकाल हनुमान विराजमान हैं। उनकी प्रणाम पूर्वक यथोपचार पूजा करनी चाहिए।

हनुमान प्रणाम मंत्र-

(3/48)

हनुमते नमस्तेऽस्तु शिवः शांतः नमस्कृत।
दंष्ट्राकरालवदन प्रसीद भवबन्धनात्॥
दनुमन्तं महाकायं सिद्धगंधर्व सेवितम्।
नमस्येऽहं सदा शांतं वरदं शिवरूपिणम्॥

सौभाग्य कुंड की कथा-

(3/49)

तस्यैशे पञ्चधनुर्धनुरेकप्रमाणतः।
चत्वारिंशद्धस्तमानं सौभाग्यं नाम वै सरः॥
क्रीड़ा पुष्करिणी सा हि कामाख्यायाः सुरेश्वरि।

शक्रेणोत्पादितं कुंडं सह देवैर्महेश्वरि॥
तस्य पश्चिमदिग् भागे स्नात्वा तत्र च मुंडनम्।
कृत्वा सम्यग्विधानेन उपवासं समाचरेत्॥
(योगिनीतंत्रम्)

हनुमान के ईशाण कोन में पाँच धनु दूरी पर एक धनु प्रस्थ और चालीस हाथ लंबाई-परिमित जो पुष्करिणी है, उसी का नाम कामाख्या का क्रीड़ा-पुष्करिणी सौभाग्य कुंड है। इस कुंड का देवगण के साथ देवराज इन्द्र ने निर्माण किया है। इस कुंड के पश्चिम तीर पर विधिपूर्वक स्नान, मुंडन और उपवास करना चाहिए।

सौभाग्य कुंड में स्नानपूर्वक कृतांजलि मंत्र-

(3/50)

पृथिव्यां यानि तीर्थानि त्वयि तिष्ठंति सर्वदा।
तस्मात् पुनीहि मां कुंड देवदानव पूजित॥
सर्वतीर्थमयस्त्वं हि सर्वक्षेत्रमयो ह्यसि।
दश पूर्वान् दश पराण् वंशानुद्धार पापतः॥

सौभाग्य कुंड में स्नानपूर्वक संकल्प-

(3/51)

पृथिव्यां यानि तीर्थानि त्वयि तिष्ठंति सर्वदा।
तस्मात् पुनीहि मां कुंड देवदानव पूजित॥
सर्वतीर्थमयस्त्वं हि सर्वक्षेत्रमयो ह्यसि।
दश पूर्वान् दश पराण् वंशानुद्धार पापतः॥

सौभाग्यकुंड में अर्घ्यदान मंत्र-

(3/52)

नमः सौभाग्यकुंडाय सर्वपापहराय च।
सर्वक्षेत्रमयेशाय गृह्नार्घ्यं मोचयैनसः॥

सौभाग्यकुंड में स्नान मंत्र-

(3/53)

सौभाग्ये सलिलावर्त्ते विमले मानसप्रिये।
नमो गां गों वषट् स्वाहा पापं हर नमोऽस्तुते॥

सौभाग्यकुंड में स्नान का फल-

(3/54)

सौभाग्ये विधिवत् स्नात्वा कामेशीं यस्तु पूजयेत्।
पितृन् संतर्पयेद्यस्तु देवीलोके प्रमोदते॥

(योगिनीतंत्रम्)

जो लोग सौभाग्य कुंड में विधिपूर्वक स्नान करके देवी कामाख्या की अर्चना और पूर्वपुरूषों की तर्पणादि करते हैं, उन्हे सुखपूर्वक देवीलोक प्राप्त हो जाते है।

सौभाग्य कुंड प्रदक्षिण का फल-

(3/55)

पृथ्वीप्रदक्षिणे यच्च फलं प्रोक्तं महर्षिभिः।
तत्फलं प्राप्यते तस्य कुंडस्यैव प्रदक्षिणे॥

(योगिनीतंत्रम्)

महर्षिगण कहते हैं पृथ्वी प्रदक्षिण करने से जो फल प्राप्त होतो हैं, सौभाग्य कुंड प्रदक्षिण करने पर भी तत्सम फल प्राप्त होता है।

सौभाग्यकुंड का षटकुंड निर्णय-

(3/56)

ऐशान्यो तस्य कुंडस्य लौहित्यं नाम वै सरः।
ध्रुवेण स्नात्वा देवेशि मुच्यते भवबंधनात्॥
अग्नौ कुंडं कालहस्तं यामलं नाम वै सरः।
तत्र स्नात्वा च तोयेन रूपवान् जायते भुवि॥
नैर्ऋते पञ्चकं हस्तं सौभाग्ये परमेश्वरि।
गंगासरो विजानीयात् स्नात्वा विष्णुपुरं व्रजेत्॥
कोलस्यांतर्गतं कुंडं सौभाग्यं परिकीर्त्तिताम्।
गोधिकाकार रूपेण रुक्षरक्तशिला च या॥
अनंताख्यां विजानीयात् सर्वतीर्थोद्भवं जलम्।
अनंतपश्चिमे पार्श्वे पूर्वे कृष्णशिला च या॥
वराहं तं विजानीयात् सर्वतीर्थोद्भवं जलम्।
तिस्त्रःकोट्यर्द्धकोटि च दिवि भुव्यंतरीक्षके॥

सौभाग्ये तानि सर्वाणि मंदीभूते दिवाकरे।
तस्मात् समाचरेत् स्नानं कर्त्तव्यं मकरे रवौ॥
तुलाविषुवसंक्रांत्यां यस्तु स्नानं समाचरेत्।
अभार्यो लभते भार्यामपुत्रं पुत्रवान् भवेत्॥
(योगिनीतंत्रम्)

सौभाग्य कुंड के ईसान कोण में स्थित लौहित्य कुंड में स्नान करने से मुक्ति मिलती है। अग्निकोण के कालहस्त कुंड और जामल कुंड, इन दोनों कुंड में स्नान करने से चिरजीवन रूपवान रहते हैं। नैऋत कोण के पाँच हाथ परिमाण के गंगासरोवर में स्नान करने पर विष्णुपुर प्राप्त होता है। गोधिकारूपी रूक्षरक्तशिला विशिष्ट जो कुंड उसका नाम अनंत कुंड है। अनंत कुंड के पश्चिम में कृष्णशिला विशिष्ट जो कुंड है, उस कुंड का नाम वराह कुंड है। पृथ्वी पर जो साढ़े तीन करोड़ तीर्थ हैं और स्वर्ग, मर्त्य, पाताल में जो समस्त तीर्थ हैं, वो सारे तीर्थ सौभाग्य कुंड में स्थित है। माघ, वैशाख और कार्तिक महीने की संक्रान्ति में सौभाग्य कुंड मों स्नान करने से अभार्या को भार्यालाभ और पुत्रहीन को पुत्रलाभ होता है।

सौभाग्य कुंड के तीर में श्राद्धादि कर्म की कथा-

(3/57)

अश्वतीर्थे कृतं श्राद्धं नीलकूटे च पञ्चके।
रामाश्रमे सोमकूटे श्राद्धी पितृन् दिवं नयेत्॥
(कालिकापुराणम्)

अश्वतीर्थ, नीलाचल (सौभाग्य कुंड के कीनारे), पंचक, रामाश्रम और सोमकुट में जो लोग श्राद्ध करते हैं, उनके पितृपुरुष का स्वर्गलाभ होता है।

(3/58)

ततो गौर्यास्तु शिखरं देव्यास्त्रैलोक्यविश्रुतम्।
समारुह्य नरः श्रद्धस्ततः कुंडेषु संविशेत्॥
तत्राभिषेकं कुर्वाणः पितृदेवार्च्चने रतः।
हयमेधमवाप्नोति शत्रुलोकाञ्च गच्छति॥
(महाभारतस्य बनपर्वम्)

त्रिभुवन के विख्यात नीलाचल पर्वत आरोहन करके मनुष्य सौभाग्य कुंड

के तीर पर श्राद्ध, तर्पण और पर्वत में स्थित देव-देवयों की पूजा-अर्चना करने पर अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न फल की प्राप्ति होती है और परकाल में ईन्द्रलोक का गमन करता है।

कंबलेश्वर की कथा-

(3/59)

कुंडस्याग्नेयभागे तु नातिदूरे व्यवस्थितः।
कम्बलाख्यां शिवां दृष्ट्वा मुच्यते भवबंधनात्॥

(योगिनीतंत्रम्)

सौभाग्यकुंड के अग्निकोण में कम्बलाख्य नाम से शिव अवस्थित हैं। उनका दर्शन करने से मुक्ति मिलती है।

कंवलेश्वर प्रणाम मंत्र-

(3/60)

नमो नमस्ते देवेश श्याम श्रीवत्सभूषित।
लक्ष्मीकांत नमस्तेऽस्तु नमस्ते पुरुषोत्तम॥
देवदानवगंधर्वपादपद्मार्च्चित प्रभो।
नमो वरदलिंगाय कम्बलाय नमो नमः॥

कामाख्या दर्शन की अनुज्ञा मंत्र-

(3/61)

नमस्ते कम्बलेशाय महाभैरवरूपिणे।
अनुज्ञां देहि मे नाथ कामाख्यादर्शनं प्रति॥

कंवलेश्वर प्रदक्षिण मंत्र-

(3/62)

स्तुत्वा प्रदक्षिणं कृत्वा ततो देवीगृहं व्रजेत्।
प्रविश्य संयतो भूत्वा धौतवासा जितेन्द्रियः॥

कामाख्या देवालय प्रदक्षिण मंत्र-

(3/63)

यानि यानिह पापानि जन्मान्तरेकृतानि च।
तानि तानि विनश्यंति प्रदक्षिणं पदे पदे॥

कामाख्या देवालय में प्रवेश का अनुज्ञा मंत्र-

(3/64)

(3/64)

कामदे कामरूपस्थे सुभगे सुरसेविते।
करोमि दर्शनं देव्या सर्वकामार्थसिद्धये॥

कामाख्या (चलंता अथवा कामेश्वरी) प्रणाम मंत्र-

(3/65)

कामाख्यां कामसम्पन्नां कामेश्वरीं हरप्रियाम्।
कामनां देहि मे नित्यं कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥

- अपरञ्च -

(3/66)

कामाख्ये वरदे देवी नीलपर्वतवासिनी।
त्वं देवी जगतं माता योंनिमुद्रे नमोऽस्तुते॥

कामाख्या योनिमंडल स्पर्श मंत्र-

(3/67)

मनोभवगुहामध्ये रक्तपाषाणरूपिणी।
तस्याः स्पर्शनमात्रेण पुनर्जन्म न विद्यते॥

कामाख्या योनिमुद्रा का जल पान मंत्र-

(3/68)

शुकादीनाञ्च यज्ज्ञानं यमादिपरिशोधिताम्।
तदेव द्रवरूपेण कामाख्या योनिमंडले॥

- तृतीय अध्याय समाप्त -

चतुर्थ अध्याय

देवी कामाख्या का दर्शन-पूजन का माहात्म्य

देवी कामाक्या के द्वारपाल और रक्षकगणों का विवरण-

(4/1)

अक्षतेन विशेषेण शतमार्गसहस्रकैः।
क्षेत्रवाह्यस्थितैः शून्यैः कश्चिद्विशेषरक्षिताः॥
कालाख्ये रणभद्रश्च सौरभश्च महाबलः।
वेतालश्च विकंटश्च एते पूर्वे स्थिता गणाः॥
एकजंघो नलश्चैव कंर्दमालिप्तविग्रहः।
घन्टाकर्णस्ततोर्द्धश्च दक्षिणं पार्शमास्थिताः॥
वलनाशो भीषणश्च पश्चिमायां व्यवस्थितः।
पञ्चमो लोहिताक्षश्च नंदनञ्च तथा मतः॥
केशवचक्रपाणिश्च धनदश्योत्तरा गणाः।
मधुनो मधुकश्चैव जयंतश्च मधुश्रीय॥
अविशेषेण रक्षंति त्रयः कामेश्वरीं स्थिताः।
द्वारं रक्षति वै सर्वं मंडपञ्च स्वयं हरः॥

(योगिनीतंत्रम्)

पूर्वी दिशा में काल, रणभद्र, महाबल, सौरभ, वेताल और विकंट अवस्थित हैं। उर्द्ध एवं दक्षिण में गण, एकजंध, नल, कर्दमालिप्त और घंटाकर्ण स्थित हैं। पश्चिम में बलनाश और भीषण हैं। अधो दिशा में पंचम, लोहिताक्ष एवं नंदन हैं। उत्तर में केशव और चक्रपाणि हैं। मधुन, मधुक एवं जयंत ये तीनों कामेश्वरी के निकट रहकर तीर्थ की रक्षा करते हैं। गणेश, कालदंत, विकर्ण और कपिध्वज द्वार रक्षा करते हैं और स्वयं परमेश्वर महादेव मंडप की रक्षा करते हैं।

देवी कामाख्या का रूप वर्णन-

(4/2)

नयनकरभिकारी ध्यानिनाञ्चोपकारी प्रणयिसुनयनसंस्थं देवसत्याह्निकस्थम्।

परमपदविशीर्णं सर्वदौर्भाग्यजीर्णं शृणु शिवपदरूपं कामदेव्याः स्वरूपम्॥
श्रवणगगनमात्रा चार्द्दितं यस्य नाम प्रभवति बहुभूत्यै गीतिमार्गैकधाम।
सुरगणगणनायां कुंडली यस्य शक्तिस्तदिह परमरूपं चिंतनीयं हताशैः॥
रविशशियुताकर्णा कुंकुमापीतवर्णा मणिकनकविचित्रा लोलकर्णा त्रिनेत्रा।
अभयवरदाहस्ता साक्षसूत्रप्रशस्ता प्रणतसुनरेशा सिद्धकामेश्वरी सा॥
अरुणकमलसंस्था रक्तपद्मासनस्था नवतरुणशरीरा मुक्तकेशी सुहारा।
शवहृदि पृथुतुंगस्तन्ययुग्मा मनोज्ञा शिशुरविसमवस्त्रा सर्वकामेश्वरी सा॥
विपुल विभवदात्री स्मेरवक्त्रा सुकेशी ललित नखरदन्ता सामिचंद्रावनम्रा।
मनासजदृषदिस्था योनिमुद्रालसंती पवनगमनशक्ता संश्रुतस्थानभागा॥
चिन्त्या चैवं विद्युदग्निप्रकाशा धर्म्मार्थद्यां साधकैर्वाञ्छितार्थैः।
कल्प्यंत त्रीण्यस्तदं सम्यगर्द्धं वेताल त्वं भैरव श्रीप्रतिष्ठतम्॥

(कालिकापुराणम्)

ध्यानकारीगणों के दंडपाणी होकर जो यम का भय दूर करती है, सारे दुर्भाग्यों की जीर्णकारी, प्रणयकारी सुनय सुसंस्थित देवलोक, मर्त्यलोक और आकाशव्यापी विराजमान शिवप्रदस्वरूपा कामाख्या देवी का स्वरूप श्रवण करो। उनका नाम कर्ण मध्यस्थित आकाशमार्ग संगत, नीतिमार्ग का एकमात्र आश्रय और बहु भुति के लिए समर्थ, उनकी शक्ति देवताओं की गणना का कुंडलीस्वरूप और हताश व्यक्तियों के लिए चिंतनीय है। उनका वर्ण सूर्यचन्द्रमायुक्त, रक्तवर्ण इषत पीत, कानों में मणिसुवर्ण निर्मित विभिन्न आभूषण डोलते रहते हैं, हस्त वर और अभयदान में रत एवं अक्षसुत्रधारिणी, देवता द्वारा पालन कियेजाए नरगण की ईश्वरी वह सिद्धेश्वरी हैं। अरूण कमल के ऊपर वो पद्मासन में बैठी है, वह नवयौवनशोभिता, मुक्तकेशी सुन्दर हार पहनकर वो शवहृदय में अधिष्ठात्री, स्थुल एवं उन्नत स्तनद्वय शोभिता, उनका वस्त्र उदित सूर्य जैसे उज्वल, वही सर्वकामेश्वरी है। वही कामेश्वरी विपुल वैभवदात्री, सदाहास्यमुखी, सुकेशी, ललित नखरदंतशालिनी, अर्धचन्द्रमा से अलंकृता, कामप्रस्तर में अवस्थित, योनिमुद्रा द्वारा उल्लासिनी, वायुवेग समर्था और प्रसिद्ध स्थान भागिनी हैं।

(4/3)

सिंहचर्म्मेत्तरासंज्ञा कामाख्या विपुलेदरा।

व्याघ्रचर्म्म वसना यथा चैव हरोदरा॥
परमानंदसम्भूता साट्टहासा महौत्सवा।
सुनंदालोकनप्रीता व्यक्ताष्यदशलोचना॥
चारुमाणिक्यसम्पूर्णं कुंडलद्वयशोभिता।
रौद्राकारैस्तथा रौद्री भृंगाली सहमालिका॥
मुकुटकोटिसुभ्रांशुः कमलज्योतिराजिता।
नानामणिगणाकीर्ण कंठभूषणधारिणी॥
मृणालकोमलैः स्निग्धा युक्ता द्वादशबाहुभिः।
अस्थिरत्नाञ्चितैर्द्दिव्यः पद्मकर्दममालिभिः॥
कत्तृकाशवदम्भोलि सूत्रचक्रांशुमांस्तथा।
षड्भिश्च बाहुभिर्धत्ते दक्षिणैर्बाहुभिः शृणु॥
कोदमुंडखट्वांग मृणालनलिनीव्रजं।
कपालं पुस्तकं घंटां मुंडमालानिवीतिनीम्॥
तुलाकोटिपराक्रांता पादपद्मचराश्रिता।
सिंहासनोर्ध्वं संसुप्ता शवाशनकृताश्रया॥
मणिप्रभाविधानेन शिवेन परमेष्ठिना।
नवकेशेन संश्लिष्य कामाख्या परमेश्वरीम्।
(योगिनीतंत्रम्)

महामाया कामाख्या देवी सिंहचमैत्तरासंगा, एवं विपुलोदरा, व्यघ्रचर्मवसना, साट्टहासा, महोत्सवा, सुनंदा, आलोकप्रीता, व्यक्तष्यादशलोचना, चारूमाणिक्यमंडित कुंडलद्वय से सुशोभित और रौद्राकृति रौद्री भृंगाली मालिकायुक्ता, मुकुटकोटी शुभ्र कमल की ज्योति से विराजिता, अनेक मणि मुक्ता से सुशोभिता कंठभुषण-धारिणी, मृणाल कमलसम कोमल स्निग्धा और द्वादशबाहुयुक्ता हैं। उनके गले में अस्थिरत्न से निर्मित दिव्य पद्ममाला लंबमान होकर शोभा विस्तार कर रही हैं और कानों में सुत्रनिबद्ध शवयुगल डोल रहे हैं। सिंहासन के अर्धभाग में प्रसुप्त शवासन स्थित और परमेष्ठि नवकेश शिव द्वारा आलिंगन बद्ध होकर बिराजमान हैं।

देवी कामाख्या का योनिमंडल निरूपण-

(4/4)

नीलशैलत्रिकोणस्तु मध्यनिम्नः सदाशिवः।

तन्मध्ये मंडलं चारु त्रिंशच्छिक्तिसमन्वितम्॥
गुहा मनोभवा तत्र मनोभवविनिर्म्मिता।
मनोभवगुहा तत्र पञ्चव्यामायता स्तुता॥
रक्तमंडलसंयुक्तां रक्तवर्णां सुवर्त्तुलाम्।
योनिस्तस्यां शिलायांतु शिलारूपा मनोहरा॥
वितस्तिमात्रविस्तीर्णा एकविंशांगुलीयुता।
क्रमसूक्ष्म-विनम्रा सा भस्मशैलानुगामिनी॥
सिंदुरकुंकुमारक्ता सर्वकामप्रदायिनी।
तस्यां योनौ पञ्चरूपा नित्यं क्रीड़ति कामिनी॥
(कालकिपुराणम्)

जिस पर्वत पर महादेव ने शिलारूप धारण किया, वह पर्वत त्रिकोण और मध्यनिम्न है। उसीके बीच में त्रिंशच्छिक्तियुक्त सुचारुमंडल है। वहीं पर कामदेव निर्मित मनोभव गुफा है। इस गुफा का आकार पंचव्याम-परिमित, रक्तवर्ण, वर्तुलाकार और रक्तमंडलयुक्त है। इसी शिला में ही देवी का योनिपीठ है। इस योनिमंडल का रूप अति मनोहर है, इसका परिमाण लंबाई में एक बितस्ति परिमित एवं आयतन इक्कीस उंगली और क्रमशः सूक्ष्म रूप से नम्र और भष्मशिला की अनुगामिणी है। यह योनिमंडल सिंदुर और कुमकुम जेसा रक्तवर्ण एवं सर्वकामप्रद है।

(4/5)

सप्ताशीतिधनुर्म्मानं रुक्षरक्ता शिला च यत्।
अष्टहस्तं सपुलकं लिंगं लक्षार्द्धसंयुताम्॥
चतुर्हस्तसमं क्षेत्रं पश्चिमे द्वादशांगुलम्।
वाहुमात्रमितं क्षेत्रं प्रस्तारे द्वादशांगुलम्।
आपातालजलं तत्र योनिमध्ये प्रतिष्ठितम्॥
(योगिनीतंत्रम्)

सप्ताशिती धनु परिमित रूक्षरक्त अष्टहष्त और पंचास सहस्त्र पुलाकम्बित शिवलिंगयुक्त चतुर्हस्त समक्षेत्रविशिष्ट जो शिला विद्यमान होकर रहा है, यही कामाख्या का योनीमंडल है। इस योनीमंडल का परिमाण लंबाई एक बाहु एवम प्रस्थ द्वादश उंगली है। ये योनीमंडल में सर्वदा आपतालजल प्रतिष्ठित हैं।

देवी कामाख्या का महात्म्य, दर्शन एवम पूजा का फल–

(4/6)

राजसूयसहस्त्राणि अग्निष्टोमशतानि च।
लभते मानवो नूनं कामाख्यायाश्च दर्शनात्।
कामाख्याञ्चैव दृष्ट्वा तु मुक्तिं प्राप्नोति मानवः ॥

(गवाक्ष)

मनुष्य एक हजार राजसूय यज्ञ और एकषौ अग्निष्टोम में जो फल प्राप्त करता है, देवी कामाख्या का दर्शन करने पर भी उसी फल की प्राप्ति होती है एवं परकाल में मुक्ति मिलता है।

(4/7)

ऋणानि त्रीण्यपाकर्त्तुं यस्य चित्तं प्रसीदति।
स गच्छेत् परया भक्त्या कामाख्यायोनि सन्निधिम्॥
तीर्थयात्रां समासाद्य यदोकोऽप्यत्र गच्छति।
पदे पदेऽश्वमेधस्य फलं प्राप्नोति मानवः ॥
सर्वासाञ्चैव विद्यानां सर्वमंत्रस्य चेश्वरि।
पूजनं जपनञ्चैव कुरुते साधकोत्तमः।
अनिमाद्यष्टसिद्धीनामाश्रयो जायते नरः ॥

(योगिनीतंत्रम्)

जो लोग देवऋण, पितृऋण और मातृऋण से मुक्त होना चाहते हैं, वे भक्तिभाव से कामाख्या जाकर देवी व योनिमंडल दर्शन, स्पर्श और योनिमंडल का जलपान करनेसे इस ऋण से मुक्त हो सकते हैं। जो भी व्यक्ति तीर्थ यात्रा करके इस स्थान तक आता है उसे अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है।

(4/8)

तत्र यद् यत् कृतं कर्म्म तदनंतफलं लभेत्।
तन्मध्ये परमेशानि समंतात् द्वादशांगुलम्॥
आपातालह्रदं देवि प्रोच्छलोज्वलमंडलम्।
तज्जलं परमेशानि ब्रहमाविष्णुशिवात्मकम्॥
ऐश्वरं तज्जलं देवि कारणार्णवसंज्ञकम्।
बहु किं कथ्यते देवि तज्जलं परमामृतम्॥

शंकितेनैव कथितमात्र जानिही सुंदरि।
कांक्षन्ति सततं देवि तज्जलं सचराचरम॥
तज्जलस्मर्शमात्रेण तद्ह्रदस्पर्शनेन् च।
तत्क्षणाम्मानवो देवि देवो भवति निश्चितम्॥
(कालिकापुराणम्)

इस पीठ में जो व्यक्ति कर्म करता है, उसे अनंत फलप्राप्त होता है। इस चार हाथों के पीठ के द्वादश उंगली परिमाण के स्थान के निचले ह्रद में जो जल बह रहा है, वही श्रेष्ठ है। उस ह्रद का जल ब्रह्माविष्णुशिवात्मक, ईश्वरात्मक एवं कारणार्णव है। यह जल ब्रह्माण्ड में सबको काम्य है। इस ह्रद का जल स्पर्श करने पर मनुष्य तत्काल पुण्यप्राप्त कर मुक्त होता है और जीवमुक्त होकर परकाल में देवत्व प्राप्त करता है।

(4/9)

तन्मध्ये च महेशानि गिरिर्नीलाचलोज्वलः।
ब्रह्माविष्णुशिवाकारः सर्वशक्तिमयः पुनः॥
तन्मध्ये परमेशानि मनोभवगुहापरा।
मनोभवगुहामध्ये रक्तपाषाणरूपिणी॥
कोटिलिंगसमाकीर्णा कामाख्या कल्पवल्लरी।
तत्तेजसा तु सन्दीप्ता मनोभवगुहा सदा॥
चतुर्हस्तप्रमाणानि समस्तात् पर्वतात्मजे।
तस्याः स्पर्शनमात्रेण शिवत्वमेति मानवः।
निष्पापो जायते देवि तत्क्षणान्नात्र संशयः॥
(योगिनीतंत्रम्)

पंचक्रोश के बीच में समुज्वल नीलाचल पर्वत विराजमान है। यह पर्वत ब्रह्मा, विष्णु और शिव का आकारस्वरूप और सर्वशक्तिमय है। इस पर्वत के मध्यभाग में मनोभव गुफा अवस्थित है और इस मनोभव गुफा में ही रक्तपाषाणरूपिणी देवी कामाख्या सर्वाभिष्ट प्रदायिनी और कोटिलिंगयुक्ता तथा कल्पलतिकारूपी होकर सर्वदा ही विराजमान हैं। इस चार हाथों के परिमाण का योनिमंडल ष्पर्श करने पर मनुष्य शिवरूप प्राप्त होता है और क्षण भर में निष्पाप हो जाता है।

(4/10)

शैवो वा वैष्णवो वापि शाक्तो वाऽन्यो महेश्वरि।
जप्यते यैस्तु मंत्रो हि तत्क्षणात् सिद्धिमृच्छति॥
अष्टोत्तरशतैनैव नात्र कार्या विचारणा।
कुशाग्रोत्थितं तद्देवी पितृभ्यो यः प्रयच्छति॥
गयाश्राद्धं कृतं तेन नियुताव्दं महेश्वरि।
एतत् ते कथितं देवि कामाख्यायोनिमंडलम्॥
संक्षेपेन प्रवक्ष्यामि माहात्म्यं वै विशेषतः।
किं तस्याः कथ्यते देवि माहात्म्यं ते यशस्विनि।
तत्र कोटि योगिनीभिः काली वसति तारिणी॥

(योगिनीतंत्रम्)

शैव हो, वैष्णव हो या फिर शाक्त हो, इस पुण्यस्थान पर जो अष्टोत्तर शतनाम जप करता है, क्षणभर में ही उसका मंत्रसिद्ध होता है। जो मनुष्य कुशवन के पहले हिस्से में लिए गए परिमाण का एक बूंद जल उस हृद से लेकर पिंड में दान करता है, उसे नियुताब्द गया श्राद्ध का फल मिलता है। इस योनिमंडल में कोटि योगिनियों के साथ काली निवास करती हैं।

(4/11)

व्यक्ताद् गुप्तं पुण्यतरं द्वापरं साधकोत्तमैः।
सर्वत्र लभ्यते देवि कुलद्वयविशारदैः॥
मनोभवागुहावह्नौ देवीशिखरमुत्तमम्।
तन्महोग्रमिति ख्यातं पीठं परमदुर्लभम्॥
सिद्धकाली ब्रह्मरूपा देवता भुवनेश्वरी।
निवसेत् तत्र या काली घोरदैत्यविनाशिनी॥
तत्पीठोपरि संविश्य दशधा च जपेन्मनुम्।
तदा मंत्रविशुद्धिः स्यात् तद्देहेन शिवो भवेत्॥

(योगिनीतंत्रम्)

व्यक्त से गुप्त पुण्यतर, यह गुप्त पीठ परम दुर्लभ है, इस गुप्तपीठ में ही कुलद्वयविशारद साधकगण ही सिद्धिलाभ करते हैं। नीलाचल पर्वत के शिखर पर देवी मनोभवगुफा के रूप में सतत सम्मुनत हो रही है, तभी यह परमदुर्लभ

पीठ महोग्र नाम से प्रख्यात है। इस पीठ में घोरदत्यविनाशिनी ब्रह्मा-स्वरूपिणी सिद्धकाली और देवी भुवनेश्वरी विद्यमान हो रही है। इस पीठ में मनुष्य हावारा दस बार जप करने पर मंत्रविशुद्धि हो जाती है और जीवदशा में ही शिवत्व प्राप्त होता है।

(4/12)

छिन्नमस्ता भैरवी सा सप्तसप्तविभेदिता।
धूमा च भूवनेशानि मातंगी कमलालया॥
भगक्लिन्ना भगाधारा तथा चैव भगंदरी।
दूर्गा च जयदूर्गा च तथा महिषमर्दिनी॥
उपविद्याश्च याः प्रोक्ताः सर्वाभिस्ताभिरेव च।
ब्रह्मविष्णुमहेशादैर्म्महाकाली वसेत् सदा॥
ब्रह्ममुखाश्रयं पीठमुग्रताराधिदैवतम्।
तत्पीठं द्धिविधं प्रोक्तं गुप्तं व्यक्तं महेश्वरि॥

(योगिनीतंत्रम्)

तारा, छिन्नमस्ता, भैरवी, धूमावती, भूवनेश्वरी, लक्ष्मी, सरस्वती, भगनक्लीना, भगाधारा, भगंदरी, दुर्गा, जयदुर्गा, महिषमर्दिणी और अन्य जो उपविद्या हैं, जहाँ अभिष्ट सिद्धि है, उन सभी के साथ ब्रह्माविष्णुमहेशादि देवगण महाकाली के साथ सर्वदा नीलाचल में अवस्थित हैं।

(4/13)

पुण्यपापविनिर्म्मुक्तो जीवन्मुक्तो भवेद्ध्रुवम्।
तद्ह्रदे पूजयेद् यो हि तज्जलेन महेश्वरि॥
जिह्वाकोटिसहस्रैस्तु वक्त्रकोटिशतैरपि।
वर्णयितुं न शक्नोमि तत्फलं गिरिनंदिनि॥
किं वदामि फलं तस्य पञ्चवक्त्रेण शाम्भवि।
ह्रदे हस्तं विनिक्षिप्य जलमध्ये महेश्वरि॥
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा महासिद्धीश्वरो भुवि।
मंत्रसिद्धिर्भवेत् तस्य तत्क्षणान्नात्र संशय॥

(योगिनीतंत्रम्)

कामाख्या योनिमंडल के ह्रद के जल में हाथ डुबाकर एक सौ आठबार

जप करने पर अति शीघ्र मंत्र की सिद्धि होती है।

(4/14)

पीठार्च्चनं महादेवी यत्र सिद्धिरनुत्तमा।
पीठानां परमं पीठं कामरूपं महाफलम्॥
तत्र या क्रियते पूजा सकृद्वापि महेश्वरि।
विहाय सर्वपीठानि तस्यदेहे वसाम्यहम्॥
तस्माच्छतगुणं प्रोक्तं कामाख्या योनिमंडलम्।
तेषां फलं महेशानि वक्तुं किं शक्यते मया॥
तत्र कोटिगुणैः सर्द्दमाद्या वसति तारिणी।
यत् पीठं ब्रह्मणा गुप्तं वक्तुं सर्वसुखावहम्॥

(महानीलतंत्रम्)

सभी पीठों के अंदर श्रेष्ठ पीठ है कामरूप, यहाँ पूजा करने पर उत्तम सिद्धि प्राप्त होती है। इस पीठ में सिर्फ एकबार भक्तिभाव से पूजा करने पर देवी उस भक्त की देह पर अवस्थान करती हैं। इससे भी आगे कामाख्या योनिमंडल में पूजा करने पर शतगुण फल प्राप्त होते हैं। इस योनिपीठ में सर्वगुणविशिष्ट अर्धकोटि योगिनियों के साथ महामाया आद्यदेवी निवास करती है।

(4/15)

एषु स्थानेषु देवेशि यदि दैवाद् गतिर्भवेत्।
जपपूजादिकं कृत्वा नत्वा गच्छेद् यथासुखम्॥

(महानीलतंत्रम्)

जो व्यक्ति नीलाचल पर्वत में स्थित देवी कामाख्या के योनिमंडल के साथ विराजमान अन्य सभी देव-देवियों का विधिपूर्वक जप-पूजादि करता हैं वह व्यक्ति पूजा के पश्चात अपने अभीष्ट स्थान तक गमन करता है।

(4/16)

यद् योनिमंडले स्नात्वा सकृत् पीत्वा च मानवः।
नहोत्पत्तिमवाप्नोति परं निर्वाणमाप्नुयात्॥

(महानीलतंत्रम्)

कोई भी व्यक्ति कामाख्या योनिमंडल का जल पान करने पर इस धरातल पर पुनः जन्म ग्रहण नहीं करता और वह निर्वाणप्राप्त करता हैं।

(4/17)

योनिपीठं कामगिरौ कामाख्या तत्र देवता।
यत्रास्ते त्रिगुणातीता रक्तपाषाणरूपिणी॥
तत्रास्ते माधवः साक्षादुमानंदोऽथ भैरवः।
सर्वदा विहरेद्देवि तत्र मुक्तिर्न संशयः॥
तत्र श्रीर्भैरवी देवी तत्र नक्षत्रदेवता।
प्रचंडचंडिका तत्र मातंगी त्रिपुरात्मिका॥
वगला कमला तत्र भुवनेशी च धूमिनी।
एतानि नव पीठानि शंसन्ति परभैरवाः॥

(तंत्रचुड़ामणि)

जिस कामगिरि पर त्रिगुणातिता और रक्तपाषणरूपिणी योनिपीठ विद्यमान है, वो देवी ही कामाख्या नाम से परिचित है। उस स्थान पर उमानंद भैरव और हयग्रीव साक्षात विराजमान हो रहे हैं, इस स्थान में देवी महामाया कामाख्या सर्वदा विहार करती रहती हैं, इस स्थान पर मुक्तिलाभ का कोई संदेह नहीं है, यहाँ पर ही भैरवी, छिन्नमस्ता, कालिका, बगला, मातंगी, कमला, भुवनेश्वरी, धूमावती और त्रिपुरा, ये नवपीठ विद्यमान हैं।

(4/18)

श्री शिव उवाच–

शृणु देवि मुदा भद्रे मदीयप्राणवल्लभे।
योनिरूपा महाविद्या कामाख्या वरदादायिनी॥
वरदानंददा नित्या महाविभववर्द्धिनी।
सर्वेषां जननी सापि सर्वेषां तारिणी माता॥
रमणीचैव सर्वेषां स्थुला सूक्ष्मा सदा शुभा।
तस्या मंत्रं प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय॥
निखिलासु च विद्यासु ये ये सिध्यंति साधकाः।
यत्र कुत्रापि केनापि कामाख्या फलदायिनी॥
कामाख्या विमुखा लोका निंदिता भुवनत्रये।
बिना कामात्मिकां कापि न दात्री सिद्धि सम्पदाम्॥

(कामाख्यातंत्रम्)

शिव ने कहा है- योनिरूपा कामाख्या महाविद्या सर्वदा वरदा आनंददायिनी और विभवदायिनी, वे सभी की जननी उद्धारकारिणी हैं। वो स्थूल, सूक्ष्मरूप में सभी की शुभदायिनी देवी हैं। समस्तमहाविद्या के भीतर साधक के लिए सिद्धिकारिणी केवल कामाख्या के अलावा अन्य कोई देव-देवी सिद्धि नहीं दे सकती। कामाख्या के प्रति विमुख लोग इस त्रिभुवन में निंदित हैं।

(4/19)

कामाख्या च सदा धर्म्मः कामाख्या चार्थ एव च।
कामाख्या कामसम्पत्तिः कामाख्या मोक्ष एव च॥
निर्वाणं सर्वदेवेशि सैव सायुज्यमीरितम्।
साकलोक्यसहरूपञ्च कामाख्या परमा गतिः॥
शिवता ब्रह्मता देवि विष्णुता चंद्रतापि च।
देवत्वं सर्वदेवानां निश्चितं कामरूपिणीः॥
(कामाख्यातंत्रम्)

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इस चतुर्वर्ग की फलदायिनी हैं कामाख्या, वही निर्वाणदात्री और सालोक्य, साजुज्य, सारोप्यादि परमगति दे सकती हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, चन्द्र आदि सर्वदेवगण की उन्होंने सृजन किया है।

(4/20)

सर्वसामपि विद्यानां लौकिकं वाक्यमेव च।
कामाख्याया महादेव्याः स्वरूपं सर्वमेव हि॥
पश्य पश्य प्रिये सर्वं चिंतयित्वा हृदि स्वयं।
कामाख्याञ्च विना किञ्चित् विद्यते भुवनेषु च॥
लक्षकोटिमहाविद्या स्तंत्रादौ परिकीर्त्तिताः।
सारात्सारतमा देवि सर्वेषां षोड़शी माता॥
तस्यापि कारणं देवि कामाख्या जगदम्बिका।
चंद्रकान्तिर्यथा देवि जायते लीयते पुनः॥
स्थावराणि चरानीह नित्यानित्यानि यानि च।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं विना तां नौव जायते।
सरत्सारतमं देवि योनिसाधनमिरीतम्॥
(कामाख्यातंत्रम्)

लोकालय में तथा वाक्य में सर्वविद्या श्रेष्ठ महादेवी कामाख्या हैं। तंत्र आदि में लक्ष्य कोटि महाविद्या के बारे में कहा गया हैं, पर उन सभी के बीच सारात-सारतमा हैं कामाख्या। सभी का कारण है कामाख्या; जिस प्रकार चंन्द्रमा की ज्योति क्रमशः विलुप्त होती है और फिर से निकल आती है, उसी तरह भगवती कामाख्या सभी स्थावर एवं नित्यानित्यादि की उत्पत्ति और लय का कारक और कारण हैं। सर्व साधना की श्रेष्ठ साधना कामाक्या योनिमंडल की साधना हैं।

(4/21)

भगं भगवती ज्ञेया दक्षिणा त्रिगुणेश्वरी।
चराचरमिदं सर्वं भगरूपं कुलेश्वरी॥
महत्वादीनि सर्वाणि त्रिविधं परिकथ्यते।
हकारार्द्धकला सूक्ष्मा योनिमध्यस्वरूपिणी॥
योनिश्च दक्षिणा काली ब्रह्माविष्णुशिवात्मिका।
त्रिकोणे च त्रयो देवाः शिवविष्णुपितामहाः॥
योनिमध्ये वसेद्देवी कालिका कुलसुंदरी।
ज्योतिरूपा महाकाली शुक्ररूपा प्रपञ्चसु॥

(निरूत्तरतंत्रम्)

त्रिगुणेश्वरी भगवती दक्षिणाकाली भी योनीरूपा महाविद्या हैं और वे समस्त चराचर के योनीरूपा कुलेश्वरी हैं। उनकी समस्त महत्वादि ही त्रिविधा है। हकारार्द्ध कलाधारा, सूक्ष्मरूपा योनिरूपा, ब्रह्माविष्णुशिवात्मिका योनीरूपा दक्षिणाकाली इस योनिमंडल में अवस्थान करती है। ब्रह्मा, विष्णु, शिव इस योनिमंडल में तीनकोणों में स्थित हैं।

(4/22)

शुक्रतो जायते विश्वः शिवशक्तिप्रभेदतः।
सगुणा सुरगर्भे च महाकालनिरूपिणी॥
नारीरूपं समास्थाय सैवविश्वं प्रसूयते।
विष्णुमाया महालक्ष्मी मोहयत्यऽखिलं जगत्॥
सहवानेव सा देवि योनिमार्गे चराचरं।
देवमार्गमिदं विश्वं देवमार्गनिषेवितं॥

शिवशक्तिमयं तत्वं तत्वं ज्ञानस्य कारणं।
वहूनां जन्मनामंते शक्तिज्ञानं प्रजायते॥
शक्तिज्ञानं विना देवि निर्वाणं नैव जायते।
कालिका कामपीठेषु सर्वकामप्रदायिनी।
तत्र चावाहनं नेष्टं कामाख्यायां कुलेश्वरि॥
(निरूत्तरतंत्रम्)

शिवशक्ति के मिलन से उत्पत्ति होनेवाले शुक्र से ही इस विश्व की सृष्टि है। महाकाल निरूपिणी भगवती ने सगुण होती हुई नारी रूप में इस विश्व का सर्जन किया है और तब विष्णु, लक्ष्मी आदि ने माया द्वारा अखिल ब्रह्माण्ड को मोहित किया है। ये योनिमार्ग, देवीमार्ग और देवगण द्वारा निषेवित हैं। यह शक्ति का तत्व शिवशक्तिमय और ज्ञान का कारण है। अनेक जन्मों के पश्चात शक्ति का ज्ञान आहरण होता है। शक्ति के ज्ञान के बगैर, निर्वाण प्राप्त नही होता है। इसीलिए सर्वकाम प्रदायिनी कामाख्या पीठ तक आकर देवी की पूजा-आराधना करना उचित है।

(4/23)

ते भ्रमन्तो महात्मानः पांडवा मुणिसत्तम।
व्यतीत्य सुचिरं कालं कामाख्यां द्रष्टुमाययौ॥
योनिपीठे भगवतीं प्रत्यक्षफलदायिनीं।
यत्राकार्षीत् तपः पूर्वं शम्भुर्द्देवाधिदैवतम्॥
तत्र गत्वा भगवतीं सम्पूज्याथ विधानतः।
राज्यं सम्प्रार्थयामासुः पांडवा धर्म्मतत्पराः॥
शत्रुणां निधनञ्चापि संग्रामेऽतिसुदारुणे।
सामात्यानां सुदुष्यनां कुरूणां पापचेतसाम्॥
तथा प्रार्थयतां तेषां पांडवानां महात्मनाम्।
प्रत्यक्षं सा भगवती समभ्येत्येदमब्रवीत्॥
धर्म्मपुत्र महाप्राज्ञ कुरूणां कीर्त्तिबर्द्धन।
प्रतिज्ञां त्वं समुतीर्य हत्वा सर्वान दुरात्मनः॥
एकं हि भारतीयुद्धे क्षत्रियेषु हतेषुवै।
भूयः प्राप्स्यसि राज्यञ्च मत्प्रसादादशंशयम्॥
(महाभागवतम्)

पूर्व में परमेश्वर महादेव देवी कामाख्या की पीठ में तपस्या करने की कथा का स्मरण करते हुए पंचपांडव ने वनवास के अंतिम भाग में प्रत्यक्ष फलदायिनी देवी कामाख्या के योनिमंडल के दर्शनार्थ नीलाचल आगमन कियौ। स्थिर चित्त से भक्तिभाव से दुष्टबुद्धि कुरुकुल का विनाश एवं युद्ध में विजयी होकर राज्यप्राप्ति का संकल्प करके देवी की पूजा-अर्चना की। देवी भगवती भी पंचपांडव की पूजा-अर्चना से संतुष्ट होकर प्रकट होकर कहने लगी- तुमलोग शत्रु का विनाश करके फिर से राज्य प्राप्त करोगे।

(4/24)

यत्र यत्र तदंगानि पेतु पृथ्व्यां पृथक् पृथक्।
ते ते देशा महापुण्याः सदा देवाह्यधिष्ठिताः॥
महातीर्थानि तान्येव मुक्तिक्षेत्राणि भूतले।
सिद्धपीठा हिते देशा देवानामपि दुर्लभः॥
तेषु देवीं समुद्दिश्य होमपूजादि वस्तु यत्।
कुरुते कोटिगुणितं फलं तस्य महामुने॥
तत्र जप्त्वा महादेवीं साक्षान्नयति मानवः।
पातकी मुच्यते पापाद् ब्रह्महत्यादिकादपि॥
भूमौ निपतिता स्तेतु छायांगावयवाः क्षणात्।
जग्मुः पाषाणतां सर्वलोकानां हितहेतवे॥
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च तथेन्द्राद्याः सुरा मुने।
आगत्य वहव स्तेषां सेवंते परमेश्वरीम्॥

(महाभागवतम्)

पृथ्वी के जिन जिन स्थानों में सती के अंग गिरे हैं उन सभी स्थानो में देवदुर्लभ मुक्तिक्षेत्र या फिर महातीर्थ स्थापित हुए हैं। इन सभी स्थानो में देवी के उद्देश्य से जो होम, पूजा, जप इत्यादि की जाती है, उससे कोटि गुण लाभ प्राप्त होता है। इन सभी पीठों में मनुष्य जप इत्यादी कर्म करके महादेवी को साक्षात प्राप्त करते है। छाया सती के अंग पृथ्वी पर गिरकर सर्वलोक के हित में पाषाणरूपिणी बनी और ब्रह्मादि देवगण उन पीठों में पूजा करने लगे।

(4/25)

सिद्धिमंत्राः समभवं स्तत्र जप्त्वा महामनुम्।

खेचरत्वमनुप्रापुस्तथा देवादिपूज्यताम्॥
योनिरूपां भगवतीं सुगुप्तां मुनिसत्तम्।
दृष्ट्वा स्पृष्ट्या च सम्पूज्य जीवन्मुक्तो भवेन्नरः॥
क्षेत्रस्पर्शनमात्रेण ब्रह्महापि नरः क्षणात्।
मुच्यते नात्र सन्देहः कामाख्याया प्रसादतः॥
(महाभागवतम्)

कामाख्या योनिमंडल का महामंत्र जप करके ब्रह्मादी देवगण सिद्धमंत्र हुए और ईश्वरत्व प्राप्त करके सभी के पूजित हुए।

(4/26)

कामाख्यासदृशं तीर्थं नास्त्यैव धरणीतले।
अंगप्रत्यंगपातेन सत्याः पुण्यतमा मुने॥
देशो भरतखंडेऽस्मिन् नृणां पाप प्रणाशकः।
अंगेषु भगवत्यास्तु योनिः श्रेष्ठतमा यतः॥
योनिरूपा हि सा देवी सर्वाषु स्त्रीष्ववस्थिता।
सा योनिः पतिता यत्र तत्र साक्षात् स्वयं सती॥
तेन नास्ति समं स्थानं पुण्यदं धरणीतले।
शम्भूर्वाराणसीक्षेत्रे नराणां मुक्तिदायकः॥
आराध्यः सिद्धगन्धर्वै देवकिन्नरराक्षसैः।
स शम्भूः कांक्ष्यते यत्र मुक्तिक्षेत्रे महेश्वरीम्॥
(महाभागवतम्)

कामाख्या जैसा तीर्थ इस पृथ्वी में और कहीं नहीं, सती का अंग-प्रत्यंग पृथ्वी पर गिरकर मनुष्य के लिये पाप नाशन के तीर्थ बने हैं, लेकिन अंगो में जैसे योनि श्रेष्ठ है और सभी स्त्री में वह योनिरूप विद्यमान है, इसलिए सती की योनि जिस स्थान पर गिरा है, उस स्थान की महिमा पृथ्वी पर पूज्य तीर्थ के रूप में अद्वितीय है। उस स्थान पर स्वयं सती विराजमान है।

(4/27)

चैत्रे मासि सिताष्टम्यां सर्वतीर्थमये शुभे।
लौहित्ये विधिवत् स्नात्वा तत्तोयैर्जगदम्बिकाम्॥
पूजयेत् तत्र यो भक्त्या स मुक्तो भवबंधनात्।

सर्वतीर्थमयं स्थानं सर्वतीर्थाधिकं परम्॥
लौहित्ये तु कृतस्नानः प्रयतः साधकोत्तमः।
पुरश्चर्यां नरः कृत्वा सिद्धमंत्रो भवेद्ध्रुवम्॥
यथा पूज्यतमाष्वेका भवानी भवसुंदरी।
पत्रेषु तुलसीपत्रं विल्वपत्रञ्च शोभनम्॥
यथा मायाविनां श्रेष्ठः पुरुषः श्रीगदाधरः।
तथा सर्वेषु तीर्थेषु श्रेष्ठं श्रीयोनिपीठकम्॥
कामाख्या परमं तीर्थं कामाख्या परमं तपः।
कामाख्या परमो धर्म्मः कामाख्या परमागतिः॥

(महाभागवतम्)

चैत महीने की शुक्ल अष्टमी तिथि पर सर्वतीर्थमय एवं शुभ फलप्रद ब्रह्मपुत्र का जल में विधि सम्मत स्नान करके भक्तिभाव से देवी कामाख्या का अर्चन करने से भवबंधन से मुक्तिलाभ मिलतो है। शुद्धमानस से ब्रह्मपुत्र के जल में नहाकर तर्पण पूर्वक देवी कामाख्या की अर्चना कर पुरचरण करने से मंत्रसिद्धि होती है। जिसतरह भवसुंदरी भवानी एक पूज्य हैं, पत्रों के भीतर तुलसी और बिल्बपत्र पूज्यतम हैं, मायावी के अन्दर जैसे विष्णू पज्य हैं, उसीतरह तीर्थ के अन्दर केवल योनिपीठ ही श्रेष्ठ है। कामाख्या ही परम तीर्थ, परम तपस्या, परम धर्म, केवल देवी कामाख्या की पूजा से ही परम गति प्राप्त होती है।

(4/28)

कामेश्वरीं तु कामाख्या पूजयेत् यथेच्छया।
दक्षिण्याद्वामभावाद्वा सर्वथा सिद्धिमाप्नुयात्॥

(कालिकापुराणम्)

कामेश्वरी कामाख्या देवी को दक्षिण या फिर वाम मार्ग के भीतर कोसि भी भावना के साथ पूजा करने से सिद्धलाभ होता है।

(4/29)

अथ वक्ष्ये फलाधिक्यं पूजया यत्र यद् भवेत्।
वाराणस्यां कृता पूजा सम्पूर्णफलदायिनी॥
ततस्तद्द्विगुणा प्रोक्ता पुरुषोत्तमसन्निधौ।

ततोऽपि द्विगुणा प्रोक्ता द्वारवत्यां विशेषतः॥
विंध्ये शतगुणा प्रोक्ता गंगामायपि तत्समा।
ततश्चतुर्गुणा प्रोक्ता करतोयानदीजले॥
तस्माच्चतुर्गुणा प्रोक्ता जल्पीशेश्वरसन्निधौ।
तत्र सिद्धेश्वरीयोनौ ततोऽपि द्विगुणा स्मृता॥
ततश्चतुर्गुणा प्रोक्तो लौहित्यनदपाथसि।
तत्समा कामरूपे तु सर्वत्रैव जले स्थले॥
कामरूपे देवीपूजा सर्वसिद्धिफलप्रदा।
सर्वश्रेष्ठा यथा विष्णुर्ल्लक्ष्मीः सर्वोत्तमा यथा॥
देवीपूजा तथा शस्ता कामरूपे सुरालये।
देवीक्षेत्रं कामरूपं विद्यतेऽन्यान्न तत्समम्।
अन्यत्र विरला देवी कामरूपे गृहे गृहे॥
(कालिकापुराणम्)

वाराणसी में देवी की पूजा करने पर संपूर्ण फल प्राप्त होता है; पुरूषोत्तम के निकट इससे द्विगुण; द्वारवती में इससे द्विगुण; गंगा और विंध्य में इससे सौ गुण अधिक, करतोवा नदी में इससे चारगुण; जल्पीश्वर में इससे सौ गुण; सिद्धेश्वरीयोनि में इससे द्विगुण; लौहित्य नदी में इससे चारगुण; लेकिन, समस्त कामरूप के जल और स्थल मे इसका अनुरूप लाभ होता है। कामरूप में देवी पूजा सर्वसिद्धिप्रद है; जेसे विष्णु सर्वश्रेष्ठ, लक्ष्मी सर्वोत्तमा, उसि तरह कामरूप देवी क्षेत्र है, इसकी कई तुलना नहीं है। अन्यत्र विरला ये कामाख्या देवी कामरूप के हर घर मे विराजमान हैं।

(4/30)
ततः शतगुणा प्रोक्ता नीलकूटस्य मस्तके।
ततोऽपि द्विगुणा प्रोक्ता हेरुके वरलिंगके॥
ततोऽपि द्विगुणा प्रोक्ता शैलपुत्रादियोनिषु।
ततः शतगुणा प्रोक्ता कामाख्यायोनिमंडले॥
कामाख्यायां महामायापूजां यः कृतवान सकृत्।
स चेह लभते कामान् परत्र शिवरूपताम्।
न तस्य सदृशोऽन्योऽस्ति कृत्यं तस्य न विद्यते।

वाञ्छितार्थमव्यप्येह चिरायुरभिजायते॥
वायोरिव गतिस्तस्य भवेदान्यैरवाधिता।
संग्रामे शास्त्रवादे च दुर्जयः च जायते॥
वैष्णवीतंत्रमंत्रेण कामाख्यायोनिमंडले।
सकृत्तु पूजनं कृत्वा फलं शतगुणं लभेत्॥

(कालिकापुराणम्)

नीलाचल पहाड़ में देवी पूजा से शत शत गुण फल मिलता है। जो मनुष्य कामाख्या में सिर्फ एकबार महामाया की पूजा करता है, इहलोक पर उसे वांछित फल मिलता है और परलोक में उसे शिवत्व प्राप्त होता हैं। उसके जैसा भाग्यवान पृथ्वी में और कोई नहीं है, उसके आकांक्षित सभी फलों की प्राप्ति होती है, एवं युद्ध शास्त्र आदि में वह अजोय होते हैं।

(4/31)

गवां कोटिप्रदानात् तु यत्फलं जायते नृणाम्।
तत्फलं समवाप्नोति कामाख्यां पूजयेन्नरः॥
दश पूर्वान् दश पराण् वंशानुद्धृत्य पापतः।
सकृत् सम्पूजनेनैव मम लोकमवाप्नुयात्॥
द्वि सम्पूज्य महादेवीं कामाख्यां योनिमंडले।
शतवंशान् समुद्धृत्य देवीलोकमवाप्नुयात्॥
यस्त्रिवाराण् पूजयेत् तु विधिनानेन मानवः।
नीलपर्वतमारुह्य कामाख्यां योनिमंडले॥
स सहस्रन्तु वंशानामुद्धृत्य पापकूपतः।
इह लोके सुखैश्वर्यचिरायुषुष्यमवाप्नुयात्॥
देहांते मद्गृहं प्राप्य गणानामधिपो भवेत्॥

(कालिकापुराणम्)

मनुष्य एक करीड़ गोदान करने पर जो फल प्राप्त करता है, कामाख्या देवी की पूजा करने पर उसी फल की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य सिर्फ एक बार कामाख्या देवी की पूजा करता है, उसीके पूर्व के दस पुरुष एवं पश्चात के दस पुरुष उद्धार होकर देवीलोक में गमन करते हैं। जो मनुष्य सिर्फ दो बार कामाख्या देवी की पूजा करते हैं उनके शतवंश उद्धार होकर देवीलोक

तक गमन करते हैं। जो मनुष्य तीन बार कामाख्या देवी की पूजा करते हैं, वे पापमुक्त होकर अपने सहस्र पुरषों को उद्धार करके इहलेक पर सुख ऐश्चर्य एबं दीर्घायु प्राप्त करता है एवं देहांत के अंत में देवीलोक में गमन करके गणाधिपत्य प्राप्त करते है।

(4/32)

यस्यां कस्यामथाष्टम्यां नवम्यां वापि साधकः।
पञ्चरूपांत कामाख्यां पञ्चमंत्रैः स्वतंत्रकैः॥
पूजयेद् वरदां देवीं मंडलश्च पृथक् पृथक्।
ध्यात्वा तु पञ्चरूपाणि जप्त्वा मंत्राणि पञ्च वै॥
स कल्पकोटिलक्षाणि मम लोके च मानवः।
स्थित्वा देवीप्रसादेन परं निर्वाणमाप्नुयात्॥
इह लोके वाञ्छितार्थं सुखं प्राप्य यशस्तथा।
रिपून् जित्वा स धर्म्मात्मा मातंगानिव केशरी॥
चिरायुः पुत्रपौत्रैश्च विभवैश्च समन्वितः।
क्रीड़यित्वा ह्यमरवद् युवतीभिश्च सादरात्॥
यक्षरक्षपिशाचानां नेता भवति नित्यशः।
सर्वान् कामनवाप्यैव द्विजराजसमो भवेत्॥

(कालिकापुराणम्)

कोई भी साधक किसी अष्टमी या नवमी तिथि में पंचरूपा कामाख्या देवी के अलग अलग मंडल अंकित करके स्वतंत्र पंचतंत्र के द्वारा पंचरूप का ध्यान और पंचमंत्र से जप करके पूजा करता है तो वह परम निर्वाण प्राप्त करता है और इहलोक में वांछित सुख और यश प्राप्त करके शत्रुवर्ग का विनाश करके दीर्घायु प्राप्त करके पुत्र पौत्र समन्वित अनेक वैभव प्राप्त करता है।

(4/33)

कामाख्यायां महामायां यः पूजयति मानवः।
सर्वकाममिह प्राप्य परलोके शिवो भवेत्॥
नहि तत्सदृशं कार्यमंयत्र भुवि विद्यते।
वाञ्छितार्थं नरो लब्धा चिरायुर्भवति ध्रुवम्॥

(योगिनीतंत्रम्)

जो व्यक्ति महामाया कामाख्या देवी की नीलाचल पर्वत तक जाकर पूजा करता है, वह इहलोक पर सर्वकामना का फल प्राप्त करता है, और परलोक पर शिवत्व प्राप्त करता है।

(4/34)

कामाख्यायाश्च माहात्म्यं सर्ववेदार्थसम्मतम्।
ब्रह्मत्वं ब्रह्मणा प्राप्तं विष्णुत्वञ्च मया पुनः॥
शिवतञ्च शिवेनैव कामाख्यायाः प्रसादतः।
तस्माद्योनिं पूजयस्व यत्नात् सर्वात्मभिस्त्वमूम्।
यदा ते सुमुखी माता तदा ते सर्वसम्पदः॥
यदा ते विमुखी माता तदा ते ह्यशुभं ध्रुवम्।
एति ज्ञात्वा पूजयस्व विशेषेण वदामि किम्॥

(योगिनीतंत्रम्)

भगवती कामाख्या का माहात्म्य सभी वेदों में वर्णित है। भगवती कामाख्या के प्रसाद से ही ब्रह्मा ने ब्रह्मत्व, विष्णु ने बिष्णुत्व तथा शिव ने शिवत्व की प्राप्ति की थी। अतः श्रद्धा एवं भक्तिपुर्वक योनिस्वरूपा कामाख्या का पूजन करना चाहिये। माता कामाख्या जिसके ऊपर प्रसन्न हो जाती है, उसकी सर्वकामना पूर्ण करती है, तथा जिसके ऊपर नाराज हो जाती है, उसका सम्पूर्ण नाश निश्चित है। यह जानकर प्रीतिपुर्वक भगवती कामाख्या की उपासना करनी चाहिए।

- चतुर्थ अध्याय समाप्त -

पंचम अध्याय

नीलाचल पर्वत पर विराजमान दशमहाविद्या, शिव, अन्यान्य देवतागण और कुंड का माहात्म्य

दशमहाविद्या एवं अन्यान्य अंगदेवताओं की उत्पत्ति कथा-

(5/1)

अन्या या मूर्त्तया प्रोक्ता:शैलापुत्रा दयापरा:।
तस्य एव विभागस्तास्तच्छरीर विनिर्गता:॥
नि:सरंति यथानित्यं सूर्यविम्वान् मरीचय।
देव्यास्तथोग्रचंडाद्या महामाया शरीरत:॥
(कालिकापुराणम्)

अन्यान्य जो शैलपुत्रादि नाम के देवताओं उक्त हैं, वे सभी देवी कामख्या के ही अंश हैं ओर महामाया कामाख्या के शरीर से ही उत्पन्न हुए हैं। जिस प्रकार एक ही सूर्य से अनगिनत किरणशक्ति उत्पन्न होती है, ठीक उसी प्रकार देवी कामाख्या से चंडादि देवतागण उत्पन्न हुए हैं।

(5/2)

पूर्वोक्ता: शैलपुत्राद्या: स्थिता देव्या: समंतत:।
तासान्तु पीठनामानि श्रृणुचैकत्र भैरव॥
गुप्तकामा च श्रीकामा तथा च विंध्यवासिनी।
कोटेश्वरी वनस्था च पाददूर्गा तथापरा॥
दीर्घेश्वरी क्रमादेव प्रकटा भुवनेश्वरी।
स्वयोगिन्य: पीठनाम्ना ख्याता चाष्टौ च देवता॥
तासामेवांगरूपाणि वक्तव्यानि मया तव।
एकैवतु महामाया कार्यार्थं भिन्नतां गता॥
कामाख्या तु महामाया मूलमूर्त्ति: प्रगीयते।
पीठे भिन्नाह्वया सातु महामाया प्रगीयते॥
(कालिकापुराणम्)

शैलपुत्रादि देवी कामाख्या चतुर्दिशा में विराजमान हैं। उनके नाम है- छिन्नमस्ता, बगला, विध्यंवासिनी, घूमावती, दुर्गा, कालिका और भुवनेश्वरी। ये सभी अपनी योगिणीगणों के साथ अष्ट पीठदेवता के नाम से विख्यात हैं। भलेही ये देवीगण विशेष विशेष कार्यों के लिए भिन्न नामों से विख्यात हैं, देवी कामाख्या ही उनका मूल आधार हैं, सिर्फ पीठों के भेद के चलते उनके नाम विभिन्न है।

नीलाचल पर्वत पर विराजित दशमहाविद्या-

देवी काली की कथा-

(5/3)

काम कामाख्यायोर्मध्ये कालरात्रिर्व्यवस्थिता।

पीठे दीर्घेश्वरी नाम्ना सीमाभागे प्रचंडिका॥

(कालिकापुराणम्)

देवी कामाख्या और कामेश्वर के मध्यभाग में कालरात्रि देवी कालिका के पीठ अवस्थित है। देवी कालिका के सीमाभाग में प्रचंडिका अर्थात देवी छिन्नमस्ता विद्यमान हैं।

(5/4)

पश्चिमे कामनाथस्य सप्तधन्वन्तरे स्थिता।

रुक्षरक्ता च या योनि दीर्घेशी नाम साश्रिता॥

दृष्ट्य दीर्घेश्वरीं देवीं सर्वकामफलप्रदाम्।

षष्टिवर्षसहस्राणि देववद्देवि मोदते॥

(योगिनीतंत्रम्)

कामेश्वर के सात धेनु पश्चीम में उचि-नीचि लाल रंग की जो योनी है, उनका नाम ही दीर्घेश्वी है, उनका दर्शन करने पर सारी कामनाओं का सिद्ध करके षाठ हजार वर्ष तक व्यक्ति देवता बनकर स्वर्गलोक में निवास करता है।

(5/5)

मायावीजेन देवेशीमष्टम्यां प्रतिपूजयेत्।

सर्वविद्यामवाप्नोति कवीनामग्रणीर्भवेत्॥

(योगिनीतंत्रम्)

जो व्यक्ति मायाबीज द्वारा प्रति अष्टमी तिथि में देवी कालिका की पूजा करता है वह सर्वविद्या प्राप्त करके कविश्रेष्ठ बनता है।

काली प्रणाम मंत्र-

(5/6)

नमो दीर्धेश्वरीं देवीं सर्वकाम-फलप्रदाम्।
दीर्घाकार कुंडयुक्तां सिद्धिं यच्छ सुरेश्वरि॥

देवी तारा की कथा-

(5/7)

ब्रह्ममुखाश्रयं पीठमुग्रताराधिदैवतम्।
तत्पीठं द्विविध प्रोक्तं गुप्तं व्यक्तं महेश्वरि।

(योगिनीतंत्रम्)

उग्रतारा अधिदेवताओं के साथ ब्रह्ममुखाश्रय पीठ पर विद्यमान हैं। ये पीठ दो प्रकार के हैं, गुप्त और व्यक्त।

देवी तारा का प्रणाम मंत्र-

(5/8)

प्रत्यालीढ़पदे घोरे मुंडमालोपशोभिते।
खर्वे लम्वोदरी भीमे उग्रतारा नमोऽस्तुते॥

देवी भुवनेश्वरी की कथा-

(5/9)

महागौरी तु या देवी योगिनी सिद्धरूपिणी।
सा ब्रह्मपर्वते चास्ते शिलारूपेण चोद्धर्वतः।
अतीवरूपसम्पन्ना नाम्ना सा भूवनेश्वरी॥

(कालिकापुराणम्)

महागौरी जो देवी, वही सिद्धिरूरिणी योगिनी ब्रह्मा पर्वत पर विद्यमान है। वे अतीव रूपसंपन्ना हैं और उनका ही नाम देवी भुवनेश्वरी हैं।

(5/10)

मनोभवगुहावह्नौ देवीशिखरमुन्नतम्।
तन्महोग्रमिति ख्यातं पीठं परमदुर्लभम्॥
सिद्धिकाली ब्रह्मरूपा देवता भुवनेश्वरी।

निवसेत्तत्र या काली घोरदैत्यविनाशिनी॥
(योगिनीतंत्रम्)

मनोभव गुफा के अनलपर देवी का शिखर समुन्नत है, वह पीठ मनोग्र नाम से ख्यात है और परमदुर्लभ है। उस पीठ पर घोरदैत्य विनाशिनी ब्रह्मरूपा सिद्धि काली देवी भुवनेश्वरी निवास करती हैं।

देवी भुवनेश्वरी का प्रणाम मंत्र-

(5/11)

भुवनेशीं महामायां सूर्यमंडलरूपिणीम्।
नमामि वरदां शुद्धां कामाख्यारूपिनीं शिवाम्॥

देवी भैरवी की कथा-

(5/12)

ऐंकारवीजमारूढ़ा व्योम् विभ्रमशालिनीम्।
नित्यां वंदे परां देवीं नित्यानित्यफलप्रदाम्॥
(कालिकापुराणम्)

भैरवी देवी की पूजा करने से लोग महावैभवशाली होते हैं, इसलिए देवी की यथोपचार पूजा करनी चाहिये।

देवी भैरवी का प्रणाम मंत्र-

(5/13)

महापद्मवनांतःस्थे परमानंदविग्रहे।
शब्दब्रह्ममये स्वच्छे वंदे त्रिपुराभैरवीम्॥

देवी छिन्नमस्ता की कथा-

(5/14)

तस्यासन्ने शैलपुत्री गुप्तकामह्वया तथा।
गुप्तकुंडस्य मध्यस्था कामेशग्रावाणी संगता॥
कामेश्वरशिलासक्ता कामाख्यासंज्ञिता सदा।
पूर्वभागेन संसक्ता योनेस्तु परामार्गतः॥
(कालिकापुराणम्)

कामेश्वर के पास शैलपुत्री नाम से गुप्तकामाख्या गुप्तकुंड के बीच कामेश्वर शिला पर अवस्थित हैं और यहाँ कामेश्वर के निकट देवी कामाख्या

की अवयव विभूत शिला सदा संयुक्त है और इसका नीचे का भाग योनिमंडल में संसक्त हैं।

(5/15)

कामेश्वरस्य दक्षे तु गुप्तदूर्गा व्यवस्थिता।
वाग्भवेन तु सा पूज्या गुप्तपापक्षयो भवेत्॥
(योगिनीतंत्रम्)

कामेश्वर के दक्षिण भाग में गुप्तदुर्गा अवस्थित हैं, उन्हे वाकभव बीज द्वारा पूजा करने से गुप्त पाप का नाश हेता है।

देवी छिन्नमस्ता की प्रमाण मंत्र-

(5/16)

गुप्तदूर्गे महाभागे गुप्तपापप्रणाशिनि।
सप्तजन्मार्ज्जितात् पापात् त्राहि मां शरणागतम्॥
- अन्यत्र -

(5/17)

नमस्ते गुप्तकामाख्ये तुभ्यं तैलोक्यपूजिते।
प्रयच्छ विविधां सिद्धिं नित्यं देवि शिवप्रिये॥

देवी घूमावती की कथा-

(5/18)

कम्बलस्य तु नैर्ऋत्ये देवी कोटरसंगता।
धनुष्यंतरे भद्रे यजेत् कोटेश्वरीं पराम्॥
सर्वपापविनिर्म्मुक्तो रुद्रलोके महीयते।
दृष्ट्वाच न स्पृशेद्देवीं पुत्रार्थी न कदाचन॥
(योगिनीतंत्रम्)

कामेश्वर के नैऋत कोण में आठ धेनु दूरी पर गर्तसंयुक्त स्थान पर कोटेश्वरी (घूमावती) देवी विद्यमान हैं। उनको दर्शन करने पर मनुष्य सारे पापों से मुक्त होता है। पर उनका स्पर्श करना वर्जित है, विशेष कर पुत्रार्थी व्यक्ति पीठ स्पर्श करना अनुचित है।

(5/19)

कामाख्या प्रस्तर प्रांते कुष्मांडी नाम योगिनी।

पीठे कोटेश्वरी नाम्ना योनिरूपेन संस्थिता॥
(कालिकापुराणम्)

कामाख्या प्रस्तर के दक्षिण प्रांत में कुष्मांड नाम की योगिणी स्थित हैं, उसी स्थान को कोटेश्वरी (घुमावती) पीठ कहा जाता है।

देवी घूमावती की प्रणाम मंत्र-

(5/20)

देवीं कोटेश्वरीं शुद्धां पापघ्नीं कामरूपिणीम्।
नमामि मुक्तिकामाय देहि मुक्तिं हरप्रिये॥

देवी वगलामुखी की कथा-

(5/21)

श्रीकामाख्या योनिरूपा चंडीका सा तु योगिनी।
आग्नेयां विद्धि तां स्वस्थाय सर्वकामप्रदां शुभाम्॥
(कालिकापुराणम्)

देवी कामाश्ख्या के अग्निकोण में सर्वकामप्रदायकारिणी चंडिका नाम से योगिनी श्रीकामाख्या (बगलामुखी) नाम से योनिरूपा होकर विराजमान हैं।

(5/22)

सिद्धेश्वरस्य पूर्वे तु धनुर्द्वाविंशतांतरे।
त्रिखंडरक्तपाषाणं मध्ये शुभ्रमलिंगकम्॥
श्रीकामाख्या च सा ज्ञेया श्रीमंतेनार्च्चदेद्बुधः।
हविष्यान्नै मेदकैश्च पूजयेत् परमेश्वरीम्।
महतीं श्रीयमाप्नोति धनार्थी धनमाप्नुयात्॥
(योगिनीतंत्रम्)

सिद्धेश्वर की पूर्वदिशा में बाईस धेनु की दुरी पर मध्यभाग में शुभ्र एवं लिंगशून्य त्रिखंड रक्तपाषाण के रूप में श्रीकामाख्या (वगलामुखी) विराजमान हैं। मंत्र के अंत में उन्हें श्रीयोग कर हविसान्न एवं मोदक के साथ पूजा करनी चाहिये। श्रीकामाख्या (बगलामुखी) की पूजा करने पर व्यक्ति महाधनवान होता है।

देवी बगलामुखी का प्रणाम मंत्र-

(5/23)

प्रपद्ये शरणं देवीं श्रीकामाख्यां सुरेश्वरीम्।
शिवस्य दयितां शुद्धां कामाख्यां कामरूपिणीम्॥

देवी लक्ष्मी-सरस्वती की कथा-

(5/24)

लक्ष्मी सरस्वती देव्यौ देव्याः संगे व्यवस्थिते।
ललिताख्या भवर्लक्ष्मीः मातंगी च सरस्वती॥

(कालिकापुराणम्)

लक्ष्मी और सरस्वती दोनों देवी कामाख्या के साथ विराजमान हैं, ललिता नाम से लक्ष्मी और मातंगी नाम से सरस्वती।

देवी लक्ष्मी-सरस्वती का प्रणाम मंत्र-

(5/25)

सदाचार प्रिये देवी शुक्लपुष्पाम्बरप्रिये।
गोमयादिशुचिप्रीते महालक्ष्मी नमोऽस्तुते॥
सरस्वत्यै नमो नित्यं भद्रकाल्यै नमो नमः।
वेदवेदांतवेदांग विद्यास्थाने एव च॥

देवी लक्ष्मी-सरस्वती का स्पर्श मंत्र-

(5/26)

मध्ये च कुब्जिके देवी प्रांते प्रांते च भैरवी।
एकैक स्पर्शनात् देव्याः कोटि जन्माघनाशनम्॥

नीलाचल पर्वत पर विराजित शिव और भैरवगण-

पंचमुर्ति शिव की कथा-

(5/27)

अहं पञ्चमुखेनाशु पञ्चभागे व्यवस्थितः।
ईशानः पूर्वभागस्थः कामेश्वर्याः प्रधानतः॥
ऐशाण्यां वै तत्पुरुषो ह्यघोरस्तत्र सन्निधौ।
सद्योजातंतु वायव्यां वामदेवस्तु संगतः॥

(कालिकापुराणम्)

परमेश्वर महादेव देवी कामाख्या की पंचदिशाओं में विराज हैं। पूर्वभाग में कामेश्वरी के मूल स्थान में ईशान (सिद्धेश्वर) नाम से, ईसाण में तप्तुरूप (कोटिलिंग) नाम से, नील पर्वत के पास आघोर (भैरव) नाम से, वायुकोण में सद्यजात (आम्रातकेश्वर) नाम से और कामाख्या शिला के साथ वामदेव (कामेश्वर) नाम से।

त्रिखंडा भैरवी वेताल या आघोर की कथा-

(5/28)

यच्चाघोराह्वयं शीर्षं कामेश्वर्यास्तु दक्षिणे।
पीठे भैरवनाम्ना तु गीयते परमार्थिभि॥
त्र्यंशश्च दृश्यते तत्र उत्तरांगं हरं श्रुतम्।
पश्चिमांगं हेरुकंच विष्णुरूपिणमव्ययम्।
भैरवी दक्षिणांशश्च त्रिपुरेत्यभिधीयते॥

(कालिकापुराणम्)

देवी कामाख्या के दक्षिण भाग में एक अघोर नामक शिवलिंग है, इस स्थान को भैरव पीठ कहा जाता है। इस स्थान पर तीन अंश की शिला देखी जाती है। इसका उत्तरांग हर, पश्चिमांग हेरूक एवं दक्षिणांग त्रिपुराभैरव हैं। त्रिखंडा भैरवी वेताल अथवा अघोर प्रणाम मंत्र-

(5/29)

देव दानव यक्षेशं हेरुकं शिवरूपिणम्।
नमामि पूजितं शांतं मम सिद्धार्थहेतवे॥

कामेश्वर शिव की कथा-

(5/30)

वामदेवाह्वयं शीर्षं श्रीकामेश्वर संज्ञकम्।
कामकुंडं महापुण्यं तस्यासन्ने व्यवस्थितम्॥

(कालिकापुराणम्)

वामदेव नाम से जो शिव हैं, उनका नाम ही श्रीकामेश्वर हैं, इस स्थान के पास महापुण्यतम कामकुंड विराजमान है।

(5/31)

त्रिशद्धन्वन्तरे देव्याः स्थानात् पूर्वे स्थितं तथा।
पश्येत् कामेश्वरं देवि भूमिपीठे व्यवस्थितम्॥
तस्योत्तरे कामसर स्तावद्धनुप्रमाणतः।
कामकुंडे नरः स्नात्वा मां यजेत् काममीश्वरम्।
न तस्य पुनरावृत्तिः कल्पकोटिशतैरपि।
चैत्र मासि त्रयोदश्यां शुक्लायां काममीश्वरम्।

ये पश्यंति सुरश्रेष्ठं ते यांति परमं पदम्॥

(योगिनीतंत्रम्)

देवी माँ कामाख्या की पूर्वदिशा में तीस धेनु दुरी पर कामेश्व स्थित है। कामेश्व की उत्तरी दिशा में कामकुंड अवस्थित है।

कामेश्व शिव का प्रणाम मंत्र-

(5/32)

ईस्वरस्त्वां नमस्तेऽस्तु पार्वतीप्रीतिवर्द्धन।

कामेश्वर नमस्तेऽस्तु कामना-शेषदायक॥

सिद्धेश्वर शिव की कथा-

(5/33)

ईशानाख्यः शिवो यत्र तं सिद्धेश्वर संज्ञकम्।

शिलारूपं सिद्धकुंडं मध्यस्थं विद्धि भैरव॥

(कालिकापुराणम्)

ईशान नाम के शिव ही सिद्धेश्वर हैं और उस स्थान के मध्यस्थल में शिलारूपी सिद्धकुंड स्थित है।

(5/34)

कामेश्वरस्य पूर्वे तु नवधन्वन्तरे स्थितः।

देवः सिद्धेश्वरो नाम सर्वदेव नमस्कृतः॥

तत्राराध्य महादेवं भगवन्तं हरं प्रभुम्।

रुद्रलोकमवाप्नोति समुद्धृत्य कुलं शतम्॥

(योगिनीतंत्रम्)

कामेश्वर की पूर्व दिशा में नौ धेनु दुरी पर सर्वदेवनमस्कृत सिद्धेश्वर शिव विराजमान हैं।

सिद्धेश्वर शिव का प्रमाण मंत्र-

(5/35)

सिद्धेश्वर नमस्तेऽस्तु सर्वसिद्धि प्रदायक।

तवाहं शरणं यातः सिद्धेश्वर नमोऽस्तुते॥

कोटिलिंग शिव की कथा-

(5/36)

योऽसौ शरभमूर्त्तिर्म्मे मध्यखंडः प्रचंडकः।

महाभैरवनामाभूत् कोटिलिंगाह्वयस्तु सः॥

(कालिकापुराणम्)

महादेव की खण्ड प्रचण्ड शरभ मुर्ति रूप ही महाभैरव कोटिलिंग हैं।

(5/37)

शतधन्वन्तरे मनेऽद्रिप्रदेशे मनोहर।
कोटस्यांतर्गतं लिंगं कोटिलिंगं प्रकीर्त्तितम्॥

(कालिकापुराणम्)

देवी कामाख्या के सौ धेनु दुरी पर नीलाचल पर्वत के एक मनोरम स्थान की गुफा में कोटिलिंग विराजमान हैं।

(5/38)

धर्म्मारण्यं ततो गत्वा स्नात्वा रामह्रदे प्रिये।
कोटिलिंगं ततो वीक्षेत् प्राप्नुयादैश्वरं पदम्॥
कामेश्वरस्योत्तरे द्वे धनुरष्यंतरे प्रिये।
कोटिलिंगं समभ्यर्च्य राजसूयफलं लभेत्।
श्राद्धी रामह्रदे प्रिये ब्रह्मलोके नयात् पितृन्॥

(योगिनीतंत्रम्)

कोटिलिंग के समीप रामह्रद, उस ह्रद में स्नान कर के कोटिलिंग दर्शन करना चाहिए। कामेश्वर के आठ धेनु दुरियों पर कोटिलिंग अवस्थित है। कोटिलिंग शिव का प्रणाम मंत्र-

(5/39)

प्राणदंडाय नित्याय नमस्ते लोहिताय च।
नमः सहस्रशीर्षाय कोटिलिंग नमोऽस्तुते॥
नमो भगवते नित्यं गिरिवृक्षप्रियाय च।
नमो यज्ञाधिपतये कोटिलिंग नमोऽस्तुते॥

केदारेश्वर शिव की कथा-

(5/40)

केदारसंज्ञकं क्षेत्रं मध्यस्थं सिद्धकामयोः।
दीर्घं चतुर्द्दशव्यामं छायाच्छत्राह्वयं तु तत्॥
यः करोति वृषोत्सर्गं तस्मिन् क्षेत्रे वरानने।

अग्निष्टोमशतं पुण्यं लभते नात्र संशय॥

(कालिकापुराणम्)

कामेश्वर और सिद्धेश्वर के मध्यभाग में केदारक्षेत्र है, इस स्थान का दीर्घ चतुर्दश बाहु है और इस स्थान को छायाछत्र नाम से भी जाना जाता है।

वेताल की कथा-

(5/41)

तस्य दक्षिणपार्श्वे तु या शिला पंगुसंगता।
वेतालं तं महादेवं वामे विष्णुत्रिकर्णकम्।
पुष्पाञ्जलीं गृहीत्वा च पठेन्मंत्रमनन्यधीः॥

(योगिनीतंत्रम्)

कोटिलिंग की दक्षिण दिशा में एकसाथ गोलाकार जो शिला है, उसी शिला पर ही वेताल महादेव विद्यमान हैं। वेताल महादेव की वामदिशा में त्रिकर्णक विष्णु विराजमान हैं।

वेताल प्रणाम मंत्र-

(5/42)

धर्म्मकाममोक्षाय क्रूवाय क्रथनाय च।
सांख्याय सांख्ययोगाय वेतालाय नमोनमः॥
कृष्णाजिनोत्तरीयाय पीतवस्त्रधराय च।
त्वमेव विश्वेश विष्णुरूप नमोऽस्तुते॥

नीलाचल पर्वत पर विराजमान अन्य देव-देवियों एवं पुण्यस्थान समूह-

देवी वनदुर्गा की कथा-

(5/43)

ततो विंध्याचलं गत्वा कृष्णा रक्ता च या शिला।
विंध्येशी सा कामाख्याता पूजयेत् कामनाशिनीम्॥
गवायुतप्रदानेन यत्फलं चात्र पर्वते।
तत्फलं लभते चाग्र्यं विंध्येशी दर्शने शिवे॥

(योगिनीतंत्रम्)

नीलाचल पर्वत के बिन्ध्याचल क्षेत्र में कृष्णरक्त वर्ण की जो शिला विद्यमान है उसे विंध्येशी (वनदुर्गा) कहते है।

देवी जयदुर्गा की कथा-

(5/44)

तस्य दक्षिणदिग्भागे या शिला रक्तसन्निभा।
मध्ये तु त्र्यांगुला याम्ये या योनिस्तोयसंप्लुता॥
सा सिद्धेशी समाख्याता सर्वपापहरा परा।
तस्याः पूजनमात्रेण सर्वसिद्धिमवाप्नुयात्॥

(योगिनीतंत्रम्)

देवी कामाख्या की दक्षिण दिशा एवं विंध्येशी (वनदुर्गा) की पूर्व दिशा में अवस्थित रक्त सन्निभा शिला में जो योनि है उसीके परिमाप का मध्यभाग तीन उंगली का एवं दक्षिणामुखी। जल से परिपूर्ण वह योनि सिद्धेशी (जयदुर्गा) नाम से विख्यात है। उनकी पूजा करने पर सर्वसिद्धि प्राप्त होती है।

(5/45)

योगिनी चंडघण्टा च पीठेऽभूद्विंध्यवासिनी।
आग्नेयां विद्धि तां संस्थां सर्वकामप्रदां शुभाम्॥

(कालिकापुराणम्)

कामाख्या के अग्निकोण की दिशा में चंडघंटा नाम से सर्वकाम प्रदायिनी योगिनी विन्ध्यवासिनी (जयदुर्गा) नाम से स्थित हैं।

देवी जयदुर्गा की प्रणाम मंत्र-

(5/46)

नमस्ते सर्वतोभद्रे मधुकैटवघातिनि।
दुःखार्त्तं मां परित्राहि त्वां हि दानवघातिनि॥

देवी ललिता कांता की कथा-

(5/47)

तस्याः पूर्वेत्तरे देशे इषुपेक्षशताधिके।
आकाशगंगाचिह्ने तु या शिला सुरदीर्घिका॥
दक्षिणेन च तस्याग्रं किंचिदुच्च च संस्थिता।
या ख्याता ललिताकांता ब्रह्महत्यापहारिणी॥
अश्वत्थं नंदिरूपंच मूले कूर्म्माकृतिः शिला।
दृष्ट्वा नरश्च तं देवं न पतत्येव पातके।

(योगिनीतंत्रम्)

बिन्ध्याचल के पुर्वोत्तर दिशा पर शतधेनु दुरि पर आकाशगंगा चिह्नित जो सुरदीर्घीका शिला विद्यमान है उसी शिला के दक्षिणीभाग पर सामान्य ऊंचाई पर ललिताकांता स्थित हैं। उस स्थान पर नन्दिरूपधारी अश्वष्ठ वृक्ष है।

(5/48)

तत्र योगिनीगतं लिंगं चतुर्हस्तप्रमाणतः।
तथा प्रदीपिकाकारं कुंडं सर्वघनाशनम्॥
तत्र व्यासेश्वरं देवं दृष्ट्वा हरति पातकम्।
व्यासतीर्थे नरः स्नात्वा ललितां योऽभिपूजयेत्।
अश्वमेधसहस्रस्य तत् फलं लभते महत्॥

(योगिनीतंत्रम्)

ललिताकांता पर चार हाथ का परिमाण एक योनिगत लिंग है। दीपक आकार के सर्वपाप विनाशकारी कुंड एवं व्यासेश्व नाम की शिवलिंग है।

ब्रह्मयोनि की कथा-

(5/49)

तस्याग्रतो ब्रह्मयोनिं संविशेन्मंत्रमुच्चरन्।
ब्रह्मयोनिं विशेद्यस्तु पुनर्नयोनिमाविशेत्॥
निःसृतो ब्रह्मयोन्यांतु गणेशं द्वारि पूजयेत्।
शिलोच्चयं महाकायं मंत्रेणानेन साधकः॥

(योगिनीतंत्रम्)

मंत्रपाठ करके ही ब्रह्मयोनि में प्रवेश करना चाहिये। ब्रह्मयोनि में प्रवेश करने से पुनः योनिगमन करने की आवश्यकता नही पड़ती। ब्रह्मयोनि में प्रवेश से पहले ब्रह्मयोनिद्वार में अवस्थित गणेश की पूजा करनी चाहिए।

ब्रह्मयोनि प्रमाण मंत्र-

(5/50)

नमो लम्वोदरश्रेष्ठ देवनामिष्टदायक।
साक्षीनस्त्वं प्रभो देव न मे स्याद् योनिसंकटम्॥

प्रेतशिला की कथा-

(5/51)

तस्योत्तरे त्रीषुक्षेपद्वयस्यैवांतरे प्रिये।
तीर्थं प्रेतशिलाख्यांञ्च श्राद्धी स्वर्गं नयेत्पितृन्॥

(योगिनीतंत्रम्)

गयाक्षेत्र की उत्तरी दिशा में प्रेतशिला स्थित है। इस स्थान पर श्राद्ध करने पर पितृ पुर्वपुरुषगण स्वर्गगामी होते हैं।

कामधेनु की कथा-

(5/52)

तस्यासन्ने सुरभिः शिलारूपेण संस्थिता।
कामधेनुरिति ख्याता पीठे कामप्रदायिनी।
(कालिकापुराणम्)

कामधेनु के समीप जाने पर ही सर्वकामना पूर्ण होती है। कामधेनु की पूजा करके उसी स्थान पर ब्रह्मभोजन करवाना चाहिये।

कामधेनु का प्रणाम मंत्र-

(5/53)

सौरभेयि नमस्तेऽस्तु कामाग्रे कामचारिणि।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु॥

मुक्तिमंडप की कथा-

(5/54)

हनुमतश्चोत्तरे तु एकविंशधनुर्म्मतम्।
मुक्तिमंडपकं नाम स्थानं परमदुर्लभम्।
संहितां प्रजपेत् तत्र परांगतिमवाप्नुयात्॥
(योगिनीतंत्रम्)

हनुमान से इक्कीस धेनु दुरि पर उत्तरी दिशा में मुक्तिमंडप नाम से परमदुर्लभ स्थान विराजमान है। इस स्थान पर संहिता जप करने पर परमगति प्राप्त होती है।

मुक्तिमंडप प्रणाम मंत्र-

(5/55)

नमस्ते सर्वदेवेशि भक्तानां भयहारिणि।
संसारसागरे मग्नं त्राहि मां परमेश्वरी॥

- अन्यत्र -

(5/56)

नमः प्रकाशकाराय रवये विष्णुरूपिणे।
नमस्ते ग्रहरूपाय रक्तवर्णाय ते नमः॥

जगत्प्रकाशकाराय विधवे विष्णुरूपिणे।
नमस्ते ग्रहरूपाय शुक्लवर्णाय ते नमः ॥

अंतगृह की कथा-

(5/57)

सिद्धेश्वरं कोटिलिंगं हेरुकं मुक्तिमंडपम्।
ज्ञेयं वाराणसीक्षेत्रं देव्याह्यंतर्गृहं स्मृतम्॥
अंतर्गृहे मृता ये च यान्ति ब्रह्म सनातनम्।
अद्यापि दृश्यते जंतुर्द्दक्षिणश्रवणं प्रिये॥
पतते नात्र संदेहो ज्ञानदाता सदाशिवः।
तस्मात् दक्षिणकर्णेन भूमौ पतित वै शिरः॥

(योगिनीतंत्रम्)

सिद्धेश्वर, कोटिलिंग, हेरूक और मुक्तिमंडप का मध्यवर्ती स्थान देवी कामाख्या का अंतगृह है। यह स्थान वाराणसीतुल्य है।

नीलाचल पर्वत पर स्थित कुंड-

ऋणमोचन कुंड की कथा-

(5/58)

कामेश्वर्याश्चोत्तरतः किञ्चिवायव्यगोचरे।
ऋणमोचनकं नाम कुंडं पुण्यफलप्रदाम्॥
पितृदेव मनुष्याणां मातृणांच ऋणाणि तु।
शोधितानि भवंत्यत्र तज्जलेनाभिषेचनात्॥
सर्वस्याभिमुखो भूत्वा देवं ध्यात्वा पिनाकिनम्।
शर्व लोकगणाध्यक्ष शोधितोऽस्मीति भावयेत्॥

(योगिनीतंत्रम्)

देवी कामाख्या से उत्तरी दिशा में अल्प वायुकोण में पुण्यफलप्रद ऋणमोचन कुंड स्थित है। इस कुंड में स्नान करने पर पितृऋण, मातृऋण, देवऋण एवं मनुष्यऋण से मुक्ति प्राप्त होती है।

ऋणमोचन कुंड प्रणाम मंत्र-

(5/59)

कुंडानां प्रवर श्रेष्ठ सर्वकामफलप्रद।

ऋणमोचनकुंडाय नमस्ते पापनाशिने॥

ऋणमोचन कुंड में स्नानपूर्वक संकल्प मंत्र-

(5/60)

तत्सदित्यादि पितृदेवमनुष्यमातृऋण शोधनकामः ऋणमोचनकुंडे स्नानमित्यादि।

ऋणमोचन कुंड में स्नान मंत्र-

(5/61)

ऋणग्रस्ता नराः सर्वे त्रिभिः कर्म्म निबंधनात्।
ऋणत्रयाम्नां पाह्यशु ऋणमोचनाय ते नमः॥

अमृतकुंड की कथा-

(5/62)

तस्योत्तरे पार्श्वदेश इषुक्षेपांतरे स्थितः।
कुंडामृताह्रदो नाम सर्वलोकासुखावहः।
स्नात्वा मंत्रेण संतर्प्य देवपितृयनामपि॥

(योगिनीतंत्रम्)

ऋणमोचन कुंड के उत्तरी दिशा में सर्वसुखावह अमृतकुंड स्थित है। इस कुंड में मंत्र द्वारा स्नान करके देव, पितृ और यमादि को तर्पण करना चाहिए।

(5/63)

तत्रैवामृतकुंडंतु सुधासंघप्रपूरिताम्।
मम प्रियार्थमिंद्रेण स्थापितं सह निर्झरैः॥

(कालिकापुराणम्)

देवी कामाख्या के लिए इन्द्र ने अन्य देवतागणों के साथ मिलकर इस स्थान पर अमृत द्वारा परिपूर्ण अमृतकुंड का स्थापना की थी।

अमृतकुंड में स्नानपूर्वक संकल्प मंत्र-

(5/64)

तत्सदित्यादि चतुर्दिक्षु फलप्राप्तिपूर्वक देवी गोहाधि करणकामोदकामोऽमृतकुंडे स्नानमित्यादि।

अमृतकुंड में स्नान का मंत्र-

(5/65)

अमृताख्य महाकुंड सिद्धदेवाभिवंदित।

अमृतवास सर्वस्मान्मां पुनीह्याशु पापतः ॥

गयाकुंड अथवा गयाक्षेत्र की कथा-

(5/66)

तस्यासन्नं गयाक्षेत्रं क्षेत्रं वाराणसी तथा।
योनिमंडलसंकाशं कुंडं भूत्वा व्यवस्थितम् ॥
तत्रैवामृतकुंडंतु सुधासंघप्रपुरितम्।
मम प्रियार्थमिंद्रेण स्थापितं सह निर्झरैः ॥

(कालिकापुराणम्)

सिद्धेश्वर के समीप गयाक्षेत्र और वाराणसीक्षेत्र कुंड के रूप में में स्थित है।

(5/67)

तस्य देवस्योत्तरतो नातिदूरे व्यवस्थितः ।
खर्वश्वेता कृष्णवक्त्रा या शिला गोधिकाकृतिः ॥
पश्चिमे तु शिरस्तस्याः पूर्वे पुच्छे प्रकीर्त्तितम्।
गयातीर्थञ्च उदरे उत्तरे परिकीर्त्तितः ॥
चतुर्वाहुप्रमाणेन शीर्षे चैव गयाशिरः ।
शीर्षपार्श्वे रामगया रत्नकुंडंतु दक्षिणे ॥
पुच्छे तु मानसं तीर्थं दक्षिणे तु महानदी।
गयातीर्थे नरः स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥
कुलकोटिसहस्राणि कुलकोटिशतानि च।
उद्धृत्य स नरो याति यत्रास्ति भगवांच्छिवः ॥
गयाशिरे पिंडदानात् गयापुच्छे तथोदरे।
त्रिदिवञ्च पितृन्नीत्वा कुलञ्चैव समुद्धरेत् ॥

(योगिनीतंत्रम्)

सिद्धेश्वर के उत्तर में थोड़ी ही दूरी पर त्रिकोणाकार खर्ब, शुक्लवर्ण एवं कृष्णवर्ण शिला स्थित है। इस त्रिकोणाकार शिला की दक्षिण दिशा सिर, पूर्व दिशा में पुच्छ और उत्तर में गयातीर्थ विद्यमान है और इसके जिस भाग पर चारभुजा परिमाण का मस्तक है वही गयासिर है। इस सिर के एकभाग पर रामगया, दक्षिण में रत्नकुंड और महानदी एवं पुच्छ में मानसतीर्थ स्थित है। गयासिर के गयापुच्छ में पिंडदान करने से वंश का उद्धार होता है और पितृ

पुरुषगण स्वर्गगामी होते हैं।

गयाकुंड या गयाक्षेत्र में स्नानपूर्वक संकल्प मंत्र-

(5/68)

तत्सदित्यादि त्रिदिवेषु पितृनयनपूर्वककुलोद्धारकरणकामो गयाशिरसि गयापुच्छे गयोदरे पिंडदानमित्यादि।

गयाकुंड अथवा गयाक्षेत्र प्रणाम मंत्र-

(5/69)

गयाकुंड नमस्तेऽस्तु पितृणां प्रीतिवर्द्धन।
यतस्तवाहं शरणमनृणोऽहमृणत्रयात्॥

गयाकुंड अथवा गयाक्षेत्र में स्नानपूर्वक स्तुति मंत्र

(5/70)

साक्षिणः संतु मे देवा ब्राह्मणा ऋषयस्तथा।
मया गयां समासाद्य पितृणां निष्कृतिः सदा॥
आगतोऽहं गयां देव पितृकार्यो गदाधर।
त्वमेव साक्षी भगवन्ननृणोऽहमृणत्रयात्॥

देवी कामाख्या की अष्टयोगिनीगण-

(5/71)

गुप्तकामा च श्रीकामा तथा च विंध्यवासिनी।
कोटेश्वरी वनस्था च पाददूर्गा तथापरा॥
दीर्घेश्वरी क्रमादेव प्रकटा भुवनेश्वरी।
स्वयोगिन्यः पीठनाम्ना ख्याता अष्टौ च देवताः॥

(कालिकापुराणम्)

गुप्तकामा, श्रीकामा, विंध्यवासिनी, कोटेश्वरी, वनस्था, पाददुर्गा, दीर्घेश्वरी और भुवनश्वरी- ये सारी देवियां कामाख्या की अष्टयोगिनी हैं और निज निज पीठ पर अपने नाम से विराजमान हैं।

- पंचम अध्याय समाप्त -

षष्ठ अध्याय

कामरूप के अन्यान्य पीठ एवं तीर्थ का माहात्य

हयग्रीव की कथा-

(6/1)

वर्णाशया दक्षिणस्यां लौहित्यो नाम सागर॥
मणिकूटः स्थित पूर्वे हयग्रीवो हरिर्यतः॥
स हयग्रीवरूपेण विष्णुर्हत्वा ज्वरासुरम्।
निहत्य च हयग्रीवं क्रीड़ायै यत्र संस्थितः॥
हत्वा ज्वरं तथा विष्णुस्तत्र वासमथाकरोत्।
नरदेवोसुरादीनां यथा भवति वै हितम्॥
ज्वरेणपीड़ित तनु र्ज्वरं हत्वा महासुरम्।
सर्वलोकहितार्थाय सोऽगदस्थानमाहरत्॥
अगदस्थानसम्भूतं सञ्जातञ्च महासुरम्।
हत्वा स्वयं हयग्रीवो नाम चक्रेऽपुनर्भवम्॥
न पुनर्जायते यस्मात् तत्र स्नात्वा नरोत्तमः।
अपुनर्भवसंज्ञं तत् सरन्तु परिकीर्त्तितम्॥
मणिकूटाचले विष्णुर्हयग्रीवस्वरूपधृक्।
शतव्यामप्रमाणेन विस्तारेणैव शोभितम्॥

(कालिकापुराणम्)

वर्णाशय की दक्षिणी दिशा में लौहित्य (ब्रह्मपुत्र) और इसकी पूर्वी दिशा में मणिकुट पर्वत अवस्थित है। इस मणिकुट पर्वत पर भगवान विष्णु हयग्रीव रूप में विराजमान हैं। हयग्रीवरूपी भगवान विष्णु जरासुर और हयग्रीवासुर का वध करके क्रीड़ा हेतु इस स्थान पर विराजमान हैं। मणिकुट पर्वत की लंबाई एवं चौड़ाई एक सौ बाहु है।

हयग्रीव प्रणाम मंत्र-

(6/2)

हतासुर हयग्रीव मुरारे मधुसुदन।
मणिकूट कृतवास हतासुरऽनमो स्तुते॥

हयग्रीव दर्शन मंत्र–

(6/3)

जन्मकोटि सहस्राणि कल्पकोटि शतानि च।
हयंतु दर्शनमात्रेण न यांस्ये भास्करी क्षयम्॥

कालहम शीव जी कथा–

(6/4)

तस्मात् पूर्वे भद्रकामः पर्वतस्तु त्रिकोनकः।
यत्र कालहयो नाम शिवलिंगं व्यवस्थितम्।
तस्यासन्ने दक्षिणस्यामपुनर्भवकुंडकम्॥
अपुनर्भव सरस्तीरे पर्वते भद्रकामके।
हयविम्वीति विख्याता शिला ब्रह्मस्वरूपिणी॥
तत्रयोगी महादेवो योगज्ञो ध्यानतत्परः।
यं दृष्ट्वा योगभां मर्त्यो मृतो मोक्षमवाप्नुयात्॥
(कालिकापुराणम्)

मणिकुट की पूर्वदिशा में त्रिकोणोकार भद्रकाम पर्वत पर कालहय नाम का शिवलिंग स्थित है। कालहय शिव के निकट दक्षिणी दिशा पर अपूणर्भव कुंड। इस कुंड के किनारे ब्रह्मकुट पर्वत पर हयविम्बी नाम से ब्रह्मस्वरूपिणी शिला अवस्थित है। इस हयविम्बी नाम के ब्रह्मस्वरूपिणी शिला पर परमेश्वर महादेव सर्वदा योगज्ञरूप में ध्यान में रहते हैं।

(6/5)

तस्यामेव शिलायांतु गोकर्णे नाम शंकरः।
गोकर्णे निहतो येन अंधकस्य सखा पूरा॥
गोकर्णस्य तथैशान्यां केदारः शम्भुरुत्तमः।
ततोऽनु कमलः प्रोक्तः कमलाकारभोगधृक्॥
यत्रास्ति शम्भूः केदारः सगिरिर्मदनाह्वयः।
तत्रैव कमलः प्रोक्ताः स महात्मा लयप्रदः॥
स्नात्वा पूणर्भजले दृष्ट्वा गोकर्णयोगिनौ।
केदार–कमलौ दृष्ट्वा मुक्तिर्म्माधवदर्शने॥
(कालिकापुराणम्)

अपूणर्भव कुंड के किनारे ब्रह्मकुट पर्वत पर विद्यमान हयविम्बी नामक ब्रह्मस्वरूपिणी शिला पर गोकर्ण नाम से विख्यात शिव विराजमान हैं। गोकर्ण के ईशान कोण में केदार नामक शिव विराजमान हैं और केदार के पृष्ठभाग में कल्पना नामक लक्ष्मी देवी स्थित है, इस स्थान पर लक्ष्मी के साथ भगवान विष्णु सर्वदा विराजमान हैं। जिस स्थान पर केदार शिव स्थित हैं, उस पर्वत का नाम है मदन पर्वत। अपूणर्भव कुंड में स्नान कर गोकर्ण, केदार, कमला और माधव का दर्शन करना चाहिए।

माधव-केदार की कथा-

(6/6)

दृष्ट्वा तु माधवं देवं ततः कामं विलोकयेत्।
कामं विलोक्य तत्रस्थो निरीक्षेदपुनर्भवम्॥
एवं कृत्वा पीठयात्रामनेन क्रमयोगतः।
सप्तपूर्वान् सप्तपरान् आत्मानं दश पञ्च च।
पितृनुद्धृत्य त्रिदिवं नयेत् स पुरोषोत्तमः॥

(कालिकापुराणम्)

माधव का दर्शन करके कामगिरि (नीलाचल) का अवलोकन करने के बाद अपूणर्भव कुंड में स्नान करके केदार का दर्शन करना चाहिये।

उपूर्नभव कुंड की कथा-

(6/7)

हयग्रीवस्य पूर्वस्यां केदारस्य तु पश्चिमे।
छाया भोगाह्वय स्थानं पुरी भोगवती तथा॥
यो गच्छेन् मणिकूटयख्यां कौतुकाच्चा पुनर्भवम्।
स सर्वतीर्थयात्राणां फलमाप्नोति मानवः।
ज्येष्ठ मासि सिते पक्षे पञ्चदश्याष्टमीषु च।
स्नात्वा पुनर्भवजले यः पश्येद्विधिवद्धरीम्।
स सर्वं कुलमुद्धृत्य विष्णुसायुज्यमाप्नुयात्॥

(कालिकापुराणम्)

हयग्रीव की पूर्व दिशा में एवं केदार के पश्चिम भाग में स्थित स्थान को छायाभोग एवं भोगवतीपुरी कहा जाता है, इसी स्थान पर अपूर्णभव कुंड अवस्थित है।

उपूर्णभव कुंड स्नान मंत्र-

(6/8)

विष्णुस्थानसमुद्भूता पुनर्भव हरीश्वर।
पापं हर स्वर्गहेतो जितसंग महोदधे॥

अश्वक्रांत की कथा-

(6/9)

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि गुह्याद्गुह्यमनुत्तमम्।
सर्वतीर्थेषु विख्यातमश्वक्रांतमतः परम्ः॥
मध्यतश्चैव गोदंतः क्रांतस्तु दक्षिणे तथा।
षण्मुखश्च जयंतश्च अश्वक्रांते जनार्द्दनः॥
अश्वक्रांते परो योगः अश्वक्रांते परागतिः।
अश्वक्रांते परमोक्षतीर्थं नैवास्ति तदृशम्॥
मेरुमंदरतुल्योऽपि राशि पापस्य सर्वशः।
अश्वक्रांतं समासाद्य सर्वो व्रजति संक्षयम्॥

(योगिनीतंत्रम्)

अश्वक्रांत तीर्थ के मध्यभाग में गोदंत, दक्षिण में क्रान्त षड़ानन और जयन्त जनार्दन अवस्थित हैं। अश्वक्रांत तीर्थ में परमगति, परमयोग और परममोक्ष की प्राप्ति होती है।

अश्वक्रांत क्षेत्र में कुर्मरूपी विष्णु की कथा-

(6/10)

जनार्दनो गिरौ विष्णु स्वयं कुर्मस्वरूपधृक्।
शिलां भित्वा स्थितस्तत्र देवगंधर्वसेवितः॥

(योगिनीतंत्रम्)

अश्वक्रांत तीर्थ में स्वयं भगवान विष्णु कुर्म रूप में विराजमान और अनंतशर्या में शायित हैं। इस मंदिर की दीवार पर विष्णु का दशावतार की रजत मूर्ति अंकित है।

अश्वक्रांत कुंड की कथा-

(6/11)

नागलोकदुत्थिश्च कल्किरूपी जनार्दनः।

स्नात्वा तत्रैव विवरे अश्वतीर्थं चकार च॥

(योगिनीतंत्रम्)

भगवान विष्णु नें कल्किरूप में नागलोक से उठकर इस कुंड में स्नान किया इसलिये इस कुंड का नाम अश्वक्रांत कुंड पड़ा।

(6/12)

नृत्यास्ति पितरस्तेषां तुष्टाश्चैव पितामहाः।
लभंते तर्पणातृप्तिं पितुदानात् त्रिपिष्टपं॥

(योगिनीतंत्रम्)

अश्वक्रांत कुंड में स्नान करके ब्रह्मपुत्र तीर पर अवस्थित भगवान विष्णु के पादपद्म में पितृपुरुष के उद्धार हेतु पिंडदान करना चाहिये। इस स्थान पर तर्पण एवं पिंडदान करने पर पितृ-पितृमहगण तुष्ट होकर आनंद में नृत्य करते हैं और दान करने पर स्वर्गगामी होते हैं।

अश्वक्रांत प्रणाम मंत्र-

(6/13)

केशवः क्लेशनाशाय दुःखनाशय माधवः।
श्रीहरिः पापनाशाय मोक्षदाता जनार्दनः॥
जनार्दनाय देवाय मोक्षैक फलदाय च।
मंदराचलसंस्थाय नमस्ते नाभिमूर्त्तये॥
जन्मकोटि सहस्त्रानि कल्पकोटि शतानि च।
जनार्दनदर्शनाच्च पुनर्ज्जन्म न विद्यते॥
जनार्दनञ्च देवेशं कलौ बुद्धस्वरूपिणम्।
तं दृष्ट्वा मुच्यते पापैर्महाघोरे कलौयुगे॥

चित्राचल (नवग्रह) की कथा-

(6/14)

नाभिमंडलपूर्वस्यां भस्मकूटस्य दक्षिणे।
पूर्वस्यां कर्पटो नाम पर्वतो यमरूपधृक्॥
पूर्वस्यां कर्पटख्यंतु शैलाच्चित्र इति स्मृतः।
यः पूर्वभागप्रांतेऽभूद्दिश्याग्नेय्यामवस्थितः॥
पीठंतु ब्रह्मग्रावा तु स प्राक् पर्वत उच्यते।

तस्मिन् वसंति सततं ग्रहा नव यथेच्छया।
तत्र तान् पूजयेद्यस्तु स नाप्नोत्यपदं क्वचित्॥
एवं चित्रशैलवरे पूजयित्वा नवग्रहान्।
अभिष्टाल्लभते कामान्नरः शान्तिं तथोत्तमाम्॥
(कालिकापुराणम्)

नाभितारा (उग्रतारा) की पूर्व दिशा में और उमानंद के दक्षिण में यमरूपधारी कर्पट नामक पर्वत स्थित है। ये पर्वत चित्राचल नाम से भी विख्यात है। चित्राचल के पूर्वभाग के अग्निकोण में ब्रह्मगाव पीठ विद्यमान है और इस ब्रह्मगाव पीठ पर नवग्रह विराजमान हैं।

वशिष्ठ आस्रम की कथा–

(6/15)

निमिनाम्नास्तुराजर्षे शापाद् ब्रह्मसुतः पुरा।
वशिष्ठो ह्याशरीरेऽभुच्छापर्च निमिस्तथा॥
ततो ब्रह्मोपदेशेन निर्जने कामरूपके।
संध्याचले तपस्तेपे विष्णुरभुस्तुदा॥
(कालिकापुराणम्)

ब्रह्मा के उपदेश पर वशिष्ठदेव नें संध्याचल में भगवान विष्णु की तपस्या की। वशिष्ठदेव की तपस्या से संतुष्ट होकर भगवान विष्णु नें उनको वर प्रदान किया।

(6/16)

जग्मतुर्दक्षिणां काष्ठां यत्र संध्याचलः स्थितः।
कांता नाम नदी तत्र वशिष्ठेनावतारिता॥
तस्यास्तीरे महाशैलः स्निग्धच्छायालतातरुः।
संध्यां वशिष्ठः कृत्वा स्तत्र यस्माद्विधेः सुतः॥
ततः संध्याचलं नाम तस्य गायन्ति देवताः।
तत्रासद्या वशिष्ठन्तु साक्षादिव हुताशनम्॥
आराधयंतं गिरिशं ध्यानसंयुक्तमानसम्।
तपःश्रिया दीप्यमानं द्वितीयमिव भास्करम्॥
(कालिकापुराणम्)

कामाख्या की दक्षिण दिशा में संध्याचल पर्वत स्थित है। इसी पर वशिष्ठदेव कांता नदी का आवाहन कर तपस्या करते थे। इस नदी के दोनों पार स्निग्ध छाया और तृण-तरु लता से परिपूर्ण है। इस स्थान पर वशिष्ठदेव संध्या करते थे इसीलिये इसका नाम संध्याचल पड़ा।

बशिष्ठ गंगा मे स्नान मंत्र-

(6/17)

वशिष्ठाय हि कुंडाय त्रिधारासलिलाय च।
अतः पुनातु मत्पापं गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥
सन्ध्याचलसमुद्भूते वशिष्ठेनावतारिते।
कुरुक्षेत्रे मम स्नानं गंगा गर्भं नमोऽस्तुते॥

वशिष्ठ गंगा प्रणाम मंत्र-

(6/18)

नमस्ते तीर्थराजेन्द्र नमस्ते लोकपालिके।
नमस्ते गिरिसम्भूते तीर्थेश्वरी नमोऽस्तुते॥

सत्राकार पहाड़ (देवी मंगलचंदी का स्थान) की कथा-

(6/19)

छत्राकारगिरिर्योऽसौ सागरिः परिपात्रकः।
तस्यारोहेनमात्रेण पुनर्जायते भूविः॥
(योगिनीतंत्रम्)

सत्राकार पहाड़ अति पवित्र है, इस पहाड़ पर आरोहण करने पर पृथ्वी पर पुनर्जन्म नही लेना पड़ता है।

देवी उग्रतारा या नाभितारा की कथा-

(6/20)

ब्रह्मशैलस्य पूर्वस्यां भूमिपीठे व्यवस्थितम्।
चारु निम्नशुभावर्त्तं कामाख्या नाभिमंडलम्॥
तवोग्रताररूपेण रमते परमेश्वरीम्।
तत्रोग्रतारा रूपेण पूजयित्वा शुभात्मिका॥
(कालिकापुराणम्)

ब्रह्मपर्वत (उमानंद) की पूर्व दिशा में भूमिपीठ नामक मनोहर निम्न

शुभावर्ती स्थान में देवी कामाख्या का नाभिमंडल अवस्थित है। इस स्थान में उग्रतारा रूप से परमेश्वरी कामाख्या देवी क्रीड़ा करती रहती हैं। यहां शुभात्मिका कामाख्या की उग्रतारा रूप में पूजा करनी चाहिए।

(6/21)

तामुग्रतारामृषयो वदंतीह मनीषिण: ।
उग्रादपि भयात्त्राति यस्माद्भक्तान् सदाम्बिका॥

(कालिकापुराणम्)

देवी कामाख्या का प्रसिद्ध रूप है उग्रतारा। भक्तों को उग्र भय से रक्षा करने के लिये ही उनका नाम उग्रतारा हुआ।

देवी उग्रतारा का स्तुति मंत्र-

(6/22)

अस्त्रांतेयं महाविद्या जटापुंगवधारिणी।
वेदादिमुखयुक्ता चेत् तारा त्रिभवतारिणी॥
लीलता वाक्प्रदा चेयं तेन नीलसरस्वती।
तारकत्वात् सदा तारा सुखमोक्षप्रदायिनी।
उग्रपत्तारिणी यस्मादुग्रतारा प्रकीर्त्तिता॥

देवी दीर्घेश्वरी की कथा-

(6/23)

दृष्ट्वा दीर्घेश्वरीं देवीं सर्वकामफलप्रदाम्।
षष्टिवर्षसहस्त्राणि देववद्भुवि मोदते॥

(योगिनीतंत्रम्)

कामनाथ (उमानंद) से पश्चिम में सात घेनु दुरी पर सर्वकामफलप्रदा दीर्घेश्वरी देवी स्थित हैं।

- षष्ठ अध्याय समाप्त -

सप्तम अध्याय

ब्रह्मपुत्र आराधना

ब्रह्मपुत्र की उत्पत्ति की कथा-

(7/1)

हरिवर्षे महावर्षे शांतनुर्नाम नामतः।
मुणिरासीन्महाभागो ज्ञानवान् सुतपोधनः॥
तस्य भार्या महाभागा आमोघाख्या महासती।
हिरण्यगर्भस्य मुणे स्तृणाविंद्वास्रमोद्भवा॥
तया सार्द्धं स कैलासमर्यादापर्वते वसन्।
लौहित्याख्यस्य सरसस्तीरे वै गंधमादने।

(कालिकापुराणम्)

पुरातण काल में शांतनु नामक एक ज्ञानवान तपस्वी थे। हिरण्यगर्भ मुनि की कन्या तृणबिंन्दु आश्रमोद्भवा अमोघा नाम की महासती उनकी स्त्री थी। वे दोनों कभी कभी कैलाश पर्वत में, कभी कभी गंधमादन पर्वत पर और कभी कभी लौहित्य नामक सरोवर के किनारे निवास करते थे।

(7/2)

एकदा स तपोनिष्ठो निजपुष्पादिगोचरे।
जगाम वनमध्यंतु चिम्वन् बहुफलानि च॥
तस्मिन्नवसरे ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः।
तत्राजगाम यत्रास्ति अमोघा शांतनोः प्रिया॥

(कालिकापुराणम्)

एक दिन शांतनु मुनि पूजा का फूल तोड़ने के लिये वन गए हुए थे और शांतनु की पत्नी घर पर अकेली थी, उस वक्त सर्वलोकपितामह ब्रह्मा शांतनु मुनि के घर आए।

(7/3)

तां दृष्ट्वा वोदगर्भाभां युवतीमतिसुंदरीम्।
मोहितो मदनेनाशु तदाभूद्दूषितेन्द्रियः॥

उदीरितेन्द्रियो भूत्वा जिघृक्षुस्तां महासतीम्।
तथाऽधावत् ततो सन्मुखो मदनार्द्दितः।
धावमानं विधातारं दृष्ट्वामोघा महासती।
नैवं नैवमिति प्रोक्ता पर्णशालां व्यलीयत॥
(कालिकापुराणम्)

देवादिदेव ब्रह्मा शांतनु मुनि की पत्नी अमोघा का मनमोहिनी रूप देखकर कामभाव में आकर अतिशय व्याकुल होते हुए अमोघा के साथ संगम करने के लिए आलिंगन करने के लिये उसकी ओर बढ़े। अमोघा विधाता की इस तरह की विपरीत भावना देखकर उन्हे बार बार इस कार्य के लिए मना करते हुए कुटीर में प्रवेश किया।

(7/4)

इदञ्चोवाच धातारममोघा कुपिता तदा।
पर्णशालांतरं गत्वा द्वारमावृत्य तत्क्षणात्॥
अकार्यं न मया कार्यं मुणि पत्न्या विगर्हितम्।
वलात् प्रथम्या चाहञ्चेत् त्वया त्वाञ्च शपाम्यहम्॥
अमोघया चैवमुक्ते विधातुश्च तदा नृप।
रेतश्चस्कंद तत्रैव आश्रमे शांतनोमुनेः॥
च्युते रेतसि धातापि हंसयानं समुत्थितः।
लज्जायातिपरीतात्मा द्रुतं वै स्वश्रमं ययौ॥
(कालिकापुराणम्)

अमोघा कुटीर मे प्रवेश करके जल्दी से दरवाजा बन्द कर अति क्रोधभाव से देवादिदेव ब्रह्मा से कहने लगी- मैं मुनिपत्नी हूं, ऐसा गर्हित अन्याय पुर्ण कार्य मै कभी नहीं कर सकती। यदि आप बलपूर्वक मेरे प्रति अन्याय आचरण करने की इच्छा करंगे तो मै श्राप दूंगी।

महासती अमोघा के इस आचरण ने देवादिदेव ब्रहामा के निराश किया और शांतनु मुनि के आश्रम के सामने ही उनका वीर्य स्खलन हुआ। इस तरह से वीर्य स्खलन होने पर देवादिदेव ब्रह्मा अतिशय लज्जित हुए और उनके हंसयान पर आरोहण कर अपने स्थान के लिये रवाना हो गऐ।

(7/5)

गते वेधसि शांतनु र्निजमाश्रममागतः।

आगत्या दृष्ट्वा हंसानां पदक्षोभं तदा भुवि॥
तेजश्च पतितं भूमौ विधातुर्ज्वलनोपमम्।
आमोघां परिपप्रच्छ पर्णशालांतरस्थिताम्॥
किमेतदत्र शुभगे प्रवृत्तं दृश्यते तु यत्।
पक्षिणञ्च पदक्षोभं तेजश्चेदञ्च कीदृशम्॥
(कालिकापुराणम्)

देवादिदेव ब्रह्मा के चले जाने के कुछ क्षण बाद शांतनु मुनि नें आश्रम लौटकर हंस के पदचिन्ह और ब्रह्मा का अनुपम ज्वलंत पतित वीर्य देखकर कुटीर के भीतर मौजुद अमोघा से सारी घटना के बारे में प्रश्न किया।

(7/6)

सा तस्य वचनं श्रुत्वा शांतनुं मुणिसत्तमम्।
अमर्षितेव न्यगदद्‌कुला विकलानना॥
हंसयुक्तस्यन्दनेन कोऽप्यागत्य चतुर्म्मुखः।
कमंडलुकरोऽतीव रति मां समायाचत॥
ततो मया तर्ज्वितः स उटजांतरलीनया।
प्रच्याव्य तेजः संयातो मम शापभयार्द्दितः॥
कुरु तत्र प्रतिकारं यदि शक्नोषि शांतनो।
नहि मे धर्षणां सोढुं कश्चिच्छक्नोति जीवभृत्॥
स तस्या वचनं श्रूत्वा स्वयं ब्रह्मा समागतः।
इति निश्चित्य मनसा तदा ध्यानपरो भवेत्॥
(कालिकापुराणम्)

अमोघा शांतनु मुनि से क्रोध और दुख के साथ कहने लगी- एक चार मुंहवाले व्यक्ति ने हंसयान में आकर मुझे अपने साथ रति क्रिया करने के लिये प्रार्थना करने लगा और मै उसे शाप देने के लिये तत्पर हो उठी। डर कर वे यहां से चले गये। इसिलिए हे प्रभु, अगर आप में सामर्थ्य है तो इसका प्रतिकार करें। ये जान लीजिए कि किसी भी प्राणी में अमोघा का बलात्कार करने का सामर्थ नहीं है।

अमोघा की बातें सुनकर स्वयं देवादिदेव ब्रह्मा उनके आश्रम में उपस्थित हुए थे, ये पता लगने पर वह ध्यान करने लगे।

(7/7)

दिव्यज्ञानेन स ज्ञात्वा देवकार्यमुपस्थितम्।
तीर्थवतरणञ्चापि हिताय जगतं मुनिः॥
ज्ञात्वोदर्कं चिंतयित्वा स्वभार्यामिदमब्रवीत्।
इदं तेजो ब्रह्मणस्तं पिवामोघे ममाज्ञया॥
हिताय सर्वजगतां देवकार्यार्थसिद्धये।
भवत्या निकटं ब्रह्मा स्वयमेव समागतः॥
त्वामप्राप्य महत्कृत्यमावयोः स मनर्प्यच।
गतो निजास्पदं तत्वं कर्त्तुमर्हसि तद्वचः॥
तत् श्रूत्वा शांतनोर्वाक्यममोघातीव लज्जिता।
सांतयंतीव तं प्राह पतिं नत्वा महासती॥
नान्यस्य तेजो धास्यामि नच ते विमनस्कता।
अवश्यं यदि कर्त्तव्यं पीत्वा त्वं मयि चोत्सृज॥
(कालिकापुराणम्)

ध्यान में रहते वक्त शांतनु मुनि को यह ज्ञान हुआ कि समस्त जगत के हित के लिए तीर्थअवतरण कार्य समुपस्थित है, और इसीलिए देवादिदेव ब्रह्मा उनके आश्रम में आए थे। शांतनु मुनि सुविवेचना करके अमोघा से कहने लगे- हे प्रियतमा, ये ब्रह्मा देव का वीर्य है, समस्त जगत का मंगल के लिये और देवताओं की कार्यसिद्धि के लिये मेरे आज्ञा से तुम ये वीर्य पान करो।

स्वयाम ब्रह्मादेव ने यहाँ उपस्थित होकर तुमसे अनुमति न पाकर हमारे उपर ही इस महान कार्य का दायित्व अर्पण किया है। इसीलिये इस कार्य को सिद्ध करना उचित है। तब महासती अमोघा अतिशय लज्जित होकर स्वामी को प्रणाम करके कहने लगी- आपके प्रति मेरे मन में कोइ अवज्ञा का भाव नहीं है और मै दुसरे का तेज धारण नहीं करुंगी। अवश्य अगर ये कर्तव्य है, तब इस वीर्य को सबसे पहले आप पान और उत्सर्जन कर सकते हैं।

(7/8)

ततस्तस्या वचः श्रूत्वा युक्तं तथ्यञ्च शांतनुः।
स्वयं पीत्वा तु तत्तेजः स्वभार्यायां न्यषेचयेत्॥
संक्रामितैः शांतनुना तेजोभि र्ब्रह्मणः सती।
गर्भं दधारामोघाख्या हिताया जगतं ततः॥

तस्य काले तु संप्राप्ते नासातो जलसञ्चयः।
तंमध्ये तनयश्चापि नीलवासाः किरीटधृक्।
रक्तमालासमायुक्तो रक्तगौरश्च ब्रह्मवत्॥
चतुर्भुजः पद्मविद्याध्वजशक्तिधरास्तथा।
शिशुरामशिरस्थश्च तुल्यकायो जलोत्करैः॥
(कालिकापुराणम्)

तब शांतनु मुनि नें अमोघा की बातों को मानकर वीर्य पान करके अमोघा को उत्सर्जन किया। इस रूप से शांतनु के द्वारा ब्रह्मतेज अमोघा के गर्भ में संचारित होकर जगत के हित में अमोघा गर्भवती बनी। उपयुक्त समय पर अमोघा ने एक जलराशि का प्रषव किया। इस जलराशि के बीच में से किरीट घारी, नीलवस्त्रधारी, रक्तमालासमायुक्त, रक्तगौरकर्ण चतुर्वाहु पद्माविद्याध्वजशक्तिधर एक पुत्र का आविर्भाव हुआ।

(7/9)

तज्जातश्च तथाभूतं शांतनुर्लोकशांतनुः।
चतुर्णां पर्वतानाञ्च मध्यदेशे न्यवीविशत्॥
कैलाशश्चोत्तरे पार्श्वे दक्षिणे गंधमादनः।
जारुधिः पश्चिमे शैलः पूर्वे शम्वर्त्तकाह्वयः॥
तेषां मध्ये स्वयं कुंडं पर्वतानां बिधेः सुतः।
कृत्वातिववृधे नित्यं शरदीव निशाकरः॥
तं तोयमध्यगं पुत्रमासाद्य द्रुहिणः सुतम्।
क्रमतस्तस्य संस्कारानाकरोद्देहशुद्धये॥
(कालिकापुराणम्)

शांतनु मुनि ने उत्तर दिशा में कैलाश, दक्षिण में गंधमादन, पश्चिम में जारुधि और पूर्व में सम्वर्तक इन चारों पवतों के बीच उस जलराशि समन्वित संतान को संस्थापित किया। उस स्थान पर जलराशि एवं तनय दोनों दिनों दिन वढ़ने लगी।

(7/10)

अथ काले वहुतिथे व्यतीत ब्रह्मणः सुतः।
तोय राशिस्वरूपेण ववृधे पञ्चयोजनात्॥
तस्मिन् देवाः पपुः सस्नुर्द्वितीय इव सागरे।

शीतामलजले हृद्ये दिव्यैश्चाप्सरसां गणैः ॥
तस्मिन्नवसरे रामो जामदग्न्यः प्रतापवान्।
चक्रे मातृवधं घोरमयुक्तं पितुराज्ञाया ॥
तस्य पापस्य मोक्षय्या स्वपितुश्चोपदेशतः।
स जगाम महाकुंडं ब्रह्माख्यां स्नातुमिच्छया ॥

(कालिकापुराणम्)

कुछ दिनों बाद ब्रह्मपुत्र जलकुंड के रूप में पाँच योजन तक विस्तृत हुआ और तब देवता, अप्सरा आदियों ने उस सागरतुल्य निर्मल, शीतल और सुखप्रदानकारी जल में स्नान एवं जल सेवन करने लगे। उस समय विक्रमशाली परशुराम पिता के आदेश में मातृवध करके पाप मोचन के लिए ब्रह्मकुंड में स्नान करने के लिए आये।

(7/11)

तत्र स्नात्वा च पीत्वा च मातृहन्त्यामपायनयत्।
वीथीं परशुना कृत्वा तं मह्यामवतारयत् ॥
कैलाशोपत्यकायांतु न्यपतद्ब्रह्मणः सुतम्।
तस्यापि सरसस्तीरे समुत्थाय महावलः ॥
कुठारेण दिशं पूर्वमनयद् ब्रह्मणः सुतम्।
ततोऽप्रत्रापि गिरिं हेमशृंगं विभेद्य च ॥
कामरूपांतरं पीठमवाहयदमुं हरिः।
तस्य नाम स्वयं चक्रे विधिर्लोहित्यसंज्ञकम्।
सोहितात् सरसो जातो लोहित्याखस्ततोऽभवत् ॥

(कालिकापुराणम्)

ब्रह्मकुंड में स्नान करके परशुराम मातृहत्या के पाप से मुक्त हो गए। परशुराम ब्रह्मपुत्र कुंड में स्नान के प्रत्यक्ष फल से विमुग्ध होकर कुठार (औजार) से उपयुक्त पथ प्रस्तुत करके तीर्थराज ब्रह्मपुत्र का पृथ्वी पर अवतारण किया। ब्रह्मपुत्र की जलधारा कुंड से निकलकर कैलास पर्वत के निकट लौहित्य सरोवर में आ पड़े और परशुराम ने फिर कुठार से उस सरोवर का किनारे काटकर मार्ग प्रस्तुत करते हए पूर्वदिशा में हेमशृंग पर्वत को भेद कर कामरूप में अवतरित करवाया। देवादिदेव ब्रह्मा ने पूर्व में ब्रह्मपुत्र का नाम स्वयं लौहित्य रखा था। परवर्ती समय में लौहित्य सरोवर से निर्गत होने

के कारण ब्रह्मपुत्र लौहित्य नाम से भी विख्यात हुए।

(7/12)

स कामरूपमखिलं पीठमाप्लाव्य वारिणा।
गोपयन् सर्वतीर्थानि दक्षिणं याति सागरम्॥
प्रागेव दिव्यां यमुनां स त्यक्त्वा ब्रह्मणः सुतः।
पुणः पतित लौहित्ये गत्वा द्वादशयोजनम्॥
चैत्र मासि सीताष्टम्यां यो नरो नियतेन्द्रियः।
चैत्रंतु सकलं मासं शुतिः प्रयतमानसः॥
स्नाति लौहित्येतोयेषु स याति ब्रह्मणः पदम्।
लौहित्यतोये यः स्नाति स कैवल्यमवाप्नुयात्॥

(कालिकापुराणम्)

आखिर में ब्रह्मपुत्र समस्त कापरूप को प्लावित करके समस्त तीर्थ को गुप्त कर दक्षिण के सागर तक गमन कि। यमुना के पूर्व में ब्रह्मपुत्र लौहित्य द्वादश योजन तक विस्तारित होते हुए सागर की ओर गमन कर रहे हैं। जो व्यक्ति शुद्धता से और निर्मल मन के साथ सम्पूर्ण चैत्र महीना तथा विशेषरूप से शुंक्ला अष्टमी तिथि में ब्रह्मपुत्र लौहित्य में स्नान करता है, उसे ब्रह्मापद प्राप्त होता है। ब्रह्मपुत्र लौहित्य में स्नान करने पर उसे कैवल्य प्राप्त होता है।

ब्रह्मपुत्र का माहात्म्य-

(7/13)

लौहित्यमात्रं ये कचिज्जानन्ति तत्र वै नराः।
ते लौहित्यस्नानफलं प्राप्नुवन्ति सुनिश्चितम्॥
सर्वा नदीः समाप्लाव्य सर्वतीर्थानि सर्वतः।
लौहित्यौ ब्रह्मणः पुत्रो याति दक्षिणसागरम्॥

(कालिकापुराणम्)

जिस व्यक्ति को लौहित्य का वृत्तांत ज्ञात है वह व्यक्ति ही लौहित्य में स्नान का फल प्राप्त करता है। ब्रह्मा के पुत्र लौहित्य कामरूपके तीर्थ को सम्पूर्ण रूप से प्लावित कर दक्षिण सागर तक गमन करते हैं।

(7/14)

पुनर्वसौ वृषे लग्ने चैत्रे मासि सीताष्टमीम्।
लौहित्यस्य जले स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते॥
पुनर्वसु बुधोपेतां चैत्रे मासि सीताष्टमीम्।

श्रोत:सु विधिवत् स्नात्वा वाजपेयफलं लभेत्॥
मीने मध्यौ शुक्लपक्षे ह्यशोकामाख्यामथाष्टमीम्।
पिवेदशोककलिकाः स्नायाल्लौहित्यवारिणि॥
(ब्रह्मपुराणम्)

जो व्यक्ति चैत्र महीने की शुक्ला अष्टमी में विजितेन्द्रीय होकर ब्रह्मपुत्र में स्नान करता है, उसे ब्रह्मापद प्राप्त होता है। चैत्र महीना के शुक्ला अष्टमी में अगर पूर्णवसु नक्षत्र योग एव बुधबार हो, तब उस दिन ब्रह्मपुत्र में स्नान करने पर वाजपेय यज्ञ का फल लाभ होता है। चैत्र महीना की शुक्ला अष्टमी तिथि को अशोकाष्टमी के रूप में जाना जाता है। उस दिन ब्रह्मपुत्र में स्नान करने और अशोक-कालिका पान करना चाहिये।

(7/15)

स्नानं दानं तथा जपं यज्ञञ्च सुरपूजनम्।
लौहित्य हि कृतं सर्वं कोटिकोटि गुणं भवेत्॥
शिवलिंगानि कोटीनि गंगायामापि पूजयेत्।
ततोधिकफलं पुत्र ब्रह्मपुत्रे लभेन्नरः॥
(ब्रह्मपुराणम्)

लौहित्य में स्नान, दान, जप, यज्ञ और देवपूजा करने से कोटि-कोटि गुण फल की प्राप्ति होती है।

(7/16)

भाद्रकृष्णचतुर्दश्यां यावदाप्लावते जलम्।
तावद्गर्भं विजानीयात् तद्उर्धं तीरमुच्यते॥
तीराद् गव्युतिमात्रंतु परितः क्षेत्रमीरतम्।
सार्द्धत्रिकोटित्रिदशा स्तन्मध्ये निवसंति हि॥
(ब्रह्मपुराणम्)

भादो महिने का कृष्ण चतुर्दशी में जब तक जल उत्थित होती है, तब तक ब्रह्मपुत्र का गर्भ, उसके दोनो पार एवं दोनों पार के दो क्रोश तक ब्रह्मपुत्र का क्षेत्र है। इस क्षेत्र में समस्त देवतागण वास करते है।

(7/17)

पृथिव्यां यानि तीर्थानि सरितः सागरादयः।

सर्वे लौहित्यमायांति चैत्रे मासि सीताष्टमीम्॥
(लिंगपुराणम्)

पृथ्वी पर जितने तीर्थ एवं सरित-सागर हैं वे सारे चैत्र महीने की शुक्ला अष्टमी तिथि पर ब्रह्मपुत्र में आगमन करते है।

(7/18)

यमुना दक्षिणे कूले मध्ये चापि सरस्वती।
लौहित्यस्योत्तरे तीरे सदा वहति जाह्नवी॥
(विृहद् गवाक्ष)

ब्रह्मपुत्र के दक्षिणी पार में यमुना, मध्य में सरस्वती एवं उत्तर पार में गंगा सदा विराजमान रही हैं।

ब्रह्मपुत्र का दर्शन-स्पर्शन मंत्र-

(7/19)

त्वं ब्रह्मपुत्र भगवन भवतीर्थराज गम्भीर-नीर परिपूरित-सर्वदेश।
तद्दर्शनाद्धरतु मे भवघोरदुःखं संयोगतः कलियुगे भगवन् नमस्ते॥

ब्रह्मपुत्र का ध्यान मंत्र-

(7/20)

लौहित्यं रक्तगौरांगं नीलवस्त्र विभूषितम्।
रत्नमालासमायुक्तं चतुर्वाहुसमन्वितम्॥
पुस्तकं श्वेतपद्मञ्च विभ्रतं दक्षिणे करे।
वामे शक्तिर्ध्वजञ्चैव शिशुमारस्थितं शुभम्।
प्रपद्ये नदराजञ्च ब्रह्मभूतस्य भूतिदम्॥

ब्रह्मपुत्र का आवाहन मंत्र-

(7/21)

ब्रह्मपुत्र नदश्रेष्ठ जामदग्न्यावतारित।
परशुना दत्तमार्गेन आगच्छ वरदा भव॥

ब्रह्मपुत्र स्त्रोत-

(7/22)

नमोऽस्तु विष्णुरूपाय ब्रह्मपुत्राय वै नमः।
नमः सागरपुत्राय गंगापुत्राय वै नमः॥
नमः शांतनुपुत्राय अमोघनन्दनाय च।

नमस्ते सर्वसंहंत्रे कत्रे शुद्धजलाय च॥
नमस्ते तीर्थराजाय सर्वतीर्थजलाय च।
सदा जनाघनाशाय नदीनां पतये नमः॥
सदा चञ्चलरूपाय घोरावर्त्ताय वै नमः।
इदं स्तोत्रं पाठेद्यस्तु लौहित्य-तीरतः शुचिः।
भूत्वा वै देवदेवेशो नाकमेष्यति नान्यथा॥

ब्रह्मपुत्र में अर्घ्यदान मंत्र-

(7/23)

किरीटी नीलवासाश्च रत्नदामविभूषितः।
गृहाणार्घ्यं महावाहो भववन्धविमुक्तये॥

ब्रह्मपुत्र का प्रणाम मंत्र-

(7/24)

ब्रह्मपुत्र महाभाग शांतनोः कुलनंदन।
अमोघा गर्भ सम्भूत पापं लोहित्य मे हर॥

ब्रह्मपुत्र का जल दान मंत्र अथवा अशोक कलिका पान मंत्र-

(7/25)

त्वमशोक हराभिष्ट मधुमास समुद्भव।
पिवामि शोकसंतप्तो मामशोकं हरं सदा॥

अष्ट अशोक कलिका के नाम-

(7/26)

अशोकश्च विशोकश्च नंदकं पुष्टिवर्द्धनः।
शंखचूड़ो मणिग्रीवः षष्टिकश्चापराजितः॥
(लिंगपुराणम्)

अष्टशोक कलिका की नाम समूह क्रमशः- अशोक, विशोक, पूष्टिवर्द्धन, शंखचूड़, मणिग्रीव, षष्टिक और उपराजित।

- सप्तम अध्याय समाप्त -

अष्टम अध्याय

कुमारी पूजा का माहात्म्य

कुमारी की जन्म कथा-

(8/1)

गुरुस्त्वां सर्वलोकानां परमेश पुरातन।
जगद्दूर्ध्वकलाधीश वेद कोलानिपातम्॥
(योगिनीतंत्रम्)

देवी ने कहा- हे पुरातन, हे परमेश, आप सर्वलोक के गुरु है, आप ही जगत के उर्द्धकलाधीश्वर हैं, अब आप मुझे कोलासुर वध का वृतांत कहिये।

कोलासुर वध का वृतांत-

ब्रह्मश्राप के फलस्वरूप असीम तेजस्वी विष्णु पाप से वचाव के लिए हिमालय पर जाकर पापक्षयी महाकाली के अष्टाक्षरी महाविद्या मंत्र का जप किया। दस हजार बर्ष तपस्या करने के पश्चात देवी के संतुष्ट होने पर विष्णु की हृदपंकज़-से कोला नामक एक महासुर निर्गत हुआ।

असीम बलशाली कोलापुर ने इन्द्रादि देवगण को परास्त करके विष्णु का बैकुंठ, ब्रह्मा का कमलासन आदि अपने कब्जे में लियो। कोलासुर के अतंक से धबराकर विष्णु से लेकर देवतागण सनातनी महाकाली के पास जाकर भक्तिपूर्वक स्तुति करने लगे। महाकाली ने संतुष्ट होकर देवगण से कहा- मै कुमारी रूप धारण करके उस दुरात्मा कोलासुर को बांधव सहित विनाश करुंगी।

महाकाली विप्रकुमारी का रूप धारण करके कोलासुर के पास जाकर कहने लगी- मै पितृ-मातृहीना सहायता वर्जिता हुं। मुझे किंचित भोजनद्रव्य प्रदान करे। माया में मोहित होकर कोलासुर ने महाकाली रूपी कुमारी को अपने अंत:पुर में ले जाकर मुक्तारंजित आसन पर बैठाकर कहा- तुम्हारी इच्छा के अनुसार भोजनद्रव्य प्रदान करेंगे, तुम सानंद ग्रहण करो।

कोलासुर अनेको भोजनद्रव्य देने के बाद भी महाकाली रूपी कुमारी को तृप्त न कर पाया, अंत में कहा- हे बालिका, जिससे तुम्हारी तृप्ति होती हो,

उसे ही ग्रहण करो।

बालारूपिणी महाकाली ने कोलासुर की कथन के अनुसार कोलासुर का कोष, अश्व, हस्ती, रथ, सैनिक, बंधु-बांधव सहित सभी को भक्षण कर अंत मे कोलासुर का भी भक्षण कर लिया।

यह देख विष्णु सहित देवतागण पुष्पवृष्टि करने लगे। देव-किन्नर-गंधर्व एवं देवपत्नियों नें नृत्य-गीत प्रारम्भ कर दिया और उसके बाद देवगण नंदन कानन मे प्रस्फुटित कुसुम चंदनचर्चित पुष्प द्वारा महाकालीरूपी कुमारी की पूजा करने लगे।

कुमारी पूजा का माहात्म्य-

(8/2)

सर्वविद्यास्वरूपा हि कुमारी नात्र संशय।
एका हि पूजिता वाला सर्वां हि पूजितं भवेत्॥
(योगिनीतंत्रम्)

कुमारी सर्वविद्यास्वरूपा है, एक कुमारी कन्या का पूजन करने से सर्व देव-देवियों की पूजा करने जैसा समफल प्राप्त होता है।

(8/3)

कुमारीपूजनादेव कुमारीभोजनादिभिः।
एकद्वित्रादि वीजानां फलदा नात्र संशयः॥
तस्यै पुष्पं फलं दत्वा अनुलेपारिदकं तथा।
वालप्रियञ्च नैवेद्यं दत्वा तद्भावभावितः॥
मृदा तदंगमात्मानं वालभावविचेष्टितम्।
अतिप्रिय कथालाप क्रीड़ा कौतूहलान्वितम्॥
(योगिनीतंत्रम्)

कुमारी की पूजा एवं भोजन कराने पर संपूर्ण फल प्राप्त होती है। कुमारी की फल, पुष्प एवं अनुलेपन से पूजा करते हुए कुमारी का प्रिय नैवद्य दान करना चाहिए।

(8/4)

पूजायां लभते पुत्रान् पूजायां लभते श्रियम्।
पूजायां धनमाप्नोति पूजायां लभते महीम्॥

पूजायां लभते लक्ष्मीं सरस्वतीं महाञ्जसा।
महाविद्याः प्रसीदंति सर्वदेवा न संशयः॥
कुमारीपूजनं कृत्वा त्रैलोक्यं वशमानयेत्।
महाकांतिर्भवेत् क्षिप्रं सर्वपुण्यफलप्रदाम्॥
(योगिनीतंत्रम्)

कुमारी की पूजा करने पर पुत्र, धन, पृथ्वी, सरस्वती और महाविद्या की प्राप्ति होती है।

कुमारी पूजा का स्थान निर्णय-

(8/5)

पूजास्थानं महापीठं देवालयमपि वा।
(रुद्रयामलम्-उत्तरखण्डम्)

महापीठ एवं देवालाय में पूजा करनी चाहिये।

कुमारी निर्णय अवं उम्र के अनुसार कुमारी का नाम-

(8/6)

एकवर्षा भवेत् संध्या द्विवर्षा च सरस्वती।
त्रिवर्षा च त्रिधामूर्त्ति श्चतुर्वर्षा च कालिका॥
सुभगा पञ्चवर्षा तु षड्वर्षा च भवेद् उमा।
सप्तभिर्म्मालिनी साक्षादष्टवर्षातु कुब्जिका॥
नवभिः कालसंदर्भा दशभिश्चापराजिता।
एकादशे तु रूद्राणी द्वादशाब्दे तु भैरवी॥
त्रयोदशे महालक्ष्मी द्विसप्ता पीठनायिका।
क्षेत्रज्ञा पञ्चदशभिः षोड़शे चाम्बिका मता॥
एवं क्रमेण संगृह्य यावत् पुष्पं न जायते।
प्रतिपदादि-पूर्णांतं वृद्धभेदेन पूजयेत्॥
(रुद्रयामलम्-उत्तरखण्डम्)

पहला वर्ष में संध्या, दुसरे वर्ष में सरस्वती, तीसरे वर्ष में त्रिधा मूर्ति, चतुर्थ वर्ष में कालिका, पंचम वर्ष में सुभगा, षष्ठ वर्ष में उमा, सप्तम वर्ष में मालिनी, अष्टम वर्ष में कुब्जिका, नवम वर्ष में कालसंदर्भा, दशम वर्ष में अपराजिता, एकादश वर्ष में रूद्राणी, द्वादश वर्ष में भैरवी, त्रयोदश वर्ष में महालक्ष्मी, चतुदश

वर्ष में पीठनायिका, पंचदश वर्ष में क्षेत्रज्ञा और षोड़श वर्ष में अम्बिका। जिस वर्ष तक कन्या पुष्पिता नहीं होती, उस वर्ष तक इन नामों से कुमारी पूजा की जाती है।

(8/7)

पञ्चवर्षात् समारभ्य यावत् द्वादशवार्षिकी।
कुमारी सा भवेद्देवी निजरूपप्रकाशिनी॥
षड़वर्षात् तु समारभ्य यावच्छ नववार्षिकी।
तावच्चैव महेशानि साधकाभिष्टसिद्धये॥
(कुब्जिकातंत्रम्)

पाँच साल से बारह साल तक कुमारी मे देवी का वास होता है। छः वर्ष की उम्र तक कुमारी साधक की अभिष्टसिद्धिकारी देवी के रूप में होती है।

(8/8)

द्वितीयवत्सरादूर्ध्वं यावत् स्यादष्टमाब्दकम्।
तावत् पूजयित्वा कन्यां सुंदरमोहिनीम्।
दिव्यभावस्थितः साक्षात् तंत्रफलं लभेत्॥
(यामलतंत्रम्)

दो वर्ष की उम्र से आठ वर्ष की उम्र तक कुमारी का जप और पूजा आदि करना चाहिये। दिव्यभाव से इस उम्र की कुमारी की पूजा करने से साक्षात तंत्र-मंत्र का फल प्राप्त होता है।

(8/9)

अष्टवर्षा तु सा कन्या भवेद् गौरी वरानने।
नववर्षा रोहिणी सा दशवर्षा तु कन्यका।
तत उर्द्ध्वं महामाये भवेत् सैव रजस्वला॥
(विश्वसारतंत्रम्)

आठ वर्ष की उम्र की कुमारी को गौरी, नौ वर्ष की उम्र की कुमारी को रोहिणी, दस वर्ष की उम्र की कुमारी को कन्यका नाम से जाना जाता है।

कुमारी की जाति विचार-

(8/10)

जातिभेदो न कर्त्तव्यः कुमारीपूजने शिवे।

जातिभेदाम्महेशानि नरकान्न निवर्त्तते॥
विचिकित्सापरो मंत्री ध्रुव हस पातकी भवेत्।
देवीबुद्धया: महाभक्तस्तुस्मात् तां प्रपूजयेत्॥
(योगिनीतंत्रम्)

कुमारी का जाति विचार नही किया जाता है। जो कुमारी का जाति विचार करता है, उसे हमेशा के लिये नर्क में निवास करना पड़ता है। जो कुमारी को नीच जाति के रूप में घृणा करता है वह निश्चय ही पातकग्रस्त होता है। इसीलिये सभी जाति की कुमारी को साक्षात देवी के रूप में मानकर पूजा करना ही भक्त का कर्त्यव्य है।

कुमारी पूजा में पुष्प अर्पण करने का मंत्र-

(8/11)

ॐ मंत्राक्षरमयीं देवीं मातृणां रूपधारिणीम्।
नवदूर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयामह्यम्॥

कुमारी प्रणाम मंत्र-

(8/12)

ॐ जगद्वन्द्ये जगत्पूज्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणीम्।
पूजां गृहाण कौमारी जगन्मातर्नमोऽस्तुते॥

– अन्यत्र –

(8/13)

ॐ नमामि कुलकामिनीं परमभाग्यसंदायिनीम्।
कुमाररतिचातुरीं सकलसिद्धिमानंदिनीम्॥
प्रवालगुटिकास्त्रजं रजतरागवस्त्राम्विताम्।
हिरण्यतुलभूषणां भूवनवाक् कुमारीं भजे॥

कुमारी स्तोत्र-

(8/14)

जगत् पूज्ये जगद्वंद्ये शर्वशक्तिस्वरूपिणि।
पूजां गृहाण कौमारि जगत्मातर्नमोऽस्तुते॥
त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्षां ज्ञानरूपिणीम्।
त्रैलोक्यवंदितां देवीं त्रिमूर्त्तिं पूजयाम्यहम्॥
कलाम्तिकां कलातीतां कारण्यहृदयां शिवाम्।

कल्याणजननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम्॥
अनिमाद्विगुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकाम्।
अनंतशक्तिकालक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्॥
कामचारीं शुभां कांतां कालचक्ररूपिणीम्।
पूजयामि सदा देवीं चंडिकां चंडविक्रमाम्॥
चंडीवीरां चंडमायां चंडमुंडप्रभञ्जनाम्।
पूजयामि सदा देवीं चंडिकां चंडविक्रमाम्॥
सानंदकरीं शांतां सर्वदेवनमस्कृताम्।
सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम्॥
दूर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःखविनाशिनीम्।
पूजयामि सदा भक्त्या दूर्गां दुर्गतिनाशिनीम्॥
सुंदरीं सर्ववर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम्।
सुभद्राजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यदम्॥

कुमारी पूजा का फल-

(8/15)

– कुमारीपूजन फलम् –

न तथा तुष्यति शिवा वलिहोमस्तुतिरणैः।
कुमारीपूजनेनाऽत्र यथा सद्यः प्रसीदति॥
न केवलं पूजयेत् तां भोजयेच्चापि यत्नतः।
व्यंगता सांगताऽपि चाण्यकरणात् पूजया परिकीर्त्तिता।
करणत् सांगताऽपि स्यादन्यस्मिन्नकृतेऽपि हि॥
(महाकालसंहिता एवं ताराभक्तिसुधार्णव)

जितनी शीघ्रता से कुमारीपूजन से शिव प्रसन्न होते हैं, उतनी जल्दी बलि, होम, स्तुति आदि से प्रसन्न नही होते। कन्याओं का पूजन मात्र ही नहीं, बल्कि पूजन के बाद यत्नपूर्वक श्रद्धा से कन्याओं को भोजन भी कराना चाहिये। यदि यत्नपुर्वक पूजन करके कन्याओं की भोजन नहीं कराया जाता है तो ऐसे पूजन से आकांसित फल नहीं मिलता है।

– अष्टम अध्याय समाप्त –

नवम अध्याय

अम्बुवाची

अम्बुवाची निर्णय एवं महात्म्य-

(9/1)

आद्रानक्षत्राद्यपादावच्छेदेन पृथ्वी ऋतुमति तिष्ठति।
तस्या रजस्वलायाः पृथ्व्या अम्बुवाचीति संज्ञा।
तत्त्यागदिने तद्‌भिन्नदिने तव पूजां करिष्यंति इत्यन्वयः॥
(देवीभागवतम्)

मृगशिरा नक्षत्र के शेष पाद से आद्रा नक्षत्र के प्रथम पाद तक पृथ्वी ऋतुमती होती है, पृथ्वी की इस अवस्था को अम्बुवाची कहा जाता है।

(9/2)

मृगशिरसि निपाते रौद्रपादेऽम्बुवाची।
ऋतुमती खलु पृथ्वी वर्ज्जयेत् त्रीण्यहानि।
न स्वाध्यायो वषट्कारो न देवपितृपूजनम्।
नापि पाठो वीजवापो न च भू-खननादिकम्॥
(ज्योतिषशास्त्रम्)

मृगशिरा नक्षत्र का तीन पाद अतिक्रम कर चतुर्थ पाद से आद्रा नक्षत्र के प्रथम पाद तक पृथ्वी की ऋतुमती होने की अवस्था को अम्बुवाची कहा जाता है। अम्बुवाची के तीन दिनों में देवीपूजा, पितृपूजा, पाठ, बीजरोपण एवं भूमि खनन निषिद्ध है।

(9/3)

आषाढ़े प्रथमे देवी अम्बुवाचीदिनत्रयम्।
संगोपयन् गृहे देवीं स्थापयेद् वस्त्रवेष्टनै॥
(वामाकेश्वरतंत्रम्)

आषाढ़ महीने के प्रथम भाग मों अम्बुवाची के तीन दिन देवी को वस्त्र से ढककर गृह्याभ्यंतर में रखा जाता है।

(9/4)

धरण्यात्र्ऋतुमत्यां तु तथा सप्त दिनादि च।
ऋतुमत्यां नकुर्वीत पूर्वसंकल्पितादृते॥
न कुर्यात् खननं भूमेः सूच्यग्रेणापि शंकरि।
वीजानां वपनञ्चैव चतुर्विंशति यामकम्॥
प्रमादाद्वपनं कृत्वा गाश्च तत्र प्रचारयेत्॥
कृच्छ्रं कुर्याद्धक्षमाच्च खननात् तिलकाञ्चनम्॥
दूर्गाद्या मातरः सर्वा ऋतुमत्यो भवंति हि॥

(मत्स्यसुक्तम्)

पृथ्वी सात दिनों तक ऋतुमती होती है। पृथ्वी के ऋतुमती होते समय संकल्प करके कोई भी कार्य करना उचित नहीं, परंतु पूर्व संकल्पित कार्य करने पर कोई बाधा नहीं हैं। अम्बुवाची के समय भूमि खनन करना उचित नहीं। अम्बुवाची प्रारम्भ होने के चौबीस प्रहर समय तक बीजारोपण निषेध है। अम्बुवाची के समय दुर्गादि सारी देवियां ऋतुमती होती है।

(9/5)

भूमिदाहे कर्त्तव्यं वीजानां वपनं भूवि।
नित्यादृते न कुर्वीत यज्ञ-दान व्रतानि च॥
पूर्वे त्रीणि परे त्रीणि संक्रांतिर्मध्यवर्त्तिनी।
मिथुनादौ वृषस्यांते भूमिदाहो दिनत्रयम्॥
न स्वाध्यायो वषट्कारो न देव-पितृतर्पणम्।
हलानां वाहनं चैव वीजानां वपनं तथा॥
यत्र दग्धा भवेत् पृथ्वी यत्र वा स्याद्रजस्वला॥

(स्मृति ज्योतिष शास्त्र)

अम्बुवाची के सात दिनों को भूमिदाह भी कहा जाता है। उन सात दिनों के अंदर हल चलाने, बीजरोपण, नित्यपूजादि, यज्ञ, व्रत, दान, होम, देव-देवी की पूजा, पितृ तर्पण, वेद अध्ययन एवं शांति स्वत्यान आदि कार्य निषेध है।

(9/6)

यस्मिन् वारे क्षणे चैव रविर्मिथुनगो भवेत्।
तस्मिन् वारे क्षणे चैव भवेत् पृथ्वी रजस्वला॥

नित्यं नैमित्तिकं काम्यं जप-यज्ञादिकं च यत्।
ऋतुमत्यां न कुर्वीत पूर्वसंकल्पिताहते॥
न कुर्यात् खननं भूमेश्वतुरंगुलकाद्वहिः।
वीजानां वपनं चात्र पूर्वकृष्टेऽपि वर्जयेत्॥
एतेन वृषस्य शेषे त्रिदिने मिथुनादौ दिनत्रये।
भूमिदाहे त्यजेत् कर्म नित्यादावश्वकाद्दते॥
यद्वार क्षमादाय भाणोर्म्मथ गामिता।
तद् दिनक्षणमादाय नित्यं च त्रिदिनम् त्यजेत्॥
ऋतुमत्यामशौचवत् संध्यादिकमपि नास्तीति तात्पर्यम्॥
(स्मृति ज्योतिष शास्त्र)

वर्ष के जिस वार और क्षण में भगवान सूर्य मिथुन राशि मे प्रवेश करते है, उस वार उस क्षण मे ही पृथ्वी रजस्वला होती है। अगर पूर्व संकल्पित नहीं तो उस दिन उस क्षण से 3 दिन कुछ निर्दिष्ट कार्यों का त्याग करना चाहिये क्योंकि पृथ्वी रजस्वला होने की समय को अशौचकाल माना जाता है । पृथ्वी के ऋतुमती काल में नित्यकर्म, नैमिन्तिक कर्म, काम्य कर्म तथा जप यज्ञादि नही करना जाहिय।

पृथ्वीके ऋतुमती होने के समय मे भुमि मे किसी प्रकार का खननादि कार्य नहीं करना चाहिये, साथ ही किसी भी स्थिति मे बीज रोपण कार्य भी पृथ्वी में नही करना चाहिये, चाहे वह भुमि पृथ्वी के रजस्वला होने के पुर्व ही क्यों न जोरी गई हो।

इस प्रकार वृष राशि के अन्तिम 3 दिन तथा मिथुन राशि के आरम्भ के 3 दिन, अर्थात् इस 6 दिन भुमि में किसी भी प्रकार का कर्म नही करना चाहिए। पृथ्वीके ऋतुमती काल में किसी प्रकार का भुखनन, बीजरोपण, तृण-तरु-लता-वृक्ष आदि रोपन व काटना वर्जित है।

- नवम अध्याय समाप्त -

दशम अध्याय

बलिनिवेदन का माहात्म्य

बलिनिवेदन का माहात्म्य-

(10/1)

पूजावसाने तु बलिं देव्याः प्रीत्यै निवेदयेत्।
बलिदानं ततः पश्चात् कुर्याद् देव्याः प्रमोदकम्॥
मोदकैर्गजवक्त्रञ्च हविषा तोषयेद्रविम्।
तौर्य्यात्रिकैश्च नियमैः शंकरं तोषयेद्धरिम्।
चंडिकां बलिदानेन तोषयेत् साधकः सदा॥
(कालिकापुराणम्)

पूजा की समाप्ति के बाद देवी की प्रीति के लिये प्रमोदजनक बलिदान करना चाहिये। शास्त्र में कहा गया है कि साधक मोदक से गणेश को, घृत से सूर्य को, तौर्यत्रिक अर्थात नृत्य-गीत-वाद्य और व्रत से शंकर को, बलि द्वारा चंडिका को संतुष्ट करना चाहिये।

(10/2)

युवानां व्याधिहीनञ्च सुश्रीकं लक्षणान्वितम्।
सर्ववयवसम्पन्नं बलिं दद्यात् सुशोभनम्॥
तरुणं सुंदरं कृष्णं क्षतादिदोषवर्जितम्।
स्नापयित्वा बलिं तत्र भूषयेत् पुष्पचंदनैः।
भूषयेत् रक्तमाल्येन सिंदुरेण विशेषतः॥
(कालिकापुराणम्)

युवा (तरुण), व्याधिहीन, सुश्री एवं सुलक्षणयुक्त अवयव सम्पूर्ण अक्षत कृष्णवर्ण का पशु बलि के रूप में निवेदन करना चाहिये। सबसे प्रथम बलि को नहलाकर, लाल चंदनयुक्त लाल फूलों की माला पहनाकर सिंदूर लगाकर पूजा करनी चाहिए।

(10/3)

बलिभिः साध्यते मुक्तिर्वलिभिः साध्यते दिवम्।
बलिदानेन सततं जयेच्छक्रन्नृपान् नृपः॥
(कालिकापुराणम्)

बलिनिवेदन से मनुष्य स्वर्गमुक्ति प्राप्त करता है और राजागण शत्रु को पराजित करते हैं।

(10/4)

महानवम्यां शारदि यद्येवं दीयते बलिः।
तदा तदष्ट्यंगभवैर्मांसैर्होमं समाचरेत्॥
दूर्गातंत्रेण मंत्रेण प्रणीते दहने शुचौ।
एवं दत्वा बलिं मर्त्यो रिपुक्षयमवाप्नुयात्॥
(कालिकापुराणम्)

शरदकाल की महानवमी में बलि निवेदन करके उस बलि के शरीर के अष्ट अंगों से मांस आहरण कर होम करना चाहिये। दुर्गा तंत्रमंत्र द्वारा उसी नियम से बलिदान करने पर साधक शत्रुक्षय प्राप्त होता है।

बलिशब्दार्थ-

(10/5)

बलिमात्र द्विधा प्रोक्तं तयोर्भोदं श्रृणुष्व मे।
बलिः पूजोपहारः स्यात् प्राणिदानं द्वितीयकम्॥
बलिमाद्यं निवृत्तिस्तु प्रवित्तिस्तु पशुं प्रिये।
बलिहीना च्वा या पूजा न फलप्रदा॥
(कालिकापुराणम्)

बलि शब्द का अर्थ दो प्रकार के हैं- एक पूजा का उपहार, दुसरा प्राणीदान। निवृत्ति मार्ग में बलि का अनुकरण, पवृत्ति मार्ग में पशुदान करना चाहिये। बलिहीन जो पूजा है, वह पूजा फलप्रद नही है।

अर्पण की जानेवाली विभिन्न बलियों की सुची-

(10/6)

पक्षिणः कच्छपाः ग्राहा मत्स्या नवविधा मृगाः।
महिषो गोधिका गावश्छागो रुरुश्छ शूकरः॥
खर्गश्च कृष्णसारश्च गोधिका शरभो हरिः।
शार्दुलश्च नरश्चैव स्वगात्ररुधिरं तथा॥
(कालिकापुराणम्)

बलि के रूप में निवेदन किए जाने वाले पक्षी, जलचर एबं पशु की सूची- पक्षी, कच्छप, ग्राह, मत्स्य, नौ प्रकार के मृग, महिष, अज, आविक, गो, छाग,

रुरु, शूकर, खड़ग, कृष्णषाड़, गोधिका, शरभ, सिंह, शार्दुल, मनुष्य और स्वगात्ररुधिर।

अवैध हिंसा का दोष-

(10/7)

अविधानेन यो हन्यादात्मार्थं प्राणिनं प्रिये।
निवसेत् नरके घोरे युगानि पशुरोमभिः॥
सरक्तविंदुपातीच तिर्यक्योनौ प्रजायते।
अनुमंता विशसिता निहंता क्रयविक्रयी।
संस्कार्त्ताचोपगोक्ता च भोक्ता चाष्टौ च ते सति॥

(कुलार्णवतंत्रम्)

नियम एवं प्रयोजन के अलावा जो व्यक्ति अपने विलास प्रवृत्ति की चरितार्थ करने के लिये प्राणी की हत्या करते हैं, उन सारे व्यक्ति उनके के द्वारा मारे गए पशु के शरीर मे जितने रोएं हीति है, उतने युगों तक नर्क में उनको निवास करना पड़ता हैं। जो व्यक्यि दुसरों का रक्तपात करते हैं, उस रक्तचात के समय जितने विंदु रक्त जमीन पर गिरते हैं, उतने युग तक वे मनुष्य के बाहर अन्य योनि प्राप्त होते है। इसके अतिरिक्त, इस अवैध हिंसा में अनुमति प्रदानकारी, विक्रेता, संस्कारकर्ता और उपभोगक्ता, ये आठ प्रकार के व्यक्ति भी मनुष्य के बाहर अन्य योनि प्राप्त करते है।

स्वहगात्ररुधिर निवेदन करने के बारे में कुछ बातें-

(10/8)

नाभेरधस्ताद्रूधिर पृष्ठभागस्य च श्रिये।
स्वगात्ररुधिरं दद्यान्न कदाचन साधकः॥
नोष्ठस्य चिवुकस्यापि नेन्द्रियाणाञ्च मानवः।
कंठाधो नाभितश्चोर्द्धं वाह्वोः पाणिमृते तथा।
प्रदद्याद्रूधिरं घातं नाति कुर्याच्च साधकः॥
गंडयोश्च ललाटस्य भ्रुवोर्मध्यस्य शोणितम्।
कर्णाग्रस्य च वह्वोश्च गलयोरुदरस्य च॥
कंठाधो नाभितश्चोर्द्धं हृद्भागस्य हृद्भागस्य यतस्ततः।
पार्श्वयोश्चापि रुधिरं दूर्गायै विनिवेदयेत्॥

(कालिकापुराणम्)

आठ प्रकार के बलि के अंदर स्वगात्ररुधिर (साधक या फिर पूजा

करनेवाले के अपने शरीर के अंग का रक्त) निवेदन अन्यतम है। साधक अपने देह के विभिन्न अंग एवं स्थान, जैसे कंठ के अग्रभाग, नाभि का उर्ध्वभाग, हथेली को छोड़कर बाहुद्वय, गंड, ललाट, भ्रु के मध्य अंश, कानों के अग्रभाग, स्तनद्वय, उदर, कंठ का अधोभाग एवं पार्शस्थान से रक्त निकाल कर उस रक्त को कमल के पत्र में अथवा सोने के पात्र में या फिर कांसे के पात्र में बलि को रूप मे निवेदन करना चाहिये। नाभि के अधोभाग, पीठ, होंठ और बहिःइन्द्रिय से रक्त निवेदन करना निषेध है। साधक को अपने देह से बलि के रूप में निवेदन करनेहेतु रक्त निकालने वक्त क्षुर, तलवार, चाकू, खड़ग आदि अस्त्र व्यवहार करना चाहिये। स्वगात्ररुधिर निवेदन करने के लिये अंगच्छेद करना निषेध है।

(10/9)

य: स्वहृदयसञ्जातमांसं माषप्रमाणतः।
तिलमुद्गप्रमाणाद्वा देव्यै दद्यात्तु भक्तितः।
षण्मासाभ्यन्तरे तस्मात् काममिष्टमवाप्नुयात्॥
(कालिकापुराणम्)

जो साधक भक्तिभाव के साथ अपने हृदय से माको दाल, तिल या फिर हरी मुंग डाल की मात्रा का मांस देवीयो को निवेदन करता है, छह महीने के अंदर साधक की समस्त कामना की सिद्धि होती है।

- दशम अध्याय समाप्त -

एकादश अध्याय

परिशिष्ट

योगिनीतंत्रोकत शिव के अष्टेत्तर शतनाम–

(11/1)

(11/1)

पुस्करेऽहं सुरेशानो गयायां वै सुशर्म्मदः।
कान्यकुब्जे वेदगर्भो भृगुकक्षे पितामहः॥
कौवेर्यां सृष्टिकर्त्ता च नंदीपूर्यां वृहस्पति।
प्रभासे पद्मजन्मा च स्वर्गनद्यां सुरप्रिये॥
द्वारवत्यान्तु वाग्देवो नाटके नाटकेश्वरः।
नीलाचले च कामेशः पिंगलो हस्तीपर्वते॥
कुशावर्त्ते तु विजयो जयंतः पुस्कराचले।
भस्माचले भयानंदश्चन्द्रकूटे च माधव॥
अंतर्गृहे पद्महस्तो मंगलायाञ्च त्रयम्वकः।
भद्रपीठे च दिव्येशो ह्यश्वक्रांते जनार्दनः॥
अहिच्छत्रे तुल्यानंद श्रीशैले तु जगत्प्रिये।
कुशहस्ते पद्मपाणिर्मानशैले मुनीश्वरः॥
श्रीकंठे श्रीनिवासश्च श्रुयतां प्राणवल्लभे।
कन्याश्रमे भवेन्द्रुद्रो मैनाके विश्वनादकः॥
एकाम्रे चैव नागेशो विराजायां महेश्वरः।
मूलिकाख्ये तथा विष्णुर्महेन्द्रे भार्गवस्तथा॥
कौशिक्यांतु तथा वोधिरयोध्यायांतु भार्गवः।
मणिकूटे हयग्रीवो वराहो विन्दुपर्वते (विंदुपर्वते ??)॥
जटाधारस्तु गोदंते गोमस्ते जांगलेश्वरः।
परमेष्ठी ब्रह्मपुत्रे विश्वशैले तु गह्वरः॥
चित्रशैले तु चित्रेशो देवीकायाञ्चतुर्भुजः।
वृंदावने पद्मपाणिः कुशहस्तस्तु नैमिषे॥

मंदरे च महावोधिर्गोपीन्द्रो हनुपर्वते।
भागीरथ्यां पद्मगर्भ:काम्पिल्ले कनकप्रिये॥
करण चैव कामारिः कपोते हव्यवाहनः।
वशिष्ठश्चार्वुदे चैव श्वेतनद्यां मनोभव॥
धवलायां पिनाकी च पिच्छिलायां त्रिविक्रमः।
यज्ञगर्भस्तु आगस्त्ये उर्वश्यां मधुसूदनः॥
रुक्मिणीशे हरिश्चैव पैत्रिके तु रुचिस्तथा।
वामनाश्च गोमंते च काश्यां विश्वेश्वराह्वयः॥
प्रजापतिः प्रयागे च विदर्भायां द्विजप्रियः।
गंगाधरो भद्रपीठे मातंगे चैव त्र्यम्वकः॥
त्रिपुरारिर्नन्दशैले पांडुशैले त्रिलोचनः।
गंगाह्लदे त्रिलोकेशो भित्तिपुर्यां दिवाकरः॥
यमटे मिंगिलानाथो दारुशृंगे कलानिधिः।
महालिंगं दारुवने अशोक तु विनाशकः॥
हरिसेनश्चल्लुकायां पर्णाटि तु ह्यनन्तकः।
मार्कंडेयो वटे चैव इक्षुद्वारे दिवाकरः॥
गोकर्णे च विकर्णाख्यो मंदारे मधुसूदनः।
अष्टोत्तरशतं स्थानं मया ते परिकीर्त्तितम्॥
(योगिनातंत्रम्)

अष्टोत्तर स्थान का शिव के नाम- पुश्कर में सुरेशान, गया में सूशार्म्मद, कान्यकुब्ज में वेदगर्भ,भुगुकक्ष में पितामह, कौवेरी में सृष्टिकर्ता, नंदीपुर में वृहस्पति, प्रभास में पद्मजन्मा, स्वर्गनदी में सूरप्रीय, द्वारावती में वागदेव, नाटक नामक स्थान पर नाटकेश्वर, नीलाचल में कामेश, हस्तीपर्वत में पिंगल, कुशावर्त में विजय, पुष्कराचल में जयंत, भष्माचल में भयानन्द, चन्द्रकूट में माधव, अन्तगृह में पद्महस्त, मंगलायन में त्राम्वक, भद्रपीठ में दिव्येश, अश्वक्रांत में जनार्दन, अहिच्छत्त में तुलानंद, श्रीशिला में जगतप्रिय, कुशहस्त में पद्मपाणि, मानशिला में मुणिश्वर, श्रीकंठ में श्रीनिवास, कन्याश्रम में रुद्र, मैनाक में विश्वनादक, एकाग में नागेश, बिरजा में महेश्वर, मुलिकारव्य में विष्णु, महेन्द्र में भार्गव, कौशिकी में बोधि, अयोध्या में भार्गव, मणिकुट में हयग्रीव, बिंदुपर्वत पर वराह, गोदंत में जटाधर, गोमंत में जांगलेश्वर, ब्रह्मपुत्र में परमेष्ठि, विश्वशिला में गह्वर, चित्राशिला में चित्रेश, देवीका में चतुर्भुज, वृन्दावन में पद्मपाणि,

नैमषि में कषहष्ट, मन्दर में महाबोधि, हनुपर्वत में गोपीन्द्र, भागिरथी में पद्मगर्भ, काम्पिल्ल में कनकप्रिय, करण में कामारि, कपोत में हव्यबाहन, अवुर्द में वशिष्ठ, स्वेतनदी में मनोभव, धवला में पिणाकी, पिच्छिला में त्रिविक्रम, आगस्त्य में यज्ञगर्भ, उर्वशी में मधुसुदन, रुक्मिनीश में हरि, पैत्रिक में रुचि, गोमन्त में वामन, कासी में विश्वेश्वर, प्रयाग में प्रजापति, विदर्भ में द्विजप्रिय, मद्रपीठ में गंगाधर, मातंग में त्रयाम्वक, नन्दशिला में त्रिपुरारि, पांडुशिला में त्रिलोचन, गंगाह्रद में त्रिलोकेश, भित्ति-पूरी में दिवाकर, यमट में मिंगीलानाथ, दारुश्रृंग में कलानिधि, दारुवन में महालिंग, अशोक में विनाशक, चाल्लुक में हरिसेन, पर्णाट में अनंत, वट में विकर्ण और मन्दर में मधुसुदन।

योगिनितंत्रोक्त देवी कामाख्या का स्तुति मंत्र-

(11/2)

जय कामेशी चामुंडे जय भूतपहारिणी।
जय सर्वगते देवी कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥
विश्वमूर्त्ते शुभे शुद्धे विरूपाक्षी त्रिलोचने।
भीमरूपे शिवे विद्ये कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥
मायाजये जये जम्भे भूताक्षी क्षुभितेऽक्षये।
महामाये महेशानि कामेश्वरी नमोऽस्तुते॥
भीमाक्षी भीतिदे देवी सर्वभूतक्षयंकरि।
कराली विकराली च कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥
काली कराली विक्रांते कामेश्वरि हरप्रिये।
सर्वशास्त्रभूते देवी कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥
कामरूपप्रदीपा च नीलकूटनिवासिनी।
निशुम्भशुम्भमथनी कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥
कामाख्ये कामरूपस्थे कामेश्वरि हरप्रिये।
कामांश्च देहि मे नित्यं कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥
रुधिरासवपानाढ्यवक्त्र त्रिभूनेश्वरि।
महिषासुरवधे देवी कामेशरि नमोऽस्तुते॥
छागतुष्टे महाभीमे कामाख्ये सुरवंदिते।
जय कामप्रदे तुष्टे कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥
भ्रष्टराज्यो यदा राजा नवम्यां नियतः शुचिः।

अष्टम्याञ्च चतुर्द्दश्यां उपवासी नरोत्तमः ॥
सम्वत्सरेण लभते राज्यं निष्कन्टकं पुनः ।
य इदं श्रृणुयाद्भभक्त्या तव देवी समुद्भवम् ।
सर्वपापमिनिर्म्मुक्तः परं निर्वाणमृच्छति ॥
कामेश्वरि देवी सुरासुरप्रिये, प्रकाशिताम्भोजनियंत्रिते नमः ।
सुरासुरीब्रह्मविघ्नपाटनोत्सुके, त्रयीमये देवि नमामि तुभ्यम् ॥
सितासिते वक्त्रपिशंगविग्रहे रूपाणि यस्याः प्रतिपत्तितानि ।
करे कपाले च विकल्पितानि ।
शुभाशुभानमपि तां नमामि ॥
कामरूपसमुद्भूते कामपीठावतंसके ।
विश्वाधारे महामाये कामेश्वरि नमोऽस्तुते ॥
अव्यक्तविग्रहे सांते संतते कामरूपिणि ।
कालगम्ये परे शान्ते कामेश्वरि नमोऽस्तुते ॥
सुषुम्नान्तरालस्था चिंत्यते ज्योतिरूपिणी ।
प्रणतेऽस्मि परां वीरां कामेश्वरि नमोऽस्तुते ॥
द्रष्टाकरालवदने मुंडमालोपशोभिते ।
सर्वतः सर्वगे देवि कामेश्वरि नमोऽस्तुते ॥
(योगिनीतंत्रम्)

नीलाचल पहाड़ और कामरूप के विभिन्न मंदिर मे अंकित कुछ शिलालिपियों का प्रतिलिपि

कामाख्या मन्दिर के गर्भगृह के प्रवेशद्वार का बायं हाथ मे अंकित कोच राजा नरनारायण की शिलालिपि (सन- 1565)

(11/3)

लोकानुग्राहकारकः करुणाया पार्थोधनुर्विद्यया, दानेनापि दधिचि कर्ण सदृशो मर्यदयाम्भोनिधि ।
नानाशास्त्रविचारचारुचितः कंदर्परूपोज्वल, कामाख्याचरणार्चकोविजयते श्रीमल्लदेवनृपः ॥
प्रसादमद्रिदुहित्तश्चणारविंद भक्त्या करे दनुजा वरनीलशैले ।
श्रीगुरुदेवईम मूल्य सीतोपलेन शाके तुरंग गज वेद शशांक संख्ये ॥
तस्यैव प्रियसोदरः पृथ यशावीरेन्द्र मौलिस्थलि ।

माणिक्यं भजमान कल्पविटपी नीलाचले मञ्जुलं॥
प्रसादमुसिनाग देवशणभृत्शाके शिलराजिभिः।
देवी भक्तिमाताम्बरो रचितवान श्रीशुक्लपूर्वध्वज॥

कामाख्या मंदिर में अंकित आहोम राजा राजेश्वर सिंह के शिलालिपि (सन-1749)

(11/4)

स्वस्ति, कामाख्याचरणाम्वुजर्चनपरोधर्मेण धर्मेपमोरूपेनाल्लिप पञ्चसायक। मदः स्वर्गेशवंशोद्भवः दिक् चक्रमण प्रवीण विकसत्कुंदोल्लभ सत्सुयशा श्रीराजेश्वर सिंह भूपतिवरोभूपलोक कल्पद्रुमः॥

यो भुपानतमौलिरत्नविलसत्पदारविन्दद्वयोता भून्नीतितौघननृतनुघनः कोदंड विद्यार्जुनः परावार गभीन उजितन्तरादिस्य प्रतापो महादोर्दंडातिप्रचंड वैरीनिवह प्रोद्दाम दावानलः।

तस्याज्ञंदधदा दरेण शिरसि स्वर्गावरोहवधि स्वर्गेशाद्वय॥

कामाख्यांङिघ्रं परायणो दशरथः श्रीयुद्बृहत्फुकनः कामाख्यां देवमंदिरं क्षिति वसुम्वादेन्दुशाके करोत॥

कामाख्या मंदिर के नाट मंदिर में अंकित आहोम राजा गौरीनाथ सिंह की शिलालिपि (सन-1782)

(11/5)

भूपालश्रेष्ठ मौलिकप्रकरमधुकराकीर्ण, पदारविंद कामाख्यापादपद्मार्चनजनित महोद्दीप्त शुद्धन्तरात्मा।

श्रीगौरीनाथसिंहोनृप कुलतिलकोदान कल्पद्रुम कल्पोविख्याता खंडलीयाम्वय नलिनकुलोल्लाद्दामखामावर्क तुल्यः।

कोदंडोर्जितः वाहुदंडदलन प्रत्यर्विशुषेकंकज्वालज्वाल करालकाल कवलो, पूर्वाः प्रतापमलः।

तव मा कुलवैरिवृन्द ललपा लोलप्रुधारा हर्र्द्रव्या पादितहोति कोटिविलसन्नास्ते तदीयः सदा दोर्दंडप्रवलप्रतापनिकर प्रोद्दीप्त दावानलो दग्धानके विपक्षकक्षर्निचय संग्रामभीति प्रदः यन्नाम श्रवणात् सहस्रनयनः प्राप्नोति शंकां जतत्याश्चर्यः पर एष एव महतं वाच्य किमन्यो गुणं॥

यः पित्रा राज्यभारोद्वहननिपुणत्यां, वीक्षराज्ञे नियुक्तः सम्राज्ये नीतिशास्त्रमल गहनमतिर्ल्लोकरक्षा प्रवालः।

लक्ष्मीसिंहाख्यो भूपात्मजगुणनिकर ग्रामविश्रामधमा धीरस्तादृङ् नरेन्द्रनिखिल गुणानिर्थिन्नास्ति नासिन्नभारी एतस्यैव प्रताप वह्निनिचयेस्वात्माभिमानोत्सुक्य शुंडद्वि न्निवहा यदालभतां प्राप्तादिषत् कर्णना।

अंगकृत्य तदा स लक्षकवलिं दात्तं सुवीराग्रनी: कामाख्या प्रमद्योत्कटाय हृदयं, श्लघ्यं लक्षवलिं शुभाय महते श्रीस्वर्गनारायण: शक्त: साधायित्वं प्रतिश्रुतिमिदं कोमंत्रिणांमेभवते।

इत्यालोच्य मूहूर्मूहू सगुरु नामाभ्यो नाटेवादिनी द्वारवंशसमुद्भवं सुविभवं श्रीमद्बृहत्फुकन:।

गाम्वीर्योदार्यधैर्ये गुणैर्जित जलर्विरयं पालिताशेष लोकाभेदाद्वैर्वेदसंख्ये रतिशय: वलिभित्तैरूपायैव खंडै:।

शौर्यो: संग्राम यज्ञेहर्जुनइवरि पूजित कीर्तितातुल्य तीर्तिर्न्नेदृक् संदृश्योमानो नृपवर सचिवनैक पूर्वं नपश्वात्॥

प्रख्याते दुवराकुलेक्षितितले जातो महाधार्मिक: श्रामान श्रीबड़फुकनो हरपुरोनर्थाभिधान: कृति।

प्रागज्योतिषपुर मेषछागमहिषै: परावतांवताद्वैर्वलिं देव्यै लक्षमित: विविच्यहितहृद्राज्ञो नृपांगीकृतं।

लोकानुग्रहित् परायण मतिर्न्नेता प्रजनां सदा कामाख्यां सततं निधाय हृदये नित्यां सुरै: सेवितां॥

वर्न्नीकां गमुनिक्ष पाकरमिते शाके शुभे वह्निमुद् प्रारभ्य नदिनं सलक्षक वलिं प्रादापयत्पुकन॥

आहोम राजा शिवसिंह द्वारा राज्य रक्षा के लिये स्मृतिचिन्ह के तौर पर नीलाचल पहाड़ की दक्षिण दिशा में अंकित की (सन-1732)

(11/6)

श्रीराम

ॐ स्वस्ति श्रीहरगौरी पदारविंद मकरंद मन्दोहरिलीनमाना मधुकर प्रवरमा अवनिनायक परमकरुणावरुणालयस्यशुभ्रमशोराशि मंडिताशेषमोदिनी मंडलस्य वासववंशावतंस श्रीश्रीमत् शिवसिंह नृपालकस्य निर्देशत: त्वदीय सेनापतिवरसकलसंसार मंगलागाहारकैलाससकालकार्पासहिंडीरुपिंडदुग्ध मुग्ध कीर्तिमंडल मंडिताशेष दिदिगगांतरालेन श्रीकेशवपदपंकज भृंगवरेण श्रीमद्दिहिंगीय बर फुक्कनेन प्रागज्योतिषपुर प्रत्यागद्वार मृत्दशिलेष्टकादि नर्सितथा

मतोयिपञ्चाशदाधिक शतधनुमित प्राञ्चि द्विविंशताधिकद्विशत धनुमित परिखादिभिरंकृत मासिक वेद विशिख वेदांग शशधर शके॥

नीलाचल पहाड़ में स्थित केदार मंदिर में अंकित आहोम राजा राजेश्वर सिंह के शिलालिपि (सन–1751)

(11/7)

स्वस्ति श्रीश्री सौमारेश्वर राजेश्वर सिंह नृपज्ञया तरुणदुवरा बृहत् फुकनेन श्रीकेदारलिंरोपरि मठोयमकारि राम मुनिरसेन्दु शाके॥

नीलाचल पहाड़ में स्थित आम्रातोकेश्वर मंदिर में अंकित आहोम राजा प्रमत्त सिंह के शिलालिपि (सन–1744)

(11/8)

ॐ स्वस्ति श्रीहरगौर नृपनंदवृंदित पदद्वंद्वारद्विंद विपक्षपक्षे क्षयतीक्ष्न नानायुधवृंद दिगसनासन, घनंतनहराकारस्फरयशोमंडल शलकयाज्जल प्रवल्य नलस्तलप्रतापाखण्डल निरस्तवित्तवितरण विड़ाम्वित गीर्वान द्रमकला कलापकराम्व तनय चयन्यकहृत वाकपति नीतिद्रुम भूचक्र शत्रुवंशावतंस देवमानव नगन मानस राजहंस श्रीश्रीमत् स्वर्गदेव प्रमत्तसिंह नृपेन्द्रनां चारुचरण सरोरुह रोल सगुन ग्रामभिराम नातितिरस्कृत महामंत्री कदम्वस्वर्गवतारा दधि स्वर्गराजन विकुल कानन श्रीयुत तरुणदुवरा बृहत् फुक्कनस्तन्नरिस्त्रज्ञया श्रीश्रीआम्रातकेऐवरस्य मठ ममिचरयत् गुण गुण गुणाव्ज शाके॥

नीलाचल पहाड़ पर स्थित पांडुनाथ मंदिर में अंकित कोच राजा रघुदेव की शिलालिपि (सन–1585)

(11/9)

श्रीमन्मयल्पनृपानुजास्य कृतिनः शुक्लध्वदस्यात्मजे वारे श्रीरघुदेव भूपति कुलोत्तंसे कलानां निधौ।

दूर्गादत्तवरेण शासित गुणग्रामाभिरामे महीं तस्यामात्य गदारस्य वहुशं स्नेहानु कुल्यादपि।

श्रीपाण्डुनाथस्य हरेः शिलाभिः प्रसादमानिर्मितवान्नोज्ञं पयोनिधि विष्णुपदैकतानः शाके स्मरव्योम शरेंदु संख्ये।

नीलाचल पहाड़ पर स्थित केदार मंदिर में अंकित आहोम राजा राजेश्वर सिंह की शिलालिपि (सन–1758)

(11/10)

ॐ स्वस्ति समस्त सुरासुर शिरोरमणीय मणिधर श्रीश्रीहरिहर गौरीचरण नखचंद्र चकोर वासववंश सरोरुह मणिकर दिनवार कामरूप सौमारेश्वर धर्म धार्मिक पालन परायण श्रीश्रीराजेश्वर सिंह धराधिनाथस्तत्पदारविंद मधुकर दुयाराम्वय सम्भूत श्रीयुत तरुण गदाधर बृहत् फुक्कनात्मज सकल गुणनिधान रत्नाकर श्रीदशरथ दुवराबृहत् फुक्कनेन मदनगिरिरे केदारख्या शिव मंदिर वेष्टकामेष्ट कालय प्रकाद्वारौ निर्मितौ आकाशदंतावलर सेंदुशाके।

नीलाचल पहाड़ की पूर्व दिशा में स्थित अमाचल अंचल अंकित राजा सुरेन्द्र वर्मण के शिलालिपि (खृष्टाव्ज पंचम शताब्दी)

(11/11)

महाराजधीराज श्रीसुरेन्द्र वर्मण कृतम्।

भगवत: वलभद्र स्वामीयाम इदम् गुहम्॥

नीलाचल पहाड़ पर स्थित श्रीश्री कामाख्या देवी के दौल मंदिर में अंकित आहोम राजा प्रमत्त सिंह की शिलालिपि (सन–1750)

(11/12)

श्रीराम

ॐ स्वस्ति श्रीसुरासुर वंदित वमहिषासुर मर्दित, पीत रुधिरोन्मत्त योगिनीगणावृत गीत वादित नर्तित श्रीश्रीकामाख्या देवी दोलनादि विनोदे विलासाय धैर्य गाम्भीर्य वीर्यविबिध दान वितरण कल्पद्रुम मम नृपाल चुड़ामणि कामाख्या चरण परायण स्वर्गेशवंशावतंस श्रीश्रीप्रमत्त सिंह महाराजाधिराजाज्ञाया श्रीतरुण दुवरा बृहत् फुक्कनेन नीलगिरौ कामेश मध्ये केदार क्षेत्रे फल्गुत्सव दौलोमयकारी नेत्र गोत्र रसावलि शके॥

उमानंद मंदिर में अंकित आहोम राजा गदाधर सिंह का शिलालिपि (सन–1594)–

(11/13)

स्वस्ति प्रचंण्ड दोर्दंडकलितंड कोदंड निक्षिप्त कांड खंडित दंड वैविछर मुंडाशेष सामंत चक्रचुड़ामणि मयीचिमञ्जरी विराजित चरण कमलहरहारमिहिर हिंडिरपिंडापांडुरित यशोराशिपरिपूरित अंग–वंग–कलिंग तैलंग सौराष्ट्र मगध्यद्य शेष विशेष देश कुपाकुप्य वितरण साम्भोधित भृशपर्व सौन्दर्यागाम्भीर्य मर्यदा दयानेयाचार विचार दक्षिणदक्ष्यताढय क्षमागुण ग्रामाभिराम सत्रूवंशावतंस शेषान

पदारविंद मकरवंदुमधुकर सौमारेश्वर श्रीश्रीमत् गदाधर सिंहाया श्रीगरगञा संदिकै बृहत्फुक्कनः सकल वृंदारकवृंद राजेश्वर श्रीमदुमांदोपरि मठम चाकरं रक्षा क्षमा तर्केंदु संख्या शाके॥

उमानंद मंदिर में आहोम राजा शिवसिंह द्वारा निर्मित वृषवाहन चलन्ता मुर्ति के सिंहासन में अंकित लिपि (सन-1719)

(11/14)

गौरीशांखि सरोजभृंगमघवरशावतंसायित श्रीमत् श्रीशिवसिंह राजमुकुटादेशं दधम्मुध्वनि समांतः दुवरान्वये बृहत् फुक्कनोतानीस्मुर्तिमिला कला शशी शाके शम्भोयि मां राजतीत्॥

अश्वक्रान्त मंदिर में अंकित आहोम राजा शिवसिंह की शिलालिपि (सन-1720)-

(11/15)

अत्रास्य जनार्दनस्य निकट सिद्धाभिषेकोत्सवः श्रीविष्णोः कृपया तदीय शिखरे तत्सम सम्पादेन सार्नेदो नृपवृंदवंदित पदारविंद सुधीविद्यां श्रीशिवसिंह उज्जित त्वयादित्य प्रतापोनृपः भूभृन्नीतिलतातिनृत नयन कोदंत विद्यार्जुनो वंदारुन्निषादवपाद कमलं भूलोक कल्पद्रुम परावार गभीर उज्वल यशचंद्रो महेन्द्र लयाजातो भीमपराक्रमो द्विजायते भन्यः शरेणोनृनाः तन्नामभिधार्य मूर्ति विजयो नान्मोर्थत सादरात् श्रीमान केशव पादपद्म मधुपं स्वर्गवतारावधि श्रीमत् सर्गेद्र सोवी दुरराबृहत् सैन्यपो वेश्मै तादयानाजीतक शशभृत शाहेहकरोत् तत् श्रीपतेः॥

मणिकर्णेश्वर मंदिर में अंकित आहोम राजा राजेश्वर सिंह की शिलालिपि (सन-1755)

(11/16)

अति समस्त संसारी संसार परावारयातनावार निवारण चतुरतर सुरवर शिरोमणि सणिश्वर सहेश्वर चरणछायानुसरणपायन प्रमदवषणीशगन मौनिमाला प्रभाराजिविराजित पादपीठतल सकल भूमंडलपुरंदर कुल कुमुद रांधवसम समयसीमनिःसीम भीमविक्रम प्रज्ञावज्ञात गीस्पति नीतिक्रम महामहिम श्रीश्रीमद्राराजेश्वरसिंह नृपसिंह प्रियतम सेनापति प्रधानधन्य ब्रह्मण्य जनाग्रहीत्तिपित्त पांडव सुंदर कीर्तिनिकर करदुर्जय वैरीवरवाधनदारण पञ्चानन महति महाशय स्वर्गवरोहावधि स्वर्गेर वंश नृपशसेवी वंशावतंस श्रीतरुणबृहत् फुक्कन तनय, श्रीयुद्दशरथ दुवरा बृहत्फुक्कन स तन्नृप सिंहाजयामणि गिरिवरे

श्रीश्रीमणिश्वर महेश्वर रुचीर मठमिमरचयद्धरगिरिश शसी शाके ॥

वशिष्ठाश्रम में अंकित आहोम राजा रोजश्वर सिंह की शिलालिपि (सन-1764)

(11/17)

श्रीराम

ँ७ स्वस्ति निःसीम भीम पराक्रम प्रवलवैरी रण प्रलय कालानल सम्पूर्ण
गुणगणैधामभवत वानीपदारविंद मकरंद मुधुकुरशत्रुकुल कुमुदेंदु
श्रीश्रीमद्राजेश्वरसिंह निदेशेंद्र नीलाचलहिमौली तदीयचरणचारणचक्रवर्ती
कुंदारदाता कीर्ति समरवीरपरावारगम्भीर विद्याविद्योति तांतास्मरण
श्रीगोविंदपादज्ज्वलघन वाहिनीपति श्रीमदनुजदुवरा बृहत् फुक्कनराज
श्रीमत्तरुणदुवरा बृहत्फुक्कन तनुज श्रीमद्दशरथाभिधेय सेनाध्यक्षो
वशिष्ठाश्रमगिर्युपरि प्रसादमची करर्तकनागर सेंदु शाके ॥

नवग्रह मंदिर में अंकित राजेश्वर सिंह की शिलालिपि (सन-1752)

(11/18)

स्वस्ति स्मर हरकवैरिवादारुण पञ्चानन प्रताप तपन नृपनिकर नीतिरत्नाकर
शशधरप्रवर यशोधर वासववंसावतंस श्रीश्रीमत्स्वर्गनारायण राजेश्वरसिंह नरेश्व
रानामादेशतः तन्मास्त्रिप्रवर प्रागज्योतिः पुराणेर सेनानायक यशोजित सुधाराति
तिमिर मिहिर स्वर्गावतारवधि स्वर्गानरेश सेवी विभुषण श्रीमत्तरुणदुवरा
बृहत्फुक्कनो विचित्र चित्रालय नवग्रहात्मक शिरोपरि नवरत्नाथमठमिम चीकर
द्वेदांद्रि रसेंदु शाके ॥

हयग्रीव माधव मंदिर में अंकित कोच राजा रघुदेव की शिलालिपि (सन-1583)

(11/19)

श्रीश्रीमत् श्रीविश्वसिंह क्षिति पतिरभवत्ततसुतः ख्यातकीर्ति ।
श्रीमत् श्रीमल्लदेवोनृपति रतिमति निर्जीतिद्वाति जातिः ।
गम्भीर्यौदौर्य शौर्यप्रथित पृथुशोधर्म कर्मारदाताः ।
श्रीमत् शुक्लध्वजाख्यो व्यजनितदनुजोयद्वशेहशेष देशं ।
साक्षाद्राघर पुंगवोदिशि दिशि प्रख्यात कीर्तिव्रजे ।
हस्तापुण्यजनस्य यो विधि वशात् यः कामरूपेश्वरः ।

यो यो वाखिल लोक शोक दहन ज्वलावली वरिदः।
श्रीमत् श्रीरघुदेव भूपतिरभूत्।
शुक्लध्वज सोरसः।
तस्याशेष जनप्रसाद जनकः श्रीकृष्णपादार्चके।
भूपः प्राप्तवराः गदाधरकृती प्रसादरत्नं वाधात्।
मप्याख्यान गिरौहयासुवारिपो रत्नश्ममानास्पदं।
शाके वानावयत्तिथौ गुणिवरो कारीः श्रीधरः।

हयग्रीव माधव के दौल मंदिर में अंकित आहोम राजा प्रमत्त सिंह की शिलालिपि (सन-1750)

(11/20)

ॐ सस्ति स्त्रीदेवादिदेव सुरासुर वंदिचरण हयासुर मंहल मर्दना नामा गीतवाद्यलंगल प्रीत्यं सर्वानंद श्रीश्रीहयग्रीव माधवदोलनांदोलन विनोद विलासाय दान वितरण दध्याञ्छि सर्मोपम समर विजयी नृपनिकर चुड़ामणि स्वर्गेशवंशावतंस श्रीश्रीप्रमत्तसिंह महाधिराजज्ञया श्रीमाधव चरण परायण श्रीतरुण दुवरा बृहत्फुक्कनेन मणिकुट गिरौ फल्गुत्सव दोलायामकारी पक्षमुणि रसात्रिनयन शाके॥

कामाख्या के केदार मंदिर में अंकित आहोम राजा राजेश्वर सिंह का शिलालिपि (सन-1758)

(11/21)

(11/21)

ँ७ स्वस्ति समस्त सुरासुर शिरोरमणीय मणिधर श्रीश्रीहरिहर गौरीचरण नखचंद्र चकोर वासववंश सरोरुह मणिकर दिनवार कामरूप सोमारेश्वर धर्म घार्मिक पालन परायण श्रीश्रीराजेश्वरसिंह धराधिनार स्तत्पदारविन्द मधुकर दवरान्वय सम्भूत श्रीयुत तरुण गदाधर बृहत् फुक्कनात्मज सकल गुणानिधान रतानाकर श्रीदशरथ दुवरा बृहत् फुक्कनेन मदनगिररे केदाराख्या शिव मंदिर वेष्टकामेष्ट कालय प्राकायाद्वारौ निर्तितौ आकाशदंतावलर सेंदु शाके॥

- एकादश अध्याय समाप्त -

ग्रंथपंजी

1) कालिकापुराणम्
क) हस्तलिखित पांडुलिपि (राजीव शर्मा का व्यक्तिगत संग्रह)
ख) आचार्य पञ्चानन तर्करत्न सम्पादित (बंगला)
ग) देवेन्द्र नाथ भट्टाचार्य सम्पादित (असमीया)
घ) सुरेण भागवती और ज्योतीन्द्र नारायण दत्तबरुवा सम्पादित (असमीया)
ङ) पंडित विश्वनारायण शास्त्री सम्पादित (देवनागरी एवं अंरेजी)
च) बंगवासी संस्करण (बंगला)
2) योगिनीतंत्रम्
क) हस्तलिखित पांडुलिपि (राजीव शर्मा का व्यक्तिगत संग्रह)
ख) स्वामी सर्वेश्वरानन्द सरस्वती सम्पादित (बंगला)
ग) चक्रेश्वर भट्टाचार्य सम्पादित (असमीया)
घ) पंडित विश्वनारायण शास्त्री सम्पादित (देवनागरी एवं अंग्रेजी)
ङ) पंडित कान्हैयालाल मिश्र सम्पादित (देवनागरी)
च) दत्तबरुवा एंड कोम्पानी (असमीया)
3) तंत्रसंग्रह, आचार्य रामप्रसाद त्रिपाठी द्वारा 5 खंडो मे सम्पादित (देवनागरी)
4) तान्त्रिक टेक्स्ट (आर्थर आभालन द्वारा 13 खंडो मे सम्पादित)
5) रूद्रयामलम्
क) सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा 2 खंडो मे सम्पादित (देवनागरी)
ख) बिजन बिहारी गोस्वामी सम्पादित (बंगला)
ग) रचिकमोहन चट्टोपाध्याय सम्पादित (बंगला)
घ) जीवानन्द विद्यासागर सम्पादित (बंगला)
6) कामाख्यातंत्रम
क) हस्तलिखित पाण्डुलिपि (राजीव शर्मा का व्यक्तिगत संग्रह)
ख) पंडित विश्वनारायण शास्त्री सम्पादित (देवनागरी एवं अंग्रेजी)
ग) राम कुमार राय सम्पादित (देवनागरी)
घ) ज्योतिर्लाल दास सम्पादित (बंगला)
ङ) रसिकमोहन चट्टोपाध्याय सम्पादित (बंगला)
च) राधेश्याम चतुर्वेदी सम्पादित (देवनागरी)
छ) शशीभूषण पाल सम्पादित (बंगला)
7) कामरूप यात्रा पद्धति, हलिराम शर्मा सम्पादित एवं 1755 शकाव्द में प्रकाशित (राजीव शर्मा का व्यक्तिगत संग्रह)
8) कामारूपीय निवन्ध तंत्रम् (हस्तलिखित पांडुलिपि, राजीव शर्मा का व्यक्तिगत संग्रह)
9) कामाख्या सिद्धि और कामाख्या तंत्र, स्वामी ओशुतोष गिरी सम्पादित (देवनागरी)
10) निरुत्तरतंत्रम्, दीननाथ त्रिपाठी सम्पादित (देवनागरी)

11) कामाख्या तंत्रसार, भैरव शास्त्री सम्पादित (बंगला)
12) नील तंत्रम्, ज्योतिर्लाल दास सम्पादित (बंगला)
13) श्रीनील तंत्रम्, प्रदीप कुमार राय सम्पादित (देवनागरी)
14) वृहद तंत्रसारम्, रसिकमोहन चट्टोपाध्याय एवं चन्द्र कुमार तर्कालंकार सम्पादित (बंगला)
15) कुब्जिका तंत्रम्, ज्योतिर्लाल दास सम्पादित (बंगला)
16) ब्रह्मपुराणम्, (बंगला एवं देवनागरी संकलन)
17) लिंगपुराणम्, (बंगला एवं देवनागरी संकलन)
18) देवीपुराणम्, (बंगला एवं देवनागरी संकलन)
19) देवी भागवतम्, (बंगला एवं देवनागरी संकलन)
20) महा भागवतम्, (बंगला एवं देवनागरी संकलन)
21) महाचीनचारतंत्रम्, श्रीमत् परमात्मानन्द भौरव गिरी सम्पादित (बंगला)
22) महाभारत (असमीया, बंगला एवं देवनागरी संकलन)
23) रामायण, (असमीया, बंगला एवं देवनागरी संकलन)
24) निरुत्तरतंत्रम्, सिकमोहन चट्टोपाध्याय सम्पादित (बंगला)
25) मत्स्यसुक्तम् (हस्तलिखित पांडुलिपि, एसियातिक सोसाइति, कोलकाता)
26) स्मृति ज्योतिष संग्रहः, बुरञ्जी एवं पुरातत्व विभाग, असम सरकार
27) श्रीश्री चण्डी
क) हस्तलिखित पांडुलिपि, राजीव शर्मा का व्यक्तिगत संग्रह
ख) महामहोपाध्याय श्रीप्रमथनाथ तर्कभूषण अनुदित एवं राजेन्द्रनाथ घोष सम्पादित (बंगला)
ग) रत्नेश्वर तंत्रज्योतिष शास्त्री सम्पादित (बंगला)
28) कुलार्णवतंत्रम्
क) तारानाथ विद्यारत्न सम्पादित (बंगला)
ख) सार जन उडरफ सम्पादित (देवनागरी एवं बंगला)
ग) उपेन्द्र कुमार दास सम्पादित (बंगला)
29) महाकालसंहिता
क) पंडित राधेश्याम चतुर्वेदी सम्पादित (देवनागरी)
ख) गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ संकलन (देवनागरी)
30) कामरूप शासनावली, प्रकाशन परिषद, असम (असमीया)
31) दरं राज वंशावली, प्रकाशन परिषद, असम (असमीया)
32) मत्स्येन्द्र संहिता, देवव्रत सेनशर्मी सम्पादित (अंग्रेजी)
33) एनसाइक्लोपेडीया ऑफ तंत्र, साधु शान्तिदेव सम्पादित (अंग्रेजी)
34) भागतीय शक्तिसाधना, उपेन्द्र कुमार दास सम्पादित (बंगला)
35) ताराभक्तिसुधार्णव, सार जन उदरफ सम्पादित (अंग्रेजी)
36) कौलावली, सार जन उदरफ सम्पादित (अंग्रेजी)

– ग्रंथ समाप्त –

Rajib Sarma is a practicing hereditary ***Chandipathak Priest*** of the Kamakhya Temples' Complexand and is also a ***Purnabhisheka Sadhaka*** (full adept) in the Kulacara Tantra Marga tradition of the Kamakhya. He received the prestigious "KRISHI VISHARAD SAMMAN" from the Min. of Agri., Govt. of India for his contribution towards conservation, management and sustainable utilization of Agro-biodiversity and Plant Genetic Resources. He is providing research assistance and guidance to international PhD scholars and Post Graduate students since 2005.

RESEARCH INITIATIVES

One of the Partner in the project "**MAINSTREAMING AGROBIODIVERSITY CONSERVATION AND UTILIZATION IN AGRICULTURAL SECTOR TO ENSURE ECO-SYSTEM SERVICES AND REDUCE VULNERABILITY**", a UN Environment-GEF project jointly executed in Alliance of Bioversity International & CIAT and Indian Council for Agricultural Research.

Established a "**Field Gene Bank**" of native crop varieties and Plant Genetic Resources and launched "**Conserve Gene Campaign**" conservation of Agro-biodiversity.

Conceptualized and initiated the project titled "**IN SEARCH OF THE BAULS IN THEIR HOMELAND**" and the field work done under the project has resulted in making of the documentary film "**WHO IS BAUL**", which was released worldwide on March 16, 2021.

Conceptualized and initiated the project titled "**CREATION OF A DIGITAL ETHNOGRAPHICH ARCHIVE OF THE INDIGENOUS COMMUNITIES OF NORTH EASTERN INDIA**".

Co-PI in the DST sponsored Programme on "**SUSTAINABLE CONSERVATION STRATEGIES FOR BIO-RESOURCES OF NORTH EAST INDIA**".

CCPI in the project "NATIONAL AGRICULTURAL TECHNOLOGY PROJECT (NATP) ON SUSTAINABLE MANAGEMENT OF PLANT BIODIVERSITY AND CONSERVATION OF AGRO-BIODIVERSITY (PGR)" implemented by Indian Council for Agricultural Research and executed by National Bureau of Plant Genetic Resources.

Co-PI in the project "**STUDIES ON PLANT SPECIES USAGE OF THE TAI-AHOM COMMUNITY OF ASSAM FOR THEIR BIOACTIVE PROPERTIES: A BIOINFORMATICS APPROACH**". Project sponsored by: University Grants Commission (UGC).

Presented a Research Paper titled "**THE NEED AND ROLE OF DIGITAL HUMANITIES IN THE CONSERVATION AND SUSTAINABILITY OF INDIGENOUS COMMUNITIES AND THEIR CULTURES: THE NORTH EAST OF INDIA AS A CASE STUDY**" in the South Asia Regional Conference of International Society for Music Education (ISME, an UNESCO organization).

Under the UN Environment-GEF project, 12 heirloom native rice varieties and 4 of its processed products have been launched in the market under the brand name "**NATIVE BASKET**" involving the FPOs and SHGs.

₹ 250.00

ISBN 978-81-949568-8-4
9 788194 956884